हडको गृह ई-पत्रिका (अर्द्धवार्षिक)

छठा अंक (2024-2025)

आवास ध्वनि

हडको
hudco
A NAVRATNA CPSE

हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड

दिनांक 21 नवंबर, 2024 को संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा माननीय सांसद श्री भर्तृहरि महताब, उपाध्यक्ष की अध्यक्षता में हडको मुख्यालय सहित 10 कार्यालयों का राजभाषायी निरीक्षण किया गया, जिसमें सभी कार्यालयों का समन्वय कार्य हडको को सौंपा गया। हडको का प्रतिनिधित्व करते हुए श्री संजय कुलश्रेष्ठ, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय के साथ-साथ श्री एम. नागराज, निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग), श्री शैलेश प्रकाश त्रिपाठी, वरि. कार्यकारी निदेशक (रा.भा.), श्री राजीव शर्मा, कार्यकारी निदेशक (रा.भा.), श्री प्रभजोत सिंह मक्कड़, संयुक्त महाप्रबंधक (एचआर) की गरिमामयी उपस्थिति के साथ-साथ संपूर्ण निरीक्षण की समन्वयकर्ता एवं हडको की राजभाषा अधिकारी के रुप में डॉ. रेखा चंदोला, वरि. प्रबंधक (रा.भा.) भी उपस्थित थी। इस निरीक्षण में माननीय सांसदों ने हडको की प्रश्नावली एवं संपूर्ण समन्वय कार्य की भरपूर सराहना की।

हडको
hudco
A NAVRATNA CPSE

आवास ध्वनि

विषय सूची

पृष्ठ सं.	विषय
5-8	संदेश
9-12	हिंदी में रोज़गार: उपलब्ध अवसर और भावी संभावनाएँ
13-15	देवनागरी लिपि
16-19	भारत बोध: वैज्ञानिक उपलब्धियां
20-23	भारतीय करेंसी नोट्स से मिलता ज्ञान
24-25	हिन्दी के विकास में मीडिया
26-27	सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिन्दी एवं क्षेत्रीय भाषाओं का विकास
28	साल का चक्रव्यूह
29-31	महिला कथाकारों के साहित्य में भाषा और संवेदना
32-33	बहुभाषिकता की संकल्पना
34	बढ़ती उम्र
35-36	निवारक सतर्कता
37-38	संविधान की आठवीं अनुसूची और भारतीय भाषाएं
39-42	मेरा भारत: दिलचस्प तथ्यों का खजाना
43	सपनों में रख आस्था
44-46	जाने कहां गए वो दिन
47-48	बूंद-बूंद सों घट भरे
49	पिता
50-51	दुर्गोत्सव
52-53	वृक्षों का मनुष्य जीवन में महत्व
54-55	हरित इलैक्ट्रॉनिक्स: मानव के सम्मुख एक आशा भरी सोच और पहल
56-57	महाकुंभ-आस्था और व्यवस्था का संगम
58-59	समय का महत्व
60-61	सफर ऑफिस का...
62-64	अयोध्या के राम मंदिर की मुख्य विशेषताएं
65	अकेला चांद
66-67	स्वास्थ्य और सामाजिक संस्कृति
68-69	नारी शक्ति
70-74	प्रशिक्षु अधिकारियों - बैच 2025 हेतु इंडक्शन कार्यक्रम की एक झलक
75	खुद पर एतबार कर

संपादकीय

हडको की अर्द्धवार्षिक गृह ई-पत्रिका
(वर्ष 2024-2025 छठा अंक)

संरक्षक

श्री संजय कुलश्रेष्ठ
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

उप संरक्षक

श्री एम. नागराज
निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग)

श्री दलजीत सिंह खतरी
निदेशक (वित्त)

संपादक

श्री शैलेश प्रकाश त्रिपाठी
वरि. कार्यकारी निदेशक (राजभाषा)

श्री राजीव शर्मा
कार्यकारी निदेशक (राजभाषा)

उप संपादक

डॉ. रेखा चंदोला
वरि. प्रबंधक (राजभाषा)

विशेष सहयोग

श्रीमती पूर्णिमा कोहलीवाल
वरि. प्रबंधक (राजभाषा, सचि.)

श्रीमती डौली जोशी
प्रबंधक (आई.टी.)

विशेष आभार

मयंक मोहन, सुमित गुप्ता
हिंदी अनुवादक (राजभाषा)

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता एवं आंकड़ों के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार हैं।

हडको भवन, कोर 7ए, इंडिया हैबिटेट सेंटर, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

लक्ष्य

''जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के लिए सुदृढ़ पर्यावास विकास को बढ़ावा देना''

उद्देश्य

''जनमानस के आजीविका बदलाव के लिए सुदृढ़ पर्यावास विकास को बढ़ावा देते हुए अग्रणी तकनीकी-वित्तीय संगठनों में स्थान बनाना''

संदेश

प्रिय साथियों,

हडको के वार्षिकोत्सव (25 अप्रैल,2025) पर हडको की हिन्दी गृह ई-पत्रिका **'आवास ध्वनि'** का छठा अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। अपने कार्यालयी दायित्वों के साथ-साथ भाषा के कल्याण के लिए निष्ठापूर्वक कार्य करना वास्तव में एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। **'आवास ध्वनि'** में सृजनात्मक विधाओं में रचनाएं प्रकाशित होती हैं, जो यह दर्शाती है कि हमारी पत्रिका विचार-विमर्श का एक ऐसा मंच है जहाँ सभी वर्गों और श्रेणियों से जुड़े लेखकों का समन्वय होता है।

गृह पत्रिका का प्रकाशन हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार से जुड़ा कार्य है। भाषा का अर्थ मैं अपनी माटी, अपनी जन्मभूमि से समझता हूँ। एक नन्हे से शिशु को अपने समाज एवं परिवार से जो अमूल्य विरासत मिलती है, वह भाषा ही होती है जिसे वह सहजता से नैसर्गिक रूप से ग्रहण करता है और अपनी आगे आने वाली पीढ़ियों को सौंपता है। यदि हम व्यक्तिगत स्तर पर भी अपनी भाषा के लिए सकारात्मक कार्य करेंगे तो वह निश्चित रूप से हमारा अपनी जन्मभूमि को वंदन करने का एक प्रयास ही होगा।

'आवास ध्वनि' पत्रिका के संपादक मंडल तथा बहुमूल्य नवोन्मेषी विचार प्रस्तुत करने वाले लेखकों को भी मेरी शुभकामनाएं। आप सभी ऐसे ही हिंदी में लिखते और पढ़ते रहें और अपनी माटी से जुड़े रहें।

शुभकामनाओं सहित,

संजय कुलश्रेष्ठ
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संदेश

हडको मुख्यालय द्वारा हडको के वार्षिकोत्सव पर अपनी हिन्दी की गृह ई-पत्रिका **"आवास ध्वनि"** के छठे अंक का प्रकाशन अत्यंत गर्व का विषय है। इस पत्रिका में राजभाषा हिन्दी के साथ-साथ हडको की संपूर्ण गतिविधियों को समेकित रूप से एक सूत्र में पिरोया गया है। राजभाषा के माध्यम से अनेक विषयों को एक भाषा में प्रस्तुत करना एक अनुपम प्रयास है।

हडको एक सुगठित संगठन है। हडको का दृष्टिकोण राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न आश्रय एवं इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं, विशेष रूप से कंसलटैंसी ट्रेनिंग एवं कैपेसिटी बिल्डिंग के क्षेत्र में नेटवर्किंग को सुदृढ़ करना है। सभी क्षेत्रों में अपनी सेवाओं को सुनिश्चित करने की दृष्टि से हडको ने अपनी गतिविधियों के विकेंन्द्रीकरण पर बल दिया है। यद्यपि हडको का अपना कॉर्पोरेट कार्यालय होने के साथ-साथ देशभर में 21 क्षेत्रीय कार्यालय तथा 11 विकास कार्यालय भी हैं तथापि विभिन्न राज्यों में एजेंसियों के साथ घनिष्ठ एवं मजबूत संबंध बनाने की दृष्टि से हडको अपने संपर्क साधनों में हिन्दी का विस्तार करता रहा है।

इसी क्रम में हिन्दी गृह ई-पत्रिका का प्रकाशन महत्वपूर्ण उपलब्धि है। अपनी रचनाओं के माध्यम से योगदान देने वाले सभी लेखकों एवं राजभाषा अनुभाग के सभी अधिकारियों की मैं सराहना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

एम. नागराज
निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग)

संदेश

यह गर्व का विषय है कि हडको वार्षिकोत्सव पर राजभाषा अनुभाग, मुख्यालय अपनी हिन्दी गृह ई-पत्रिका **"आवास ध्वनि"** के छठे अंक का प्रकाशन कर रहा है। इस अंक में सहज, सरल एवं सशक्त भाषा का प्रयोग करते हुए विभिन्न विषयों को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

हडको में आवास एवं शहरी इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास को वित्तपोषित करने के क्रम में शहरी क्षेत्रों में जलापूर्ति, सीवरेज, जल निकासी, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, सड़कें, बिजली, स्मार्ट शहर, औद्योगिक इंफ्रास्ट्रक्चर आदि से जुड़ी परियोजनाएं शामिल हैं। मौजूदा परिप्रेक्ष्य में हडको नए-नए निवेशों के साथ देश की प्रगति में कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करने के लिए अग्रसर है।

वित्तीय संस्थान होने के साथ-साथ हडको ने राजभाषा संबंधी दिशा-निर्देशों का अनुपालन करते हुए हिन्दी के प्रचार-प्रसार में भी गहरी पैठ बनाई है। जिसका एक उदाहरण हमारी गृह ई-पत्रिका का प्रकाशन है। इस अभूतपूर्व प्रयास के लिए राजभाषा अनुभाग एवं लेखन से जुड़े सभी अधिकारी बधाई के पात्र हैं।

शुभकामनाओं सहित।

दलजीत

दलजीत सिंह खतरी
निदेशक (वित्त)

संदेश

राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के लिए कार्यालय में गृह ई-पत्रिकाओं का प्रकाशन अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसी क्रम में हडको मुख्यालय द्वारा अपने वार्षिकोत्सव पर हिन्दी गृह ई-पत्रिका **"आवास ध्वनि"** के छठे अंक का प्रकाशन किया जाना प्रशंसनीय है। यह प्रयास राजभाषा के व्यावहारिक पक्ष की नींव को मजबूत करने में सफल सिद्ध होगा।

हडको मुख्यालय में सतर्कता विभाग (सीवीडी), केन्द्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी), भारत सरकार के निर्देशों के अनुपालन में, समय-समय पर सिस्टम और प्रक्रियाओं में सुधार के लिए प्रयासरत है। इसके साथ-साथ वित्तीय अनियमितताओं वाले क्षेत्रों में सुधारात्मक उपायों की सलाह देना, ई-भुगतान, अधिकारियों के बीच सतर्कता जागरुकता पैदा करना, सत्यनिष्ठा, समझौते को अपनाना, मानवीय हस्तक्षेप आदि से बचने के लिए प्रणाली/प्रक्रिया का डिजिटलीकरण इत्यादि भी इसमें शामिल हैं।

इसी क्रम में राजभाषा अनुभाग भी गृह ई-पत्रिका का प्रकाशन डिजिटलीकरण को बढ़ावा देने की दिशा में प्रयत्नशील है। मैं राजभाषा अनुभाग एवं प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों को इस प्रशंसनीय प्रयास के लिए बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

विनीत गुप्ता,

विनीत गुप्ता
प्रमुख सतर्कता अधिकारी

हिंदी में रोज़गार: उपलब्ध अवसर और भावी संभावनाएँ

आज लगभग आठ दशक की स्वतंत्रता के बाद जब हम हिंदी में रोज़गार के अवसरों पर विचार करते हैं तो देख सकते हैं कि अन्य अनुशासनों की तुलना में हिंदी में रोज़गार के अवसर किसी भी तरह से कम नहीं हैं। हिंदी ने अपनी क्षमता और शक्ति से, राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्वीकृति तथा उपादेयता से, प्रयोग-अनुप्रयोग की संभावनाओं तथा लोकप्रियता से और सर्वाधिक अपनी सहजता तथा बोधगम्यता से राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय छवि तथा पहचान बनाई है। संपूर्ण भारत में, सभी राज्यों को परस्पर जोड़ने वाली संपर्क और संवाद स्थापित करने वाली भाषा, अब हिंदी बन गई है। अतः हिंदी में आजीविका, रोजी-रोटी की संभावनाएँ और काम-काजी अवसर अब प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हो रहे हैं। अंग्रेज़ी का कृत्रिम दबदबा अब कम होने लगा है तथा भारतीय भाषाओं तथा हिंदी की शक्तियों से विश्व अब भली-भाँति परिचित हो रहा है। विज्ञान और वाणिज्य में, अर्थशास्त्र और अर्थार्जन में, चिकित्सा और न्याय में, विधि और प्रबंधन में, इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी में, मनोरंजन और खेल-जगत में अब हिंदी और हिंदी-सेवी अपनी पहचान बना रहे हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं में, संचार एवं सूचना जगत में अब हिंदी अनुप्रयोग के सभी आयाम उद्घाटित होने लगे हैं। हिंदी भाषा अपने आप में ही अब 'भाषा-प्रौद्योगिकी के रूप में स्थापित होती जा रही है। मौखिक और लिखित भाषा के रूप में, साहित्यिक और साहित्येत्तर अनुशासनों के क्षेत्र में, अन्य अनेक भारतीय भाषाओं की शब्द-संपदा से, अर्थछटाओं से, बोलियों-उपबोलियों से तथा अनुप्रयोग के सभी आयामों के उद्घाटन से हिंदी अब आत्मनिर्भर, समर्थ और सशक्त दिखाई देने लगी है। हिंदी, अब औपचारिक भाषा के रूप में, शब्द-संपदा और शब्दावलियों के संकलनों के रूप में, उच्च शिक्षा के माध्यम के रूप में, राजकाज की भाषा अर्थात् राजभाषा के रूप में, बैंक, बीमा, वित्त तथा वाणिज्य आदि क्षेत्रों के कार्यों को साधने वाली सशक्त भाषा के रूप में अपनी पहचान और निरंतर मजबूत करती दिखाई दे रही है। अब विषय के विशेषज्ञ और भाषाओं के विशेषज्ञ मिल कर हिंदी कार्यान्वयन की सभी संभावनाओं को उजागर करने का सुलभ प्रयास करते दिखाई दे रहे हैं।

हिंदी के विषय में यह भ्रम प्रायोजित रूप में फैलाया गया कि हिंदी क्लिष्ट है या दुरूह है, लोकप्रिय नहीं है, अनूदित है जबकि जग विदित है कि संसार की कोई भाषा न कठिन होती है और न ही सरल। भाषा केवल परिचित होती है या अपरिचित। चार-पाँच सौ वर्ष फ़ारसी भाषा से हम त्रस्त और आतंकित रहे तथा लगभग दो सौ वर्षों से अंग्रेज़ी ने हमें भयभीत एवं भ्रमित किया हुआ है। इस भयचक्र को तोड़ने की आवश्यकता है। अब तो इस भ्रमजाल से निकलने की भी प्रबल आवश्यकता है कि अंग्रेज़ी ही आधुनिक और सुशिक्षित होने का प्रमाण-पत्र है।

हिंदी में रोज़गार प्राप्ति की अर्हताएँ

विश्व के किसी भी देश में 'उपाधि' नौकरी या रोज़गार की गारंटी नहीं होती। हमारे युवाओं ने सामान्यतः यह मान लिया है कि स्नातक, या स्नात्कोत्तर उपाधि प्राप्त करने से नौकरी या आजीविका मिलनी ही चाहिए। ऐसा भी सोचते हैं कि उपाधि प्राप्ति के बाद नौकरी मिलने की सहज स्वीकृति होनी चाहिए। सत्य यह है कि भारत एक बृहत् राष्ट्र है। जनसंख्या अत्यधिक है और संसाधन अत्यंत कम। ऐसे में हिंदी के क्षेत्र में रोज़गार प्राप्त करने के लिए हमें अपने को तैयार करना होगा। यदि हमें हिंदी शिक्षण के क्षेत्र में जाना और हिंदी अनुवादक बनना है, 'हिंदी अधिकारी' या 'राजभाषा अधिकारी' बनना है, हिंदी सिनेमा में या विज्ञापन की दुनिया में जाना है तो हमें अपनी क्षमता और दक्षता का प्रामाणिक परिचय तो देना ही होगा। अतः अपेक्षित है कि –

1. हिंदी के चारों कौशलों को – अर्थात् 'हिंदी बोलना' 'हिंदी लिखना', 'हिंदी पढ़ना' और 'हिंदी सुनना' – विधिवत् और साधिकार आत्मसात करना प्रथमतः अत्यंत आवश्यक तथा अनिवार्य है।

2. इन्हीं कौशलों के आधिकारिक ज्ञान से उच्चारण की शुद्धता, वर्तनी की मानकता, पठनीयता के अभ्यास तथा श्रवण – कला में प्राप्त बोधात्मकता ही हमें आजीविका की राह पर चलने के लिए सशक्त बनाएगी। हिंदी के क्षेत्र में यदि जीविकोपार्जन की संभावनाओं को साकार करना है तो हिंदी भाषा और साहित्य में, हिंदी प्रयोग और अनुप्रयोग में, हिंदी की सर्जनात्मक-शक्ति को पहचानने एवं परखने में, अभिरुचि पैदा करनी होगी।

3. हिंदी में रोज़गार प्राप्त करने का 'संकल्प' अत्यंत आवश्यक होता है। यह संकल्प निर्विकल्प होना चाहिए। अर्जुन की तरह मछली की आँख पर आँख लगाने की कला विकसित करना अत्यंत आवश्यक है। किस दिशा में, किस क्षेत्र

में, किस अनुशासन में हमारी अभिरुचि है, हमारा रुझान है और किस अनुशासन में हम हिंदी की रचनात्मता का उपयोग करना चाहते हैं; यह हमें स्वतः तय करना होगा।

हिंदी में रोज़गार के उपलब्ध अवसर

शिक्षा, शिक्षण, प्रशिक्षण एवं ज्ञान के क्षेत्र में अवसर: आज कुशल सक्षम एवं अधिकारी अनुवादकों की, हिंदी-कार्यान्वयन को सार्थकता प्रदान करने वालों की, सर्वाधिक आवश्यकता शिक्षा के क्षेत्र में है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी अनुवाद और अनुवादकों को 'नए भारत' के निर्माण का एक सशक्त एवं सार्थक साधन बताया गया है। आज हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के शिक्षण-क्षेत्र में, देश-विदेश की भाषाओं ने अनुवाद के माध्यम से क्रांति पैदा की है। यदि हम सफल और सार्थक शिक्षक बनना चाहते हैं, प्राध्यापक या प्रोफेसर बनना चाहते हैं तो अनुवाद-कला में सिद्धहस्त होना अत्यंत आवश्यक है। अनुवाद एक कला भी है, 'विज्ञान' भी है और 'शिल्प' भी। प्रतियोगी परीक्षाओं के शिक्षण- प्रशिक्षण-संस्थानों में भी हम सभी अनुशासनों के संदर्भ में देख सकते हैं कि अनुवाद एक सशक्त माध्यम बन गया है। अनेक प्रकार के रोज़गारमूलक कार्य क्षेत्रों मे प्रवेश लेने के लिए, आजीविका अर्जित करने के लिए सरकारी और गैर-सरकारी सभी संस्थान अनुवाद के बिना शिक्षण-प्रशिक्षण कर ही नहीं पाते। बैंक की नौकरी का प्रशिक्षण हो या बीमा क्षेत्र हो, संघ लोक सेवा आयोग से विज्ञापित पदों का क्षेत्र हो या नाटक के शिक्षण-प्रशिक्षण का क्षेत्र हो, सिनेमा और विज्ञापन -कला के शिक्षण-प्रशिक्षण का क्षेत्र हो, सभी में अनुवाद रोज़ी-रोटी का भी एक सशक्त साधन बन गया है। रेलवे में नियुक्तियों के बोर्ड द्वारा आयोजित चयन परीक्षाओं में भी अनुवाद अब महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

इसी प्रकार, तकनीकी क्षेत्रों में कंप्यूटर, सिनेमा, दूरदर्शन, रेडियो आदि क्षेत्रों में भी अनेक प्रकार की चयन परीक्षाओं में अनुवाद-कला में अधिकार वरदान सिद्ध हो रहा है।

जनसंचार माध्यम और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अवसर

यह युग सूचना और संचार-क्रांति का युग है। आज प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, सोशल मीडिया जैसे कितने ही क्षेत्र हिंदी में आजीविका के लिए खुल रहे हैं। अनुवाद तथा मौलिक हिंदी में लेखन करने वाले भाषा के अधिकारियों के लिए अब नए भारत में रोज़गार के अशेष अवसर विद्यमान हैं। समाचार-वाचन, समाचार-लेखन, समाचार-अनुवाद, समाचार के स्रोतों का ज्ञान, कंप्यूटर में सिद्धहस्तता आदि से भी आजीविका के अनेक अवसर उद्घाटित हो रहे हैं। न्यू मीडिया के अंतर्गत अब अनुवाद के साधन भी निरंतर बढ़ रहे हैं। ट्वीटर पर, ब्लॉग राइटिंग में, अनुवाद के अनेक नए एप्स द्वारा, कंप्यूटर और इंटरनेट की सुविधाओं द्वारा भी अब अनुवाद के नए क्षेत्र एवं आयाम उद्घाटित होते जा रहे हैं।

विज्ञापन के क्षेत्र में हिंदी और अनुवाद संबंधी अवसर

यदि अभ्यर्थी के पास सृजनात्मकता का गुण है, कल्पना की रचनात्मकता उपलब्ध है और भाषा तथा अनुवाद पर अधिकार है, तो अवसरों की कमी नहीं है। नौकरियों, विवाह के, कार, घर, दुकान आदि के क्रय-विक्रय, न्यू मीडिया में ऑन-लाइन

खरीदने-बेचने, घर, दुकान, संस्थान किराए पर लेने-देने, ज़मीन, मकान, वाहन, संपत्ति आदि के खरीदने-बेचने, , खोने या पाने, जीवन या मृत्यु, स्मृति या स्तुति, चिकित्सा, मद्य-निषेध या प्राकृतिक आपदाओं, जनजागरण, शिक्षा, प्रशिक्षण, सेल या प्रदर्शनियों, मेलों, नियमों-कानूनों, अधिकारों तथा राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय समाचारों, सूचनाओं, खेलों, सिनेमा के विज्ञापन हों, सभी में हिंदी के शब्द और शब्दावली के वैशिष्ट्य की समझ विकसित करनी होती है। न्यूज़ एजेंसियों में भी नौकरियों की अशेष संभावनाएँ विद्यमान हैं। इस क्षेत्र में ग्लैमर भी है और पैसा भी है। विज्ञापन की दुनिया, उपभोक्ता-मनोविज्ञान को समझने की, समाज-मनोविज्ञान को समझने की दुनिया है। बच्चों, युवाओं, महिलाओं, किसानों, ग्रामीणों और बुजुर्गों के लिए विज्ञापन लिखने, अभिनीत करने में भाषा-प्रयोग, अनुप्रयोग की समझ, आरोह-अवरोह की समझ, मुख-मुद्रा, हाव-भाव और आंगिक चेष्टाओं के संप्रेषण की समझ को भी बढ़ाना होता है।

अनुवाद के क्षेत्र में आजीविका के अवसर

भारत देश में द्विभाषिकता के संवैधानिक प्रावधान हैं। राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन का क्षेत्र हो या शिक्षण-प्रशिक्षण के क्षेत्र में पाठ्य-सामग्री, पुस्तक-लेखन और व्यावहारिक अनुवाद का क्षेत्र, बैंक और बीमा की दुनिया में हिंदी अनुवादक और हिंदी अधिकारी के पद पर कार्य करने के अवसर हों, हिंदी-कंप्यूटर-ऑपरेटर के पद हों या हिंदी सहायक के; प्रूफ रीडर के पद हों या संपादन-पुनरीक्षण के, सभी में हिंदी-अधिकार रखने वालों के लिए अशेष अवसर हैं।

कर्मचारी चयन आयोग प्रतिवर्ष तीन -सौ, चार-सौ पद कनिष्ठ अनुवाद अधिकारियों के विज्ञापित करता है। संघ लोक सेवा आयोग, अनेक बैंकों की नियुक्तियों का बोर्ड हो या रेलवे कर्मचारी चयन का बोर्ड हो, रिक्तियाँ पूरी तरह भरी नहीं जातीं क्योंकि उतने पात्र मिल नहीं पाते। कुछ अभ्यर्थी दिल्ली या अपने शहर में ही नौकरी चाहते हैं, बाहर की पोस्टिंग ठुकरा देते हैं, परिणामतः पद रिक्त ही रह जाते हैं। केंद्र सरकार और राज्य सरकारों के कार्यालयों में मंत्रालयों में इन पदों पर कार्य करने के लिए बड़ी संख्या में अनुवादकों की आवश्यकता पड़ती है।

तत्काल भाषांतरण के क्षेत्र में रोज़गार के अवसर

मौखिक अनुवाद, आशु अनुवाद अथवा तत्काल भाषांतरण के रूप में भी अनुवादकों की आवश्यकता बहुत बड़े स्तर पर पड़ती है। संसद के दोनों सदनों में, विधान सभाओं, निगमों के कार्यालयों, राजदूतावासों, सांस्कृतिक केंद्रों, देश-विदेश से आने वाले या देश-विदेश में जाने वाले सरकारी प्रतिनिधियों के मंडलों के साथ, राजनेताओं, वैज्ञानिकों तथा शिक्षाविदों के साथ भी इस प्रकार के 'इंटरप्रेटर' अर्थात् तत्काल भाषांतरणकर्त्ता बड़ी संख्या में प्रतिवर्ष चाहिए होते हैं। पर्यटन, धर्म, खेलों, चिकित्सा, पर्यटन-चिकित्सा, विधि के क्षेत्र में भी आज हिंदी अनुवाद तथा आशु अनुवाद के क्षेत्र में दक्ष विशेषज्ञों की आवश्यकता लगातार बढ़ रही है।

चिकित्सा के क्षेत्र में रोज़गार के नए अवसर

अब सुखद उपलब्धि है कि देश में एम.बी.बी.एस की शिक्षा-दीक्षा, परीक्षा एवं अभ्यास भी हिंदी माध्यम से प्रारंभ से गया है। हॉस्पिटलों में, नर्सिंग होम आदि में भी जनसामान्य को हिंदी के माध्यम से उपचार मिले, इसके भी प्रावधान किए जा रहे हैं। हिंदी अनुभाग, अनुवादक, राजभाषा अधिकारी, हिंदी टंकक, हिंदी सहायक, हिंदी आशुलिपिक आदि के पद भी प्रतिवर्ष अपेक्षा एवं समयानुसार विज्ञापित होते रहते हैं। मेडिकल साइंस की पाठ्य-पुस्तकें, संदर्भ ग्रंथ, पाठ्य-सामग्री आदि के हिंदी में मौलिक लेखन और अनुवाद की आवश्यकता लगातार बढ़ रही है।

मनोरंजन, सिनेमा, कार्टून फिल्म और खेल जगत में अवसर

नाटकों के हिंदी लेखन, अनुवाद तथा मंचन की दुनिया में, शिक्षण-प्रशिक्षण की दुनिया में रोज़गार के अवसर लगातार बढ़ रहे है। रामलीला, कृष्णलीला या समय-समय पर होने वाले नाटकों के अभिनय, रडियो नाटकों, दूरदर्शन के धारावाहिकों, संवादों के लेखन और अनुवाद, गायन एवं संगीत, गीत-लेखन, पटकथा लेखन के क्षेत्र में हिंदी तथा अनुवाद की संभावनाएँ बढ़ रही हैं, अवसर सृजित किए जा रहे हैं। देश-विदेश के सिनेमा को हिंदी में, हिंदी के सिनेमा को दूसरे देश-विदेश की भाषाओं में अंतरित करने की भी एक दुनिया बन गई है। कार्टून फिल्मों का, एनिमेशंस का, साहित्यिक रचनाओं पर फिल्म या कार्टून बनाने का, संवाद लेखन का, लिपिंग कला का, कैप्शन लेखन का और डबिंग का क्षेत्र भी हिंदी रोजगारों के अवसर बढ़ा रहा है।

पारिभाषिक शब्दावली-निर्माण और कोश-विज्ञान का क्षेत्र

आज ज्ञान-विज्ञान तथा विश्व के अद्यतन-अधुनातन विषयों को समझने-समझाने के लिए नई-नई पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण की आवश्यकता भी रोज़गार के अवसर पैदा कर रही है। एकभाषी, द्विभाषी, त्रिभाषी और बहुभाषी शब्दकोशों

के निर्माण से भी रोज़गार के अवसर खुल रहे हैं। कागज पर अथवा कंप्यूटर पर कोश-निर्माण भी अब उद्योग बन गया है। प्रकाशकों की दुनिया में, सरकारी, गैर-सरकारी भाषा और साहित्य की संस्थाओं में, शब्दावली और कोश-निर्माण भी हिंदी में रोज़गार के अवसर पैदा कर रहा है।

केंद्रीय एवं राज्य स्तरों पर गठित संस्थाओं तथा अकादमियों में रोज़गार

साहित्य अकादमी, हिंदी अकादमी, भारतीय भाषाओं की अकादमी और हिंदी प्रचार को समर्पित संस्थाएँ हों या अनुवाद संबंधी संस्थाओं का प्रदेय हो, हिंदी शिक्षण--प्रशिक्षण विषयक विश्वविद्यालय हों, प्रकाशन संस्थाएँ हों या हिंदी प्रचार-प्रसार को समर्पित राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय महत्त्व की संस्थाएँ हों, सभी में हिंदी विषयक रोज़गार के अनेक अवसर हैं।

अन्य क्षेत्रों में रोज़गार के अवसर

हिंदी 'राजभाषा', राष्ट्र की भाषा, संपर्क भाषा, साहित्यिक और सृजनात्मक भाषा, तकनीकी, वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकीय

क्षेत्रों की भाषा, विधि एवं न्याय की भाषा, शासन-प्रशासन तथा बैंक, बीमा, वित्त और वाणिज्य की भाषा के रूप में रोज़गार के अनेक अवसर पैदा करती है। हिंदी आज होटलों, प्रबंधन, फैशन, कुकिंग की दुनिया, साज-सज्जा के क्षेत्र में भी अनगिनत अवसर पैदा कर रही है। दुनिया के अनेक देशों में हिंदी शिक्षण--प्रशिक्षण, लेखन, अनुवाद, नाट्य प्रस्तुतियों आदि की दृष्टि से भी रोज़गार के अवसर सृजित हो रहे हैं।

आज मौखिक या अनूदित बधाई-पत्र (ग्रीटिंग कार्ड्स) की सामग्री के लेखन की दिशा में भी नए-नए अवसर पैदा किए जा रहे हैं। भेंटवार्ता, रेडियोवार्ता, टेलीड्रामा-लेखन, डाक्यू-ड्रामा लेखन, रेडियो-नाटक लेखन, रेडियो चैनलों पर मनोरंजन कार्यक्रमों के प्रसारण भी हिंदी में रोज़गार के नए अवसर पैदा कर रहे हैं। आज यज्ञ, हवन, विवाह-पद्धति, संस्कार-उत्सव आदि के क्षेत्र में भी देश-विदेश हिंदी- अनुप्रयोग पर निर्भर होता जा रहा है।

आज वेब डिजाइनिंग हो, कॉल सेंटर पर हिंदी के माध्यम से संवाद की स्थितियाँ हों, ब्लॉग राइटिंग का क्षेत्र हो, अनुवाद की स्वतंत्र रूप से कार्य करने वाली एजेंसियाँ हों या ट्विटर पर लेखन करने-कराने वाली संस्थाएँ हों, इन सभी क्षेत्रों में भी हिंदी में दक्ष एवं सक्षम प्रयोक्ताओं के लिए रोज़गार के अनेक अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। आज राजनीति के क्षेत्र में भी नारे लिखने, स्लोगन तैयार करने, पंच लाइन बनाने के क्षेत्र में भी हिंदी प्रयोग-अनुप्रयोग के द्वारा हिंदी का आधुनिकीकरण भी हो रहा है और रोज़गार के नए द्वार भी खुल रहे हैं। आज हिंदी बाजार की भाषा, आयात-निर्यात की भाषा भी बन रही है। आज नेट-फ्लिक्स पर, एमेजॉन पर भी हिंदी सिनेमा, हिंदी धारावाहिकों का एक नया रूप उद्घाटित हो रहा है। 'कौन बनेगा करोड़पति' जैसे हिंदी कार्यक्रम पच्चीस वर्षों की सुदीर्घ यात्रा पूरी कर लेते हैं तो हिंदी के भावी-भविष्य और हिंदी में पैदा होने वाले अवसरों के बारे में संकेत करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी हिंदी तथा भारतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम, अनुवाद का माध्यम बनाते हुए अकल्पनीय मार्ग प्रशस्त किए हैं। कृत्रिम मेधा के क्षेत्र में, व्यापार तथा विपणन के क्षेत्र में, फैशन टेक्नोलॉजी और यातायात के क्षेत्र में भी हिंदी नए प्रतिमान स्थापित कर रही है। लघु एवं कुटीर उद्योगों में, पाक-कला के क्षेत्र में, प्रदूषण-विषयक जागृति के क्षेत्र में, पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में, जन-कल्याण, जन-जागरण तथा उड्डयन आदि क्षेत्रों में भी अब हिंदी पंख फैला रही है।

कह सकते हैं कि अब हिंदी ने वैश्विक ज्ञान को आत्मसात करना और भारतीय ज्ञान-परंपरा को, हमारे गौरवशाली अतीत को विश्व के समक्ष उजागर करना प्रारंभ कर दिया है। हिंदी ने योग को भी वैश्विक धरातल पर लोकप्रियता दिलवा दी है। राष्ट्रीय विकास की योजनाओं के प्रचार-प्रसार में, वन-संरक्षण, डाक व्यवस्था आदि के साथ-साथ यू-ट्यूब, व्हाट्स एप्प आदि के द्वारा भी हिंदी वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठा पा रही है। अब नए-नए स्टार्ट-अप की दुनिया हो या भारतीय समस्त कलाओं को वैश्विक भाषाओं में अंतरित करने की, सभी दिशाओं में हिंदी और अनुवाद ने असीम अवसर रोज़गार के खोल दिए हैं। कह सकते हैं कि आधुनिकीकरण के इस युग में अब हिंदी भी आजीविका की दृष्टि से आत्मनिर्भर हो गई है।

◆ **पूरन चंद टंडन**
प्रो. दिल्ली विश्वविद्यालय

देवनागरी लिपि

देवनागरी लिपि की विकास यात्रा

आदिम युग से मानव ने अपने विचारों, भावनाओं और महत्वपूर्ण सूचनाओं को पर्वतशिलाओं, गुफा की दिवारों, ताम्रपत्रों पर लिखा या उकेरा जाने लगा। अत: यह कह सकते हैं कि पूरे जीव-जगत में केवल मनुष्य ही लिपि का प्रयोग करता रहा है। लिपि का वर्तमान परिमार्जित स्वरुप जिस लंबी यात्रा का परिणाम है, उसका आरंभ चित्रलिपि से हुआ है। चित्रलिपि (Pictograph), भावलिपि (Ideograph), संकेतलिपि (Logograph), ध्वन्यात्मक लिपि (Phonographic) एवं आक्षरिक लिपि (Alphabetic) लिपियों के विकासक्रम के अलग-अलग पड़ाव है।

प्रागैतिहासिक काल (Prehistoric period) के शिलालेखों, भित्तिचित्रों को देखकर यह अनुमान लगाना सहज है कि मनुष्य में अपने भीतर संचित सूचनाओं और ज्ञान को लिखकर सुरक्षित रखने की उत्कंठा रही है। किसी सतह पर अपने विचार लिखने या दर्ज करने के प्राचीनतम प्रमाण इंडोनेशिया के जावा द्वीप से प्राप्त हुए हैं। यहाँ पर एक सीपी पर अंकित आड़ी-तिरछी रेखाएं एक ज्यामितीय अनुशासन में दिखाई पड़ती हैं और सुचिंतित रुप से एवं प्रयोजनपूर्वक उकेरी गई हैं। पुरातत्ववेत्ताओं (Archaeologists) का विचार है कि यह 4,30,000 वर्ष पुरानी और होमो इरेक्ट्स (Homo erectus) द्वारा बनाई हुई हो सकती है।

विश्व के पाषाण-अभिलेख के प्राचीनतम उदाहरण उत्तरी स्पेन के अल्तामिरा स्थान पर मिले गुफाचित्र हैं जिन्हें 36000 से 15000 वर्ष पुराना बताया गया है। ये चिह्न (चित्र) आधुनिक मानव या होमो सेपियंस (Homo sapiens) द्वारा बनाए हुए होने का अनुमान है।

भारत में मध्यप्रदेश स्थित भीमबेटका के शैलाश्रय में पुरापाषाण काल के शैलचित्र भी प्राचीन चित्र-लिपि के उदाहरण है। ये मानव द्वारा अपने विचार, भावनाओं या सूचनाओं को लिखित रुप में संप्रेषित करने के प्रारम्भिक प्रयास थे। यही कारण है कि मानव सभ्यता निरन्तर इस उद्यम में लगी रही है कि एक ऐसी आदर्श लिपि बनाई जाए जिसमें विचारों को नितांत वस्तुनिष्ठ अभिव्यक्ति मिल सके।

सर्वाधिक स्वीकार्य ऐतिहासिक स्थापना के अनुसार, आधुनिक लिपि की शुरुआत मेसोपोटामिया की कीलाकार (cuneiform) लिपि से मानी जाती है। प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्यों से यह संकेत मिलता है कि इसका पहले-पहल प्रयोग व्यापारिक लेन-देन के हिसाब के लिए किया जाता था। इसी प्रकार प्राचीनतम भारतीय लिपियों में सिंधु-घाटी सभ्यता की लिपि का नाम आता है। इस लिपि को पूरी तरह पढ़ने में अब तक कोई सफलता नहीं मिली है।

लिपियों की आबूगीरा प्रणाली, जिसमें बृहत्तर ब्राह्मी-लिपि परिवार आता है, देवनागरी का उद्गम है। इस तरह की लेखन प्रणाली में व्यंजन वर्ण के साथ स्वर के संयोजन से एक स्वतंत्र इकाई बनती है और इन इकाइयों की एक श्रृंखला होती है।

प्राचीन ब्राह्मी लिपि 500 ईस्वी पूर्व से लेकर 350 ईस्वी तक चलती रही। इसके बाद भारतीय इतिहास में कला-साहित्य के उत्कर्ष का स्वर्णकाल समझे जाने वाले गुप्त-काल में प्राचीन ब्राह्मी लिपि की दो प्रचलित शैलियों में से उत्तरी शैली से विकसित लिपि को गुप्त शासकों ने गुप्त लिपि का नाम दिया। गुप्त लिपि से ही कुटिल लिपि का विकास हुआ और इसका प्रभाव काल छठी शताब्दी से लेकर आठवीं शताब्दी तक माना जाता है। देवनागरी का विकास कुटिल लिपि से हुआ।

नवीं शताब्दी से अद्यपर्यंत देवनागरी परिष्कृत संशोधित होती आई है। वस्तुतः लिपि का विकास एक धीमी प्रक्रिया है।

सन् 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में 122 प्रमुख भाषाएँ और 544 अन्य भाषाएँ हैं। इन सभी को भारोपीय, द्रविड़, आस्ट्रो-एशियाटिक और चीनी-तिब्बती परिवारों में बांटा गया है। भारत आर्य परिवार में हिंदी, असमिया, बांग्ला, ओड़िआ, मराठी, गुजराती, पंजाबी, सिंधी, कश्मीरी; द्रविड़ परिवार में तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम; आस्ट्रो-एशियाटिक परिवार में संथाली और चीनी-तिब्बती परिवार में बोडो तथा मणिपुरी आदि भाषाएँ आती हैं।

वर्तमान में संविधान की 8वीं अनुसूची में 22 भारतीय भाषाएँ सम्मिलित हैं और इनमें देवनागरी में लिखी जाने वाली भाषाओं की संख्या 13 है।

क्रमांक	भाषा	लिपि
1.	हिंदी	देवनागरी
2.	संस्कृत	देवनागरी
3.	कोंकणी	देवनागरी
4.	डोगरी	देवनागरी
5.	नेपाली	देवनागरी
6.	बोडो	देवनागरी
7.	मराठी	देवनागरी
8.	मैथिली	तिरहुता/देवनागरी
9.	संथाली	ओलचिकि/देवनागरी
10.	गुजराती	गुजराती, देवनागरी
11.	कश्मीरी	फारसी, अरबी, देवनागरी, शारदा
12.	सिंधी	फारसी, अरबी, देवनागरी
13.	असमिया	असमिया
14.	ओडिया	ओडिया
15.	उर्दू	फारसी, अरबी, देवनागरी
16.	कन्नड़	कन्नड़
17.	तमिल	तमिल
18.	तेलुगु	तेलुगु
19.	पंजाबी	गुरुमुखी
20.	बांग्ला	बांग्ला
21.	मणिपुरी	मैतई
22.	मलयालम	मलयालम

उपर्युक्त विषय में दिनांक 09.12.2014 को श्री संजय काका पाटिल द्वारा लोक सभा में पूछे गए अतारांकित प्रश्न संख्या 2554 के उत्तर में माननीय गृह मंत्री श्री किरेन रिजिजू ने उल्लेख किया है कि इस समय संविधान की 8वीं अनुसूची में 38 और भारतीय भाषाओं को शामिल करने की मांग भारत सरकार को प्राप्त हुई है। इनमें शामिल भाषाओं के नाम निम्नलिखित हैं: अंगिका, बंजारा, बजिका, भोजपुरी, भोटी, भोटिया, बुंदेलखंडी, छत्तीसगढ़ी, धतकी, अंग्रेजी, गढ़वाली पहाड़ी, गोंडी, गुज्जर/गुज्जरी, हो, कचाछी, कातमपुरी, कारबी, खासी, कोडवा (कूर्ग), कुक बराक, कुमाउंनी पहाड़ी, कुरुख, कुर्माली, लेपचा, लिम्बू, मिजो (लूशई), मगही, मुंदारी, नागपुरी, निकोबारी, पहाड़ी (हिमाचली), पाली, राजस्थानी, सम्बलपुरी/कोसली, शौरसेनी (प्राकृत), सिरैकी, तेनियादी और तुलू। इन भाषाओं में से अधिकांश भाषाओं की लिपि भी देवनागरी ही है।

भाषा	लिपि	भाषा	लिपि
हिंदी	देवनागरी	फ्रेंच	रोमन
संस्कृत	देवनागरी	पंजाबी	गुरुमुखी
उर्दू	फ़ारसी	नेपाली	देवनागरी
जर्मन	रोमन	बँगला	बाँग्ला
अंग्रेज़ी	रोमन	अरबी	अरबी

देवनागरी लिपि की विशेषताएं

1. भारतीय संविधान के भाग-17 के अनुच्छेद 343 में उल्लेख किया गया है कि संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी।
2. देवनागरी लिपि में 13 भारतीय भाषाएँ लिखी जाती हैं।
3. हिंदी में इसके 44 ध्वनि चिह्न हैं। 33 ध्वनि चिह्न व्यंजनों के और 11 ध्वनि चिह्न स्वरों के हैं। इसके अतिरिक्त, संयुक्त ध्वनियों के चिह्न अलग हैं।
4. देवनागरी लिपि को पाणिनि ने चौथी शताब्दी में अपने व्याकरण में लिखा है।
5. इस लिपि में जो लिखा जाता है, वही बोला जाता है और समझा भी जाता है।

6. इसमें कोई ध्वनि उच्चारण विहीन (silent) नहीं है, ह्रस्व और दीर्घ स्वर में स्पष्ट अंतर होता है।
7. सभी ध्वनियों के लिए चिह्न है।
8. देवनागरी लिपि में स्वर तथा व्यंजन का विभाजन सहजता से देखा जा सकता है।
9. देवनागरी लिपि में सुबोधता अधिक है।
10. देवनागरी लिपि वैज्ञानिक है।
11. मानक हिंदी वर्णमाला का प्रकाशन शिक्षा मंत्रालय द्वारा 1966 ईस्वी से शुरु किया गया।
12. यूनिकोड में हिंदी को आवंटित कोड का विस्तार U+0900 से लेकर U+097F तक है। इसमें कुल मिलाकर 128 कोड पॉइन्ट है।

आशा है कि देवनागरी की उपर्युक्त विकास यात्रा से आपको इस लिपि की प्राचीनता और सर्वग्राह्यता का पता लग गया होगा और इसकी भावी यात्रा की संभावना भी आप तलाश सकते हैं। इसमें कोई दो राय नहीं है कि आने वाले समय में भारतीय भाषाओं की लिपि की सिरमोर देवनागरी लिपि ही होगी।

***संदर्भ स्रोत:**

1. केंद्रीय हिंदी निदेशालय (उच्चतर शिक्षा विभाग) शिक्षा मंत्रालय, पश्चिमी खंड-VII, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-110066 द्वारा प्रकाशित पुस्तिका 'देवनागरी लिपि एवं हिंदी वर्तनी का मानकीकरण' से साभार।
2. नागरी लिपि परिषद, 19 गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-110002 की मुख्य पत्रिका 'नागरी संगम' का 47वां अखिल भारतीय नागरी लिपि सम्मेलन विशेषांक से साभार।
3. लोक सभा सचिवालय, संसद भवन, नई दिल्ली का पोर्टल।

◆ **मोहन लाल मीणा**
उप निदेशक (राजभाषा)
आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय

भारत-बोध : वैज्ञानिक उपलब्धियाँ

'बोध' दो शब्दों के मेल से बना है| पहला शब्द है भारत और दूसरा शब्द है बोध। इस विषय पर गहन चर्चा करने से पूर्व यह आवश्यक है कि शीर्षक में आए दोनों शब्दों पर किंचित विचार कर लिया जाए।

संस्कृत-हिंदी शब्दकोश के अनुसार भारत का अर्थ है – भरत से संबंध रखने वाला या भरत की संतान| (वामन शिवराम आप्टे 2007) 'भारत' शब्द भा+रत दो शब्दों के मेल से बना है| 'भा' का अर्थ है - प्रकाश, आभा, कांति, दीप्ति, चमक| (रामचंद्र वर्मा 2007)। यह 'भा' अन्य कई शब्दों में भी विद्यमान है, जैसे सूर्य के पर्यायवाची के रूप में भानु, भास्कर आदि| इसी प्रकार आभा, विभा, प्रभा आदि शब्दों में भी 'भा' का अर्थ दीप्ति, चमक या प्रकाश ही है।

वास्तव में यह 'भा' अर्थात प्रकाश प्रतीक है - ज्ञान का, सकारात्मक सोच का, सद्भाव का, देवत्व का| इसका विलोम अंधकार प्रतीक है – अज्ञान का, नकारात्मक सोच का, समस्त बुराइयों का, दानवत्व का| इसीलिए कहा जाता था कि रात्रि के अंधकार में विभिन्न आसुरी, दानवी और विनाशकारी शक्तियाँ सक्रिय हो जाती हैं, जबकि भास्कर के उदय के साथ शुरू होने वाले दिन में सृजनात्मकता, आशावादी दृष्टि, शुभ भावों का उदय भी होता है| 'भारत' शब्द में प्रयुक्त दूसरे अंश 'रत' का अर्थ है - लीन, संलग्न, लगा होना, निमग्न होना आदि| इस प्रकार 'भारत' शब्द का अर्थ है - ज्ञान रूपी प्रकाश में लीन लोगों का देश।

भारत में प्रकाश के आदि स्रोत सूर्य को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है| हमारे पूर्वज ऋषि-मुनियों, जो वास्तव में वैज्ञानिक थे और नगरों से दूर प्रकृति के प्रांगण में आश्रम बनाकर दिन-रात वैज्ञानिक शोधों में व्यस्त रहते थे, उन्होंने सूर्य नमस्कार, सूर्य सिद्धांत, सौर मंडल, सौर वर्ष, सूर्य संक्रांति आदि का गहन अध्ययन, विश्लेषण-विवेचन करके जीवन में सूर्य, उसके प्रकाश, उससे प्राप्त ऊर्जा, ताप, जीवन उपयोगी किरणों के महत्त्व को स्थापित किया।

दूसरा शब्द है - बोध| इसका तात्पर्य है - ज्ञान, जानकारी, समझ आदि| अत: 'भारत-बोध' शीर्षक का अर्थ हुआ - भारत के संबंध में ज्ञान या जानकारी।

'भारत और हिंदू धर्म के प्रति आस्था व्यक्त करते हुए मॉरीशसवासियों ने अपने देश में स्थापित किए शिवलिंग को तेरहवाँ ज्योतिर्लिंग घोषित कर दिया है, किंतु शिवपुराण में केवल बारह ज्योतिर्लिंगों का ही उल्लेख मिलता है|); 51 शक्तिपीठ और समस्त संस्कृत वांग्मय (4 वेद, 6 वेदांग, 6 दर्शन, 18 पुराण, 108 उपनिषद् के अतिरिक्त सूत्र, स्मृति, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक ग्रंथ, रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत गीता, जो वास्तव में महाभारत के भीष्म पर्व का भाग है, बौद्ध और जैन ग्रंथ, सूरसागर, रामचारितमानस, गीतांजली, कामायनी, गोदान आदि) मिलकर भारत का भौगोलिक-सांस्कृतिक स्वरूप सुनिश्चित करते हैं| इनका सामान्य ज्ञान भारत-बोध का अनिवार्य अंग है।

भारत-बोध का अनिवार्य अंग है – भारत के गौरवशाली अतीत में निहित वैज्ञानिक उपलब्धियाँ| बिना इन्हें ठीक-ठीक जाने हमारा भारत-बोध अधूरा ही रहेगा| सहस्त्रों वर्षों में अर्जित भारतीय विज्ञान-सिंधु का वर्णन कुछ पृष्ठों में करना एक असंभव कार्य है| आइए हमारे पूर्वजों की कुछ वैज्ञानिक उपलब्धियों का संक्षिप्त ज्ञान प्राप्त कर लें।

गणित के क्षेत्र में भारत की उपलब्धियों से आज संपूर्ण विश्व अवगत है| शून्य से लेकर नौ तक अंक, दशमलव पद्धति, अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित, त्रिकोणमिति आदि विश्व को भारत की ही देन हैं| भारत के प्रमुख गणितज्ञों में बौधायन, कात्यायन, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य, आर्यभट्ट, लीलावती, श्रीधर, रामानुजाचार्य आदि शामिल हैं| बौधायन

(500 ईसा पूर्व) को 'पाइथागोरस प्रमेय' की खोज करने वाला भारतीय त्रिकोणमितितज्ञ कहा जाता है| वैदिक गणित का लोहा तो आज सारी दुनिया मानती है।

खगोल विज्ञान के क्षेत्र में तो भारतीय वैज्ञानिकों की उपलब्धियाँ सचमुच विस्मित करने वाली हैं| खगोल विद्या को वेद का नेत्र कहा गया है| प्राचीन काल से ही खगोल वेदांग का महत्त्वपूर्ण भाग रहा है| ऋग्वेद, शतपथ ब्राह्मण आदि ग्रंथों में विभिन्न नक्षत्रों, चंद्रमास, सौरमास, मलमास (पुरुषोत्तम मास), उत्तरायण, दक्षिणायन, भाचक्र आदि का विस्तृत वर्णन विद्यमान है| यजुर्वेद के 18 वें अध्याय में यह उल्लेख मिलता है कि चंद्रमा सूर्य के प्रकाश से आलोकित होता है| भारतीय काल गणना विश्व में सर्वाधिक वैज्ञानिक एवं प्राचीन है।

संपूर्ण ब्रह्मांड को 360° के आधार पर 27 नक्षत्रों, 12 राशियों में विभाजित करना, आकाश में तारों की आकृति के आधार पर राशियों का नामकरण, नक्षत्रों के नामों के आधार पर महीनों का नामकरण, ग्रहों की विशेषताओं के आधार पर उनका नामकरण, जैसे धीमी गति से (शनैः-शनैः) चलने के आधार पर शनि या मंद नाम रखना, सौर मंडल में सबसे बड़ा तथा मानव के लिए कल्याणकारी ग्रह होने के कारण बृहस्पति को गुरु नाम देना आदि, ग्रहों का रंग, मानव पर प्रभाव, उनके उपग्रहों की संख्या आदि का तार्किक एवं वैज्ञानिक आधार पर विवेचन, धरती से सूर्य एवं अन्य ग्रहों की दूरी का सटीक ज्ञान, मंगल ग्रह को भौम या भूमिसुत कहकर धरती से अलग हुआ अंश बताना, चंद्रमा की गति के आधार पर शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष, पूर्णिमा और अमावस्या का वर्णन; वर्ष, दशाब्द, शताब्दी, सहस्राब्दी से लेकर युग, महायुग, कल्प तक की कालगणना, आकाश में ध्रुव तारा, सप्त ऋषि तारामंडल आदि का प्रामाणिक विवेचन जैसी अनेकानेक उपलब्धियाँ भारतीय खगोल विज्ञान की श्रेष्ठता का अकाट्य प्रमाण हैं।

पाँचवीं शताब्दी में आर्यभट्ट के समय में पाटलीपुत्र में खगोलीय वेधशाला थी, जहाँ आर्यभट्ट, भास्कराचार्य तथा अन्य वैज्ञानिकों ने अनेक खगोलीय शोध किए| गुरुत्त्वाकर्षण की खोज न्यूटन से लगभग डेढ़ हज़ार वर्ष पूर्व भारतीय वैज्ञानिक भास्कराचार्य ने कर ली थी और 'पृथ्वी गोल है' यह भी उन्होंने सिद्ध कर दिया था| भास्कराचार्य के ग्रंथ – 'सिद्धांतशिरोमणि' में गुरुत्त्वाकर्षण का उल्लेख मिलता है।

आचार्य कणाद परमाणु विज्ञान के जनक माने जाते हैं| उन्होंने पश्चिमी अणुशास्त्रज्ञ जॉन डाल्टन से सैंकड़ों वर्ष पूर्व बताया कि 'द्रव्य के परमाणु होते हैं|' ऋषि अगस्त्य द्वारा रचित 'अगस्त्य संहिता' तथा अन्य ग्रंथों के आधार पर प्रख्यात भारतीय वैज्ञानिक राव साहब वझे ने विद्युत् के विभिन्न प्रकारों का वर्णन किया एवं अगस्त्य संहिता में विद्युत् द्वारा इलेक्ट्रोप्लेटिंग करने का विवरण भी दिया।

धातु विज्ञान की श्रेष्ठता का प्रमाण है - दिल्ली में कुतुबमीनार के पास स्थित लौह स्तंभ – 'विष्णु स्तंभ'|1600 से अधिक वर्ष बीत जाने पर भी इसमें जंग न लगना विश्व के धातु वैज्ञानिकों के लिए विस्मय का कारण बना हुआ है| रामायण, महाभारत, पुराणों, श्रुति ग्रंथों में सोना, चाँदी, ताँबा काँसा, सीसा, लोहा, टिन आदि धातुओं का वर्णन मिलता है| इतना ही नहीं चरक, सुश्रुत, नागार्जुन आदि ने स्वर्ण, रजत, ताम्र, लोहा, अभ्रक, पारा आदि के औषधीय गुणों को पहचानकर चिकित्सा हेतु भी उनका उपयोग किया।

रसायन शब्द के मूल में रस है| प्राचीन ग्रंथों में रस का एक अर्थ पारद भी है| रसायन विज्ञान में विभिन्न खनिजों का अध्ययन किया जाता था| रसायन विज्ञान के क्षेत्र में नागार्जुन, वांगभट्ट, गोविंदाचार्य, रामचंद्र, सोमदेव आदि अपने समय के प्रसिद्ध रसायन वैज्ञानिक माने गए हैं| नागार्जुन द्वारा रचित ग्रंथ 'रसरत्नाकर' के आठ अध्यायों में से केवल चार ही अब

चंद्रमा की संरचना का रहस्य खोजेंगे आईआईटी के विशेषज्ञ

उपलब्ध हैं, जिनमें मुख्यत: धातुओं के शोधन, मारण, शुद्ध पारद प्राप्ति तथा भस्म बनाने की विधि वर्णित है| नागार्जुन (300 ईस्वी के लगभग) ने पारे के प्रयोग से ताँबा इत्यादि धातुओं को सोने में बदलने की विधि भी खोज ली थी, ऐसी मान्यता है| 'रसहृदयतंत्र' (श्री गोविंद भगवतपाद द्वारा रचित) के अतिरिक्त रसेंद्रचूड़ामणि, रसप्रकाशसुधाकर, रसार्णव, रससार आदि ग्रंथ भी रसायन विज्ञान के प्रमुख ग्रंथ माने जाते हैं।

महर्षि अगस्त्य द्वारा विश्व में सर्वप्रथम बैटरी का अविष्कार किया गया| अगस्त्य संहिता में इसका उल्लेख मिलता है, किंतु हम पाश्चात्य चकाचौंध के कारण विद्युत् बैटरी के आविष्कार का श्रेय बेंजामिन फ्रेंकलिन को देते हैं|

समुद्र मंथन से कार्तिक त्रयोदशी को प्रकट भगवान धन्वंतरी को आयुर्वेद का प्रादुर्भावकर्ता माना जाता है| इन्होंने ही अमृतरस औषधियों की खोज की थी| महाभारत, ब्रह्मवैवर्तपुराण, हरिवंश पुराण तथा विष्णुपुराण में धन्वंतरी का उल्लेख मिलता है| इनके वंश में उत्पन्न दिवोदास ने 'शल्य चिकित्सा' का विश्व का प्रथम विद्यालय काशी में स्थापित किया, जिसके प्रधानाचार्य सुश्रुत बनाए गए| 'सुश्रुत संहिता' के लेखक आचार्य सुश्रुत (लगभग 600 ईसा पूर्व) विश्व के प्रथम शल्य चिकित्सक थे।

आयुर्वेद को कुछ विद्वान ऋग्वेद का उपवेद मानते हैं, तो कुछ अन्य विद्वान अथर्ववेद का उपवेद| आयुर्वेद की तीन परंपराएँ मानी जाती हैं - भरद्वाज, धन्वंतरी और कश्यप| आयुर्वेद विज्ञान के आठ अंग हैं और चरक संहिता (लगभग 500 ईसा पूर्व), सुश्रुत संहिता तथा कश्यप संहिता इसके प्रमुख ग्रंथ माने जाते हैं| आचार्य चरक को त्वचा चिकित्सक भी कहा जाता है| पतंजलि ऋषि द्वारा 150 ईसा पूर्व में रचित 'योगशास्त्र' में कर्करोग (कैंसर) जैसी घातक बीमारी का उपचार बताया गया है।

महाभारत काल में अंतरिक्ष जगत के विशेषज्ञ गर्ग मुनि को नक्षत्रों की खोज और गणना का श्रेय दिया जाता है| पाँचवीं सदी के प्रसिद्ध खगोलशास्त्री वराहमिहिर को ग्रहों के सूक्ष्म अध्ययन, फलित ज्योतिष विज्ञान का जनक माना जाता है| ऋषि भरद्वाज ने राइट बंधुओं से भी 2500 वर्ष पूर्व ही वायुयान की खोज कर ली थी| ऐसी मान्यता है कि 'विमानशास्त्र' नामक ग्रंथ में उल्लेखित अनेक विमानों का तो आधुनिक विमानशास्त्री अभी तक निर्माण भी नहीं कर पाए।

प्राचीन काल में संपूर्ण जीवन, शासन, राजनीति आदि धर्मशास्त्र पर आधारित होती थी| भारत के अनेक ऋषियों जैसे अत्रि, कण्व, कश्यप, गर्ग, च्यवन, बृहस्पति, भरद्वाज आदि ने धर्म को चार पुरुषार्थों में से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मानते हुए उसे जीवन के चारों आश्रमों से संबद्ध माना और धर्म के स्वरूप, लक्षणों, विविध सिद्धांतों आदि का विस्तृत विवेचन किया| मनु स्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, पराशर स्मृति, नारद स्मृति, बृहस्पति स्मृति आदि स्मृति ग्रंथों में लोकनीति, राजनीति, अर्थनीति आदि का धार्मिक दृष्टिकोण से विवेचन एवं स्पष्टीकरण किया गया है।

हिंदू धर्म के अंतर्गत सभी रीति-रिवाज़, पर्व-त्योहार, सोलह संस्कार, व्रत-उपवास आदि वैज्ञानिक आधार पर ही निर्धारित किए गए| 1000 वर्ष के अंधकार युग के कारण विज्ञान और तर्क का स्थान अज्ञान और अंधविश्वास ने ले लिया| हिंदू धर्म में प्रचलित मान्यताओं जैसे सिंदूर लगाना, शिखा (चोटी) रखना, जनेऊ धारण करना, तिलक लगाना, कलावा या मौली बाँधना, रुद्राक्ष या तुलसी की माला फेरना, शंख या मंदिर की घंटी बजाना, कुश के आसन पर बैठकर पूजा-पाठ या तपस्या करना, स्वास्तिक एवं ॐ का महत्त्व,

सगोत्र विवाह निषेध, ग्रहण काल में भोजन निषेध, यज्ञ का महत्त्व, दक्षिणायन में मृत्यु श्रेयस्कर क्यों नहीं, दक्षिण की ओर पाँव करके क्यों नहीं सोना, नित्य स्नान, सूर्य नमस्कार, पितरों का श्राद्ध, सोलह संस्कार क्यों आदि अनेक मान्यताओं एवं जीवन जीने के नियमों के पीछे भी विज्ञान का आधार है, जिसे आज हम भूल गए हैं| (डॉ. सच्चिदानंद शुक्ल 2013) प्रातिभ आचार्य चाणक्य द्वारा रचित 'अर्थशास्त्र' में धर्म, अर्थ, राजनीति, कूटनीति, दंडनीति, राजस्वनीति, युद्धनीति आदि का वर्णन किया गया है।

और अंत में, प्राचीन भारत का वैज्ञानिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक गौरव-गान जिस भाषा में किया गया, उस देवभाषा संस्कृत और उसकी लिपि देवनागरी की वैज्ञानिकता की चर्चा किए बिना यह शोधालेख अधूरा ही रहेगा| विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा संस्कृत में स्वरों और व्यंजनों का वर्गीकरण हो, संधि और समास हो, धातुओं से शब्द-निर्माण प्रक्रिया हो या उपसर्ग-प्रत्यय का प्रयोग हो यानी प्रत्येक चरण विज्ञान पर आधारित है| स्वर और व्यंजनों का ऐसा वैज्ञानिक वर्गीकरण और उच्चारण स्थान के आधार पर तार्किक विभाजन संभवत: विश्व की किसी भी भाषा में उपलब्ध नहीं है| संस्कृत वर्णमाला में प्रत्येक इकाई ध्वनि के लिए एक अक्षर निश्चित है और प्रत्येक अक्षर केवल एक विशेष ध्वनि के लिए ही प्रयुक्त होता है| इसीलिए संस्कृत में जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा जाता है| यह इस भाषा और इसकी लिपि की सर्वाधिक उल्लेखनीय विशेषता है।

आज सारा विश्व भारत की ओर आशाजनक नज़रों से देख रहा है| निश्चय ही इक्कीसवीं सदी भारत की होगी तथा सभी भारतवासियों की प्रतिभा और संकल्पशक्ति के परिणामस्वरूप भारत पुन: 'सोने की चिड़िया' एवं 'विश्वगुरु' के गौरवशाली पद को प्राप्त कर लेगा| इसके लिए हमें समस्त देशवासियों में 'भारत-बोध' को जगाना होगा और हम ऐसा करने में अवश्य सफल होंगे।

◆ **डॉ० रवि शर्मा 'मधुप'**
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग, श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स,
दिल्ली विश्वविद्यालय

भारतीय करेंसी नोट्स से मिलता ज्ञान

आजकल इंसान में ज्ञान होने का बहुत महत्व है । सामान्य ज्ञान की वजह से छात्र अच्छे कम्पेटिटिव प्रतियोगिता में सफल होकर जीवन में आगे बढ़ते हैं । सामान्य ज्ञान के ऊपर आधारित एक चर्चित / प्रचलित कार्यक्रम "कौन बनेगा करोड़पति" में भी लोग ज्ञान की वजह से काफ़ी इनाम राशि जीत रहे हैं ।

नवंबर 2016 में भारत सरकार ने नोटबंदी की और उस समय भारतीय रिज़र्व बैंक ने विभिन्न डिनॉमिनेशन के करेंसी नोट प्रिंट किए हैं । इन करेंसी नोट में भी ज्ञान का समावेश है । भारतीय रिज़र्व बैंक ने 10, 20, 50, 100,200, 500 व 2000 के नए नोट जारी किए थे (2000 का नोट अब बंद हो गया है) इन नए नोट्स में विभिन्न तरह मानव निर्मित सरंचनाएं दर्शायी गई हैं । रुपये 2000 के नोट में मानव निर्मित मंगलयान का चित्र अंकित था तथा अन्य नोट्स में भी मानव निर्मित ऐतिहासिक संरचनाएँ चित्रित की गई है ।ये सभी संरचनाएँ यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल की जा चुकी हैं । आइए अब आपको इन संरचनाओं की संक्षिप्त जानकारी देते हैं।

₹ 2000

₹2000 मूल्यवर्ग में मंगलयान की आकृति है, जो अंतरग्रहीय अंतरिक्ष में देश के पहले उद्यम को दर्शाता है ।

मंगलयान, भारत का पहला मंगल मिशन था। इसका औपचारिक नाम मंगल कक्षित्र मिशन है। यह मिशन साल 2013 में शुरु हुआ था और साल 2014 में मंगल ग्रह पर पहुंचा था।

मंगलयान के बारे में कुछ खास बातें:

- मंगलयान को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने भेजा था।
- मंगलयान को आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से लॉन्च किया गया था।
- मंगलयान ने साल 2014 से 2022 तक मंगल ग्रह का अध्ययन किया।
- मंगलयान, मंगल ग्रह पर भेजा गया सबसे सस्ता मिशन था।
- मंगलयान ने अंतरग्रहीय अन्वेषण के लिए तकनीकों का परीक्षण किया।

₹ 500

भारतीय रिज़र्व बैंक ने 2016 में लाल किले को दर्शाने वाला 500 भारतीय रुपये का बैंक नोट जारी किया था। दिल्ली का लाल किला मुगल साम्राज्य की कला और वास्तुकला का प्रतिनिधित्व करता है। राजधानी दिल्ली में स्थित इस भव्य ऐतिहासिक कलाकृति का निर्माण पांचवे मुगल शासक शाहजहां ने करवाया था। यह शानदार किला दिल्ली के केन्द्र में यमुना नदी के तट पर स्थित है, जिसके अद्भुत सौंदर्य और आर्कषण को देखते बनता है।

विश्व धरोहर की लिस्ट में शामिल दुनिया के इस सर्वश्रेष्ठ किले के निर्माण काम की शुरुआत मुगल सम्राट शाहजहां द्वारा 1638 ईसवी में करवाई गई थी। इस भव्य लाल किले का निर्माण काम करीब 10 साल तक चला।

भारत की आजादी के बाद सबसे पहले देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरु ने इस पर तिरंगा फहराकर देश के नाम संदेश दिया था। इसके आकर्षण और भव्यता की वजह से इसे 2007 में यूनेस्को की विश्व विरासत धरोहर की सूची में शामिल किया गया था।

₹ 200

साँची भारत के मध्य प्रदेश राज्य के रायसेन ज़िले में साँची नगर के पास एक पहाड़ी पर स्थित एक छोटा सा गांव है। यह बेतवा नदी के किनारे, भोपाल से 46 कि॰मी॰ पूर्वोत्तर में, तथा बेसनगर और विदिशा से 10 कि॰मी॰ की दूरी पर मध्य प्रदेश के मध्य भाग में स्थित है। यहाँ कई बौद्ध स्मारक हैं, जो तीसरी शताब्दी ई.पू. से बारहवीं शताब्दी के बीच के काल के हैं। यहाँ छोटे-बड़े अनेकों स्तूप हैं, चारों ओर की हरियाली अद्भुत है। सांची का महान मुख्य स्तूप, मूलतः सम्राट अशोक महान ने तीसरी शती, ई.पू. में बनवाया था। इसके केन्द्र में एक अर्धगोलाकार ईंट निर्मित ढांचा था, जिसमें भगवान बुद्ध के कुछ अवशेष रखे थे।

सांची स्तूप, यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों में शामिल है. साल 1989 में इसे यूनेस्को ने विश्व धरोहर स्थल की सूची में शामिल किया था।

₹ 100

रानी की वाव भारत के गुजरात राज्य के पाटण में स्थित प्रसिद्ध बावड़ी (सीढ़ीदार कुआँ) है। इस चित्र को जुलाई 2018 में भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा ₹100 के नोट पर चित्रित किया गया है तथा 22 जून 2014 को इसे यूनेस्को के विश्व विरासत स्थल में सम्मिलित किया गया । कहते हैं कि रानी की वाव (बावड़ी) वर्ष 1063 में सोलंकी शासन के राजा भीमदेव प्रथम की पत्नी रानी उदयामति ने बनवाया था। सीढ़ी युक्त बावड़ी में कभी सरस्वती नदी के जल के कारण गाद भर गया था। यह वाव 64 मीटर लंबा, 20 मीटर चौड़ा तथा 27 मीटर गहरा है। यह भारत में अपनी तरह का अनूठा वाव है।

11वीं सदी में निर्मित इस 'रानी की वाव' को यूनेस्को की विश्व विरासत समिति ने भारत में स्थित सभी बावड़ी या वाव (स्टेपवेल) की रानी का भी खिताब दिया है। इसे जल प्रबंधन प्रणाली में भूजल संसाधनों के उपयोग की तकनीक का बेहतरीन उदाहरण माना है।

₹ 50

हम्पी या विजयनगर मध्यकालीन हिंदू राज्य विजयनगर साम्राज्य की राजधानी थी। तुंगभद्रा नदी के तट पर स्थित यह नगर अब हम्पी नाम से जाना जाता है और अब केवल खंडहरों के रूप में ही अवशेष है। भारत के कर्नाटक राज्य में स्थित यह नगर यूनेस्को के विश्व के विरासत स्थलों में शामिल किया गया है। हर साल यहाँ हज़ारों की संख्या में पर्यटक और तीर्थयात्री आते हैं। घाटियों और टीलों के बीच पाँच सौ से भी अधिक स्मारक चिह्न हैं। इनमें मंदिर, महल, तहख़ाने, जल-खंडहर, पुराने बाज़ार, शाही मंडप, गढ़, चबूतरे, राजकोष आदि असंख्य इमारतें हैं।

₹ 20

एलोरा एक पुरातात्विक स्थल है, जो भारत में औरंगाबाद, महाराष्ट्र से 30 किमि (18.6 मील) की दूरी पर स्थित है। इन्हें राष्ट्रकूट वंश के शासकों द्वारा बनवाया गया था। अपनी स्मारक गुफाओं के लिए प्रसिद्ध, एलोरा युनेस्को द्वारा घोषित एक विश्व धरोहर स्थल है। यहाँ 34 "गुफ़ाएँ" हैं। इसमें हिन्दू, बौद्ध और जैन गुफा मन्दिर बने हैं। ये पाँचवीं और दसवीं शताब्दी में बने थे।

बौद्ध, हिन्दू और जैन धर्म को भी समर्पित पवित्र स्थान एलोरा परिसर न केवल अद्वितीय कलात्मक सृजन और एक तकनीकी उत्कृष्टता है, बल्कि यह प्राचीन भारत के धैर्यवान चरित्र की व्याख्या भी करता है।

₹ 10

भारतीय 10 रुपये के नोट के पीछे कोणार्क सूर्य मंदिर को दर्शाया गया है। कोणार्क सूर्य मंदिर भारत के ओड़िशा के पुरी जिले में समुद्र तट पर पुरी शहर से लगभग 35 किलोमीटर (22 मील) उत्तर पूर्व में कोणार्क में एक 13 वीं शताब्दी सीई (वर्ष 1250) सूर्य मंदिर है। मंदिर का श्रेय पूर्वी गंगवंश के राजा प्रथम नरसिंह देव को दिया जाता है। सन् 1984 में यूनेस्को ने इसे विश्व धरोहर स्थल के रुप में मान्यता दी है।

◆ **सुरेंद्र कुमार**
सेवानिवृत्त कार्यकारी निदेशक
(परियोजना/ राजभाषा)

हिन्दी के विकास में मीडिया

वर्तमान 21वीं सदी संचार और सूचना प्रौद्योगिकी की सदी बनकर उभरी है। इस सदी में समाचारपत्र-पत्रिकाओं के विकास में नित नूतन प्रयोगों के साथ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का भी विकास हुआ। संचार के क्षेत्र में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एक वरदान बनकर सामने आया। अंतरिक्ष में उपग्रहों की स्थापना के साथ ही उपग्रह प्रकरण का शुभारंभ हुआ और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का जन्म हुआ। विश्व के सभी देशों द्वारा भेजे गए लगभग 325 उपग्रह पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगा रहे हैं। मानवीय आवश्यकताओं में अभिवृद्धि के दृष्टिगत इन उपग्रहों से विविध सेवाओं का उपभोग किया जा रहा है। रेडियो, टी.वी., मोबाइल, इंटरनेट, फैक्स आदि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया माध्यम सभी उपग्रहों की सहायता से सूचना और सन्देश पारित करते हैं। जनसंचार के क्षेत्र में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने एक साथ हजारों, लाखों, देशी-विदेशी, साक्षर-निरक्षर सभी को अपने में जोड़ लिया है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में टेलीफोन और बेतार के बाद रेडियो ने दुनिया के लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया। रेडियो

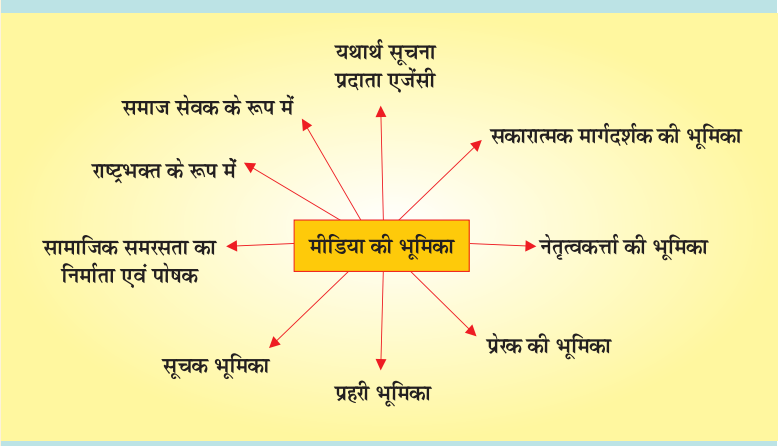

प्रसारणों की लोकप्रियता के प्रति लोग आकर्षित होते गए और सन् 1976 में आकाशवाणी और दूरदर्शन को अलग किया गया। जुलाई, 1977 में चेंनई में प्रथम एफ. एम. सर्विस की शुरुआत हुई। इसके बाद मुंबई, दिल्ली और कोलकत्ता में भी एफ. एम. चैनलों ने रेडियो की दुनिया को बदल दिया है। गीत-संगीत के साथ रेडियो चैनलों ने सूचना-सन्देश और मनोरंजन को एक नया रूप दिया है। आज रेडियो पर एफ. एम. चैनल लोकप्रियता बटोर रहे हैं और इन्होंने रेडियो की दुनिया को बदल दिया है। जहाँ तक हिन्दी भाषा की बात है यह श्रव्य माध्यम निरक्षर, साक्षर, ग्रामीण शहरी, छोटे-बड़े सभी को साथ लेकर चलने का प्रयास करता रहा है और अपने कार्यक्रमों से लोगों का दिल मोह रहा है। रेडियो पर समाचार, नाटक, कामेंट्री, साक्षात्कार और अन्य कार्यक्रमों के साथ-साथ गीत-संगीत ही लोगों को अधिक पसंद आता है। इस दृष्टि के गीत-संगीत तो हिन्दी भाषा में ही अधिक सुनाई पड़ता है और जहाँ तक रेडियो जॉकी कि बात है वह सामान्य बोलचाल की हिन्दी को आधार बनाकर चलता है। आज इंटरनेट रेडियो के माध्यम से हिन्दी विश्व के कोने-कोने तक अपनी पहचान बनाने में सार्थक सिद्ध हुई है और विश्व व्यापक रूप ले चुकी है। इस दृष्टि से रेडियो में हिन्दी अपनी अहम् भूमिका निभाती नजर आती है।

जनसंचार की दृष्टि से रेडियो के बाद टी.वी. ने लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया। यह दृश्य-श्रव्य माध्यम एक चमत्कार से कम नहीं था। पहले इसमें श्याम-श्वेत चित्र प्रसारित होते थे जैसे ही रंगीन चित्रों का प्रादुर्भाव हुआ तो इसकी लोकप्रियता और नई तकनीक में चार चाँद लग गए। भारत में सन् 1955 में फिलिप्स कंपनी ने दिल्ली के औद्योगिक क्षेत्र में पहली बार टेलीविजन का प्रदर्शन किया और सन् 1956 में दिल्ली से यूनेस्को का एक सम्मेलन आयोजित किया गया। उस समय यूनेस्को ही विश्व के विकासशील देशों में विकास के लिए टेलीविजन के प्रयोग को प्रोत्साहित कर रहा था। कंपनी भारत में दिल्ली के औद्योगिक व्यापार मेले में लाए गए अपने टेलीविजन उपकरण बेचने का प्रस्ताव रखता है और अप्रैल 1958 में भारत सरकार ने प्रयोग के रूप में आकाशवाणी भवन में टेलीविजन ट्रांसमीटर भी लगाया गया। यह भारत में टी.वी. का प्रथम प्रयास था और भारत में उस समय कोई टेलीविजन स्टूडियों उपलब्ध भी नहीं था। इसलिए रिसर्च लेबोरेट्री में ही 16 और 33 मिली मीटर की फिल्में दिखाने की व्यवस्था की गई। 15 सितंबर, 1959 को भारत में पहली बार दिल्ली की पार्लियामेंट स्ट्रीट में टेलीविजन ट्रांसमीटर ने काम करना शुरु किया। इस ट्रांसमीटर से सप्ताह में दो दिन मंगलवार और शुक्रवार को एक घंटे के कार्यक्रम थे और 20 मिनट मनोरंजक कार्यक्रम दिखाए जाते थे। इसके

बाद तो टेलीविजन की दुनिया में दिन प्रतिदिन नवीन प्रयोग होने लगे और दिल्ली के अलावा मुंबई, कोलकत्ता, चेंनई आदि में टेलीविजन पर राष्ट्रीय कार्यक्रम प्रसारित होने लगे। इससे टेलीविजन सेटों की खरीदारी में भारी वृद्धि हुई। सन् 1965 तक आते-आते भारतीय टेलीविजन (दूरदर्शन) पर रोजाना समाचार बुलेटिन की शुरूआत हुई और यही से टी.वी. समाचारों की दुनिया का भी रूप बदलता चला गया, जो वर्तमान तक आते-आते दूरदर्शन व निजी चैनलों के माध्यम से 24 घंटे के समाचार चैनल बन गए हैं। सन् 1992 में दूरदर्शन चैनल के अलावा निजी कंपनी स्टार और जीसमूह के साझा आगमन के साथ ही भारतीय टेलीविजन के इतिहास में नए अध्याय जुड़ गए। एक वर्ष बाद ही सन् 1993 में न्यूज कॉर्पोरेशन ने स्टार टी.वी. को खरीद लिया और दोनों अलग-अलग कार्य करने लगे। अब इनके द्वारा नए-नए चैनलों व कार्यक्रमों का विकास तेजी से भारत में बढ़ा। इन्होंने टेलीविजन की दुनिया की तस्वीर ही बदल दी। अब लोगों के पास टी.वी. पर दिखने वाले चैनलों के कार्यक्रम की संख्या में वृद्धि होने लगी। अब फिल्मों, धारावाहिक, खेल, वाणिज्य, समाचार आदि सभी कार्यक्रम दिन-प्रतिदिन नए रूप धरने लगे।

वर्तमान में सभी प्रकार के मनोरंजन, धार्मिक, खेल, समाचार आदि चैनल चौबीसों घंटे प्रसारित हैं। इन चैनलों और इनके कार्यक्रमों के बढ़ने से हिन्दी का विस्तार व विकास व्यापक रुप से हो रहा है। निजी चैनलों पर प्रसारित हिन्दी धारावाहिक, फिल्म, समाचार आदि केवल भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी देखे और पसंद किए जाते हैं। टी.वी. के सभी प्रकार के कार्यक्रमों के चलते हिन्दी विश्व के कोने-कोने तक पहुंच गयी है। इस दृष्टि से वैश्विक जनसंचार में हिन्दी की भूमिका स्पष्ट नजर आ रही है। यदि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया रेडियो, टी.वी. आदि में प्रसारित कार्यक्रमों से हिन्दी निकाल दी जाए तो यह बक्से ठप पड़े नजर आयेंगे। इसमें कोई दो राय नहीं कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में हिन्दी अपनी अहम् भूमिका अदा करती है।

21वीं सदी के सभी माध्यमों ने देश-दुनिया की दूरियों को कम कर दिया है और विश्वग्राम (ग्लोबल विलेज) की परिकल्पना को सार्थक सिद्ध कर दिया है। इसे अत्याधुनिक दौर में चलते-फिरते सोते-जागते, यहाँ-वहाँ, देश-दुनिया का व्यक्ति आपस में जुड़ा हुआ है और वह देश दुनिया की घटनाओं को जानने, समझने, सुनने और देखने में सक्षम भी दिखाई दे रहा है। मोबाइल और इंटरनेट से इस नई प्रौद्योगिकी को नया कलेवर और नया रूप मिला है। आधुनिक युग में भाषा की दीवार बहुत दूर-दूर तक दिखाई नहीं देती, फिल्मों व धारावाहिकों की डबिंग, इंटरनेट पर अनुवाद और लिपियांतरण आदि सभी कुछ सरल और सुबोध हो गया है। अनभिज्ञता किसी भी वस्तु या स्थान की नहीं रही। शिक्षा, व्यापार, स्वास्थ्य, खान-पान मनोरंजन आदि सभी राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय हो गए हैं।

जहाँ तक विश्व में हिन्दी की बात है आज वह एक अरब से अधिक लोगों के बीच बोली और समझी जा रही है साथ ही विश्व की दूसरी सबसे बड़ी भाषा का दर्जा भी हासिल किए हुए है, जबकि कुछ विद्वान इसे तीसरी सबसे बड़ी भाषा बताते हैं। विचार करें तो हिन्दी का विस्तार दिनोंदिन बढ़ रहा है। हिन्दी की लोकप्रियता और व्यापक स्तर पर लोगों के बीच उसे पहुँचाने में प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया दोनों के माध्यमों का सहयोग रहा है। साधन मजबूत हो और उसके कार्यक्रमों में जान न हो तो साधन क्या करेंगे, इसलिए साधनों के साथ-साथ हिन्दी भाषा और उसके कार्यक्रमों में पकड़ तथा सार्थकता अधिक है। जिसके चलते हिन्दी विश्व मानचित्र पर विश्व की दूसरी बड़ी भाषा के रूप में अपना नाम अंकित कर चुकी है। इस प्रकार समझने और विचार करने से यही कहा जा सकता है कि जनसंचार के प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यमों व उसके कार्यक्रमों के साथ हिन्दी अपनी अहम् भूमिका निभा रही है। जनसंचार में हिन्दी 'भाषा बहता नीर' कथन पर सार्थक सिद्ध हो रही है। संस्कृतनिष्ठ, हिन्दुस्तानी, समान्य बोलचाल और हिंग्लिश रूप ले हिन्दी अपने व्यापक स्तर पर विचार अभिव्यक्ति का साधन बन रही है। छोटी-मोटी त्रुटियों से हर काल में हर भाषा को लड़ाई लड़नी पड़ी है। जहाँ तक हिन्दी की लोकप्रियता की बात है, वह प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के चलते विश्व में प्रथम भाषा का दर्जा भी जल्द की हासिल कर लेगी।

◆ **डॉ. नीरज भारद्वाज**
सहायक आचार्य (हिन्दी)
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं का विकास

सबसे बड़ी समस्या हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के लिए की-बोर्ड से संबंधित थी। देश में लंबे समय तक टाइपराइटरों पर कार्य होने की वजह से रेमिंग्टन की-बोर्ड, KGP for Kannada, TAM99 for Tamil जैसे की-बोर्ड ले-आउट पापुलर थे। 1990 वर्ष तक हमारे पास केवल एक ही विकल्प था हिंदी तथा अन्य भाषाओं के लिए मैनुअल टाइपराइटर या इलेक्ट्रॉनिक टाइपराइटर। हिंदी टाइपिंग के लिए सबसे पहला जो की-बोर्ड विकसित किया गया, वह रेमिंग्टन की-बोर्ड ही था। चूंकि इसे रेमिंग्टन कंपनी दवारा विकसित किया गया था इसलिए इसका नाम रेमिंग्टन की-बोर्ड प्रचलित है। देखने में इसकी वर्ण व्यवस्था बहुत जटिल दिखेगी परंतु की-बोर्ड विकसित करने के समय हिंदी के इतने वर्णों को की-बोर्ड पर व्यवस्थित में सराहनीय कार्य था। हिंदी तथा भारतीय भाषाओं में कार्य करने के लिए संबंधित भाषा की टाइपिंग सीखनी पड़ती थी। DOE द्वारा 1991 में इंस्क्रिप्ट की-बोर्ड जारी किया जो सीखने में बहुत आसान था, परंतु पॉपुलर ना हो सका। वर्ष 2004-2005 के आसपास फोनेटिक की-बोर्ड भी विकसित किया गया जिसमें धीरे-धीरे सुधार हुआ। वर्ष 2005 से हिंदी तथा भारतीय भाषा टंकण के लिए प्रयोगकर्ता के पास 3 की-बोर्ड उपलब्ध हो गए – रेमिंग्टन, इनस्क्रिप्ट एवं फोनेटिक।

वर्ष 2005 से पहले हिंदी तथा भारतीय भाषाओ के लिए हिंदी टंकण, वेबसाइट निर्माण, डाटाबेस में True type fonts का प्रयोग किया जाता था। Fonts based software का विकास CDAC's, Akshar, ShriLipi, Akruti आदि कंपनिया कर रही थी, इनमें से कोई भी एक सॉफ्टवेयर एक-दूसरे के साथ compatible नहीं थे। वेबसाइट में भाषायी सामग्री देखने के लिए पहले फोंट डाउनलोड करना पड़ता था। बाद में कुछ कंपनियों द्वारा वेब फोंटस भी बनाए, जो प्रयोगकर्ता की मशीन में स्वत: डाउनलोड हो जाते थे तथा भाषायी contents देखने में कोई समस्या नहीं होती थी।

वर्ष 2000 में अमेरिका में यूनिकोड कंसोर्शियम का गठन हुआ, इसका उद्देश्य विश्व की सभी भाषाओं को एक प्लेटफार्म पर लाना था। वर्ष 2003-2004 में भारत भी इसका सदस्य बना। वर्ष 2006 में भारत सरकार द्वारा यूनिकोड अपनाने के लिए एक Group (Team) का गठन किया, इस ग्रुप द्वारा सभी भारतीय भाषाओं का बारिकी से स्टडी किया, इनपुट, डिस्पले में आने वाली समस्याओं का निराकरण करने के बाद यूनिकोड एनकोडिंग में सभी भारतीय भाषाओं को शामिल कराया। वर्ष 2010 में Bureau of Indian Standards द्वारा भी इसका मानकीकरण किया गया।

यूनिकोड क्या है?

सर्वप्रथम यह समझना आवश्यक है कि यूनिकोड क्या है? क्या यूनिकोड कोई फोंट है? क्या यूनिकोड कोई टंकण का टूल है? या यूनिकोड कोई हिंदी या भारतीय भाषाओं में टंकण

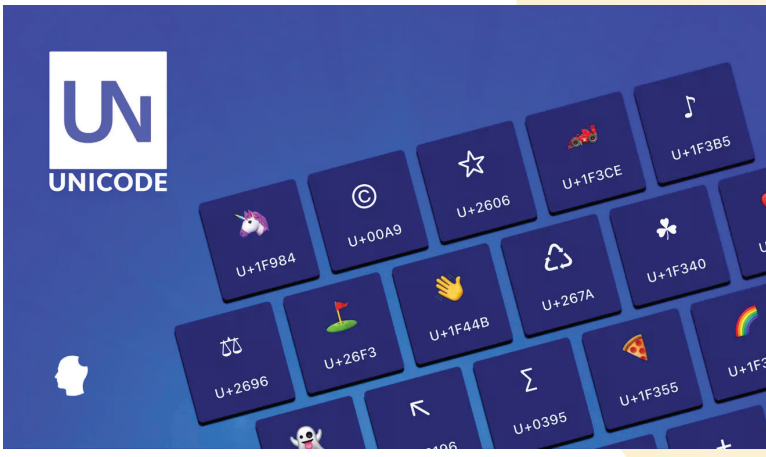

करने का तरीका है? यूनिकोड एक टेक्नोलॉजी मानक है। यूनिकोड मानक में विश्वस्तर पर एवं प्रचलित सभी लिपियों के वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर के लिए यूनिक कोड प्रदान किया गया है। यूनिकोड (Unicode), प्रत्येक अक्षर के लिए एक विशेष संख्या प्रदान करता है, चाहे कोई भी कंप्यूटर प्लेटफॉर्म, प्रोग्राम अथवा कोई भी भाषा हो। यूनिकोड मानक को एपल, एच.पी., आई.बी.एम., माइक्रोसॉफ्ट, ऑरेकल, सैप, सन, यूनिसिस जैसी उद्योग की प्रमुख कम्पनियों और कई अन्य ने अपनाया है। यूनिकोड आई.एस.ओ/आई.ई.सी. 10646 (ISO/IEC 10646) एक अंतर्राष्ट्रीय मानक है। यह कई संचालन प्रणालियों, सभी आधुनिक ब्राउजरों और कई अन्य उत्पादों में उपलब्ध है।

यूनिकोड 16.0 वर्जन में कुल 154998 वर्णों को जोड़ा गया है यूनिकोड 16.0 वर्जन में कुल 164 स्क्रिप्ट हैं भारतीय भाषाओं के लिए यूनिकोड एनकोडिंग के लिए UTF-8 का प्रयोग होता है।

यूनिकोड क्यों?

यूनिकोड मानक सार्विक करैक्टर इनकोडिंग मानक है जिसका प्रयोग कंप्यूटर प्रोसेसिंग के लिए टेक्स्ट के निरुपण के लिए किया जाता है। कंप्यूटर पर एकरूपता के लिए एकमात्र विकल्प कैरेक्टर इनकोडिंग के लिए यूनिकोड है। इससे हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में कंप्यूटर पर अंग्रेजी की तरह ही सरलता से 100% कार्य किया जा सकता है. कंप्यूटर पर हिंदी में सभी कार्य जैसे वर्ड प्रोसेसिंग, डाटा प्रोसेसिंग, ई-मेल, वेबसाइट निर्माण आदि किए जा सकते हैं, हिंदी में बनी फाइलों का आसानी से आदान-प्रदान तथा हिंदी की-वर्ड पर गूगल या किसी अन्य सर्च इंजन पर सर्च कर सकते हैं।

राजभाषा विभाग ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एनकोडिंग की एकरूपता को ध्यान में रखते हुए सभी केंद्रीय कार्यालय को कंप्यूटरों में यूनिकोड एनकोडिंग प्रणाली अथवा यूनिकोड समर्थित ओपन टाइप फोंट का ही प्रयोग करने का निदेश दिया है। परंतु, कंप्यूटर परिचालन से संबंधित छोटी छोटी जानकारी के अभाव में कई केंद्रीय कार्यालय इस निःशुल्क सुविधा की जगह विभिन्न प्रकार के फोंट और बहुभाषी सॉफ्टवेयरों का प्रयोग कर रहे हैं, जिससे सूचना हस्तांतरण में तकनीकी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इस कारण हिंदी की फाइलों को, अंग्रेजी की तरह आसानी से एक कंप्यूटर से दूसरे कंप्यूटर पर, आदान-प्रदान (transfer) नहीं कर पाते हैं। हिंदी पाठ (text) को दूसरे सॉफ्टवेयर में जोड़ने (paste) में भी समस्या आती है। अतः सभी मंत्रालय एवं अधीनस्थ कार्यालय/उपक्रम/सरकारी बैंक केवल यूनिकोड समर्थित फोंट एवं यूनिकोड एनकोडिंग के अनुरूप सॉफ्टवेयर का ही प्रयोग करें। यूनिकोड एनकोडिंग को install/use करना बहुत आसान है।

सूचना प्रौद्योगिकी (IT) के जरिए हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का विकास

इलेक्ट्रॉनिक एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत टीडीआईएल ग्रुप किया गया था।

टीडीआईएल के मुख्य कार्य

इलेक्ट्रॉनिक और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के पास टीडीआईएल (भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी विकास) का एक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य भाषा अवरोध के बिना मानव-मशीन संपर्क को सुविधाजनक बनाने के लिए सूचना प्रसंस्करण उपकरण और तकनीक विकसित करना है; बहुभाषी ज्ञान संसाधनों का निर्माण और उन तक पहुंच बनाना और उन्हें अभिनव उपयोगकर्ता उत्पादों और सेवाओं को विकसित करने के लिए एकीकृत करना है। कार्यक्रम के प्राथमिक उद्देश्यों में सभी 22 आधिकारिक तौर पर मान्यता प्राप्त भारतीय भाषाओं के लिए सॉफ्टवेयर टूल्स और अनुप्रयोगों को विकसित करना और बढ़ावा देना, अभिनव उत्पादों और सेवाओं के लिए भविष्य की प्रौद्योगिकियों के सहयोगी विकास में योगदान देना, भाषा प्रौद्योगिकी उत्पादों के प्रसार के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करना और सभी स्तरों पर समाधान और मानकीकरण प्रदान करना शामिल है।

राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन: भाषिणी

इस मिशन का उद्देश्य आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एनएलपी) का उपयोग करके विभिन्न भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी के बीच अनुवाद की सुविधा के लिए एक आसान और उत्तरदायी पारिस्थितिकी तंत्र को सक्षम करने के लिए एक सार्वजनिक डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म विकसित करना है। मशीन एडेड ट्रांसलेशन (एमएटी), ऑटोमेटिक स्पीच रिकॉग्निशन (एएसआर), टेक्स्ट स्पीच सिस्टम (टीटीएस), ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकॉग्निशन (ओसीआर), स्पीच टू स्पीच ट्रांसलेशन (एस2एस) जैसी मुख्य भाषा प्रौद्योगिकियों के निर्माण और भारतीय भाषाओं में आईटी उपकरण और समाधानों को अपनाने के लिए कुछ प्रमुख पहल की जा रही हैं।

◆ **केवल कृष्ण**
वरिष्ठ तकनीकी निदेशक (से.नि.)
परामर्शदाता (राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय)

साल का चक्रव्यूह

साल के चक्रव्यूह में
हवा का रुख
पलटते रहते हैं,
वो जो हम पर हावी है कैसे करें?
नए साल का स्वागत,
जब इतिहास बदल जाए,
साल की बेड़ियों में सिसकती दुनिया के खिलाफ,
तोड़ो- तोड़ो कालचक्र व्यूह के बन्धन की कारा को,
जियो मलंग मस्ती में,
हवा में लहराती
मुट्ठियों को ताने,
जीवट बुलंद इरादों के साथ, कालचक्र व्यूह में
बहती आततायी हवाओं को रोकने के लिए
हर नए पल,नए क्षण
हवा के रुख को पलट, दुनिया के जीवन को मुस्कुराने के लिए
पतझड़ और बसंत में, ग्रीष्म और शरद में
ताकि इतिहास
करवट ले सके।
यथा हर नए पल, नए क्षण की हार्दिक शुभकामनाएं

◆ **देवी सिंह**
सेवानिवृत्त सहायक महाप्रबंधक, राजभाषा
हडको

महिला कथाकारों के साहित्य में भाषा और संवेदना

भाषा भावों और विचारों की संवाहिका है। मनुष्य सभी जीवधारियों में सबसे श्रेष्ठ है, क्योंकि उसके पास बोलने की ताकत है। मानव अपनी भावनाओं का प्रयोग भाषा के द्वारा करता है। भाषा के संदर्भ में डॉक्टर रामस्वरूप चतुर्वेदी कहते हैं- "भाषा केवल साहित्य में ही प्रयुक्त नहीं होती वरन मानव जीवन की प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। साहित्यकार जिन अनुभूतियों को व्यक्त करना चाहता है, उसका पूर्व-रुप उसे भाषा में उपलब्ध हुआ होगा। उस अंतरमंथन की भाषा का रुप क्या है ? क्योंकि वह तो रचना-सृष्टि के पूर्व ही उसके व्यक्तित्व में अवस्थित है। उसकी काव्य-भाषा उसके भावों से यदि निर्धारित होती है, तो उसके संवेदना की भाषा उसे कहां मिलती है? उसकी व्यापकता अनुभूतियों की भाषा क्या है? क्या एक स्तर पर उसकी विकसित भाषा का स्वरुप ही, जो उसे समाज से मिला है, उसकी व्यापक अनुभूति को निर्धारित नहीं करता? क्या ऐसा नहीं है कि जो भाषा जिस हद तक विकसित और परिष्कृत होती है, उसी के अनुरुप उसके उपयोग करने वालों की संवेदना बनती है"। भाषा और संवेदना का अटूट संबंध है। समाज के द्वारा प्राप्त भाषा-विनिमय के रुप- स्वरुप को जानकर वह उसे अपने अनुरूप डालता है। प्रत्येक रचनाकार अपने अपने युग एवं भाषा का प्रयोग करता है।

महिला कथाकारों ने भाषा का प्रौढ़ और परिष्कृत रुप ग्रहण किया है। लेखिकाएं अपने मन में उठने वाली विविध भावनाओं को अभिव्यक्त करने में सक्षम रही है। शिक्षा और अनुभवों से जो कुछ इन्होंने ग्रहण किया अपने कथा- साहित्य में व्यक्त करने का प्रयास किया। उनकी भाषा में शब्द-भंडार पर्याप्त विस्तृत है। महिला कथाकारों के पास लेखन के प्रति निष्ठा और समर्पण भाव है, इसलिए जो कथावस्तु उभरकर आती है। वह भी प्रमाणिक बनती है। इन के कथा- साहित्य में सूक्तियां, लोकोक्तियां, मुहावरे का प्रयोग बड़ी सहजता के साथ किया है।

महिला कथाकारों ने अपने कथा-साहित्य में भाषा का व्यापक और परिष्कृत रुप हमारे सामने प्रस्तुत किया है। इन लेखिकाओं ने नारी मन की संवेदना और पीड़ा को करुण रुप में व्यक्त करने का प्रयास किया है। लेखिका सूर्यबाला उपन्यास 'सुबह के इंतजार' में मानवीय संवेदना का पात्रों द्वारा त्याग और प्रेम के भाव को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उपन्यास में नायिका गरीबी और हीनता से त्रस्त होते हुए भी अपने भाई के प्रति संवेदनभाव को प्रकट करती है। उसे आगे बढ़ने के लिए अपनी निष्ठा एवं प्रेम को समर्पित करते हुए कहती है – "मेरा जीवन अवधि में छोटा भले ही रहा हो, पर

पूर्ण था- जीत की उपलब्धियों से पूर्ण..... तेरी दीदी बहुत बहादुरी से यह जिंदगी जी चुकी है"। नायिका अपने संपूर्ण जीवन अपनों के प्रति समर्पित कर दिया। जीवन में कठिन स्थिति-परिस्थित के बाद भी अपने हित के लिए कार्य कर, अपनी इच्छाओं का त्याग कर दिया। उपन्यास 'अगिनपंखी' में लेखिका ने रिश्तों का भारीपन और बोझिलपन रूप को दिखाने का प्रयास किया है। नायक जयशंकर समयानुसार अपने जीवन को निखारने के लिए ज्यादा से ज्यादा परिश्रम करता है। पढ़-लिखकर अपनी मां और गाँव का नाम भी रोशन करना चाहता है। जयशंकर अपनी मजबूरी और लोगों की ईर्ष्या का कारण बनता जा रहा है। जयशंकर शादी के बाद अपनी पत्नी को लेकर महानगर में स्लम की एक झोपड़ी में अपना जीवन व्यतीत कर रहा है। विवाह में जो धन -राशि उसे प्राप्त हुई । वह अपनी माँ के सर्पूत कर वह गाँव को छोड़ कर चला जाता है। गाँव एवं परिवार वालों को इस बात का आभास नहीं होता कि वह कैसा जीवन जी रहा है। माँ लगातार जयशंकर के पास जाने का आग्रह करती है। पर जयशंकर अपनी वेदना किसी दिखाये वह मन ही मन अपनी पीड़ा को व्यक्त करते हुए कहता है-"अपनी विपद-गाथा नहीं गायी किसी के सामने। उल्टे रेशमी मायाजाल में भरमाए रखा"। लेखिका सूर्यबाला ने पात्र जयशंकर की संवेदना को दिखाने का प्रयास किया है। जयशंकर माँ को अपने साथ रखना चाहता है । पर मजबूरी में वह माँ को अपने साथ नहीं रख पाता। माँ भी अपने बेटे-बहू से दूर रहने की पीड़ा को झेल रही है। 'ठीकरे की मंगनी' में नासिरा शर्मा ने नारी मन की पीड़ा को सीधी-सपाटबयानी में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। नायिका महरुख का रिश्ता रफत से बचपन में ही तय हो गया था। रफत जब बड़ा हुआ उसने विदेशी महिला से शादी कर महरुख को अकेला छोड़ दिया । महरुख को जब इस बात का पता चला तो वह बड़ी दुखी हुई । महरुख अपनी पीड़ा को व्यक्त करते हुए कहती है –"जिसको दस साल अपने ख्यालों में बसाया, पाँच साल उन्हें ही भुलाने में लगा दिये थे। जख्म भरने के साथ दिल के किसी कोने में रफत भाई भी दफन हो गये थे"।४ लेखिका नासिरा शर्मा ने नायिका महरुख प्यार में मिले धोखे से अपने आपको निकालने में तो सफल हो जाती है।५ कमला पति के जाने के बाद बिल्कुल अकेली हो गई। बूढ़े पिता ने उसके लिए अपनी पूरी जिंदगी समर्पित कर दी । अपनी गहरी संवेदना प्रकट करते हुए कहते है –"अंधेरी रात में पुरानी नाव का अकेला खिवैया किसकी आस में पतवार थामे आगे बढ़ता जाता है? ध्रुवतारे की रोशनी उसे राह दिखा पाती हो या नहीं; लेकिन उसकी आंखों में एक तसल्ली जरुर होती है, ध्रुवतारा दूर सही, वह है तो। उसके निकट नहीं जाया जा सकता, लेकिन उसे दिशा सूचक मान कर भँवर में उतरी हुई नाव को ठिकाने लगाया जा सकता है"। लेखिका ऋता शुक्ल नारी मन ने संवेदनतत्त्व को प्रकट करने में सफल रही है। भाषा का सरल एवं स्थिर रुप प्रकट किया है। लेखिका मेहरुन्निसा परवेज ने उपन्यास 'अकेला-पलाश' में नारी व्यथा को दिखाया है –"पिताजी, माँ और बच्चों को घर से बाहर कर देते, चाहे भरी बरसात हो, चाहे कड़कड़ाती ठंड हो। किसी न किसी बहाने इधर फेंके हुए पार्सल की तरह वह लोग थे । कभी बड़ी बुआ के साथ कुछ महीने काट आते, कभी ददिहाल कुछ महीने काट आते, कभी ननिहाल"। लेखिका ने परिवेशगत सीधी-सरल एवं सहज भाषा का रुप स्पष्ट कर गहरी संवेदना को अभिव्यक्त किया है। उपन्यास 'शेष-यात्रा' में उषा प्रियंवदा ने भी भाषा और संवेदना का सशक्त रुप-स्वरुप स्पष्ट किया है-"उसे अपने अंदर दर्द सा महसूस हो रहा है, दिल का दौरा पड़ते समय की पीड़ा से भी गहरा, पैना और व्यापक"। लेखिका ने पात्रों की वेदना को प्रस्तुत कर, नारी हृदय की पीड़ा कर प्रस्तुत, संत्रास एवं तनाव को भाषा के अनुकूल व्यक्त करने का प्रयास किया है।

भाषा को व्यक्त करने का अपना एक ढंग है, इसे स्पष्ट करने के लिए शशिप्रभा शास्त्री भी सिद्धहस्त है, उर्दू, अंग्रेजी और विदेशी भाषा का प्रयोग करके मुहावरों, अलंकारों आदि का प्रयोग किया गया है- "क्यों इंतिहान क्यों लूंगा, यह आपने कहा कि आप बताएंगी तो.....। शशिप्रभा शास्त्री ने संवेदना और भाषा का स्वरुप स्पष्ट किया है। वही उपन्यास 'रास्तों में भटकते' हुए में लेखिका मृणाल पांडे ने नायिका की बिखरी जिंदगी की व्यथा एंव वेदना दिखाने का प्रयास किया है –"बेटी की मौत ने अचानक सब कुछ तार-तार कर डाला है। लेखिका ने पार्वती की चिंता, पीड़ा और नीरसता के भाव को व्यक्त किया है। उपन्यास 'ऐलान गली जिंदा है' में भाषा का सहज रुप प्रस्तुत कर नारी के मन की करुणा को दिखाने का प्रयास किया-"स्त्री का मन समझना भी तो औरत आदमी के लिए आसान न था। भाषा का प्रयोग वातावरण के अनुसार करने की कला चंद्रकांता में व्यापक रुप से दिखायी पड़ती है। 'कंदील का धुआँ' में दिनेशनंदिनी डालमिया ने नारी व्यथा को चित्रित कर संवेदना के रुप को स्पष्ट किया है- "निराशा का कोहरा मेरे हृदय में घनीभूत होकर छा गया हालाँकि बाहर दिन की धूप निकल रही थी"। लेखिका ने भाषा और संवेदना का सटीक एंव सरल विश्लेषण किया है।

महिला कथाकारों ने जहां संवेदना का रुप-स्वरुप स्पष्ट कर भावाभिव्यक्ति की, वही भाषा का स्वच्छ स्वच्छंद रूप प्रस्तुत किया है।

लोकोक्तियां और मुहावरे का प्रयोग : महिला कथाकारों ने अपनी रचनाओं के द्वारा मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग किया है। इन लेखिकाओं के पास विशाल शब्द-संपदा है। इनकी भाषा पात्र एवं वातावरण के अनुसार मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग किया गया है। जो कि इस प्रकार से है-

"बिल्ली के भाग्य से छींका टूटा"।

"उधर क्या भाड़ झोंकने जाते हो"।

"अपना दूध पतला हो गया तो पराई संतान टिक क्यों आन करें"।

अलंकारों का प्रयोग : महिला कथाकारों ने अपनी रचनाओं में उपमा, दृष्टांत, अनुप्रास और मानवीकरण आदि अलंकारों का प्रयोग किया। - "तवे पर सिकती हुई रोटी की तरह अपने चेहरे पर उभरे हुए मिलन- वियोग के बिखराव को मैंने पलटा"। उपमा अलंकार का प्रयोग लेखिका ने इस वाक्य में किया है।- "पैरों में जैसे परेशानी के घुंघरु बांधकर मैं टहलने लगती"। इस वाक्य में दृष्टांत अलंकार का प्रयोग किया है। "उनके निर्मम कथनों के हाथ मन की झील ठहरे पानी को उल्टे अस्त-व्यस्त ही करते है"। मानवीकरण अलंकार का प्रयोग किया गया है।

बिंब-विधान: बिंब-विधान का प्रयोग प्रत्येक महिला कथाकारों ने अपनी रचनाओं के आधार पर किया है। 'बिंब' का अर्थ 'मन के द्वारा खींचे गए चित्र'। उपन्यासों में भाषा के अंतर्गत बिंब का रुप- स्वरुप स्पष्ट किया गया है। महिला कथाकारों ने अपने उपन्यासों में बिंबों का संबंध इंद्रियों से माना है। इंद्रियों के द्वारा ही भावों का प्रयोग सार्थक माना है । विभिन्न बिंबों का प्रयोग हुआ है जैसे- दृश्य ,श्रव्य, घ्राण, स्पर्श और स्वाद बिंब आदि ।

दृश्य बिंब: दृश्य बिंब का बड़ा महत्व है। इसका संबंध आंखों से होता है। महिला कथाकारों ने अपने साहित्य में दृश्य और श्रव्य बिंब के अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। लेखिका मृदुला गर्ग ने उपन्यास 'मैं और मैं' में दृश्य बिंब का वर्णन इस प्रकार किया है- "पान इतना खाता है कि जबान और दांतो का रंग कीचड़ जैसा हो गया है। बात करते हुए, कील-मुहासों से भरे उसके काले लंबूतरे चेहरे के बीच मुंह के अंदर घूमती कत्थई - लाल जबान कीड़ों पर झपटती छिपकली की याद दिलाती है"।१६ इसमें लेखिका मृदुला गर्ग ने नए-नए प्रयोग किये है।

श्रव्य बिंब: श्रव्य बिंब का संबंध कानों से है।मेहरुन्निसा परवेज ने अपने उपन्यास 'अकेला पलाश' में श्रव्य बिंब को इस प्रकार प्रस्तुत किया है- "सड़क के किनारे ताड़- के ऊंचे ऊंचे पेड़ हवा में हिल रहे थे और उनके बड़े- बड़े पत्ते खूब शोर कर रहे थे, जैसे चीख-चीखकर कह रहे हो, लौट आओ लौट आओ"। लेखिका चंद्रकांता ने 'ऐलान गली जिंदा है' में श्रव्य बिंब का प्रयोग प्रस्तुत किया है- "एकाध बार किसी की परछाई दरवाजे के पास डाली, धीमी- सी हंसी खनकी, ज्यों कई छोटे- छोटे घुंघरु छन-छन बज उठे हो"।

घ्राण बिंब: घ्राण बिंब से अभिप्राय सूंघने से है। इसका प्रयोग कम से कम हुआ है । मृदुला गर्ग ने 'मैं और मैं' उपन्यास में घ्राण बिंब का प्रयोग किया है- "सस्ते तंबाकू की तीखी गंध और धुएँ की वजह कमरा, कब्र की घुटन लिए हुए है"।

स्पर्श बिंब : स्पर्श बिंब का संबंध त्वचा या महसूस करने से है। स्पर्श बिंब का प्रयोग उपन्यासों में अधिक मिलता है। लेखिका दिनेशनंदिनी डालमिया ने अपने उपन्यास 'कंदील का धुआँ' में स्पर्श बिंब का मनमोहक रुप प्रस्तुत किया है। "गुलाब जल से पिसे हुए चंदन की तरह संवेदना का लेप बनकर उसके शरीर के साथ लगे रहने की मेरी कल्पना हर समय तिरस्कृत होती चली गई, तो मुझे लगा कि इसके मूल में कोई कारण विशेष भी हो सकता है"।

स्वाद बिंब : इसका संबंध जिह्वा से है।इसका प्रयोग महिला कथाकारों ने अपने साहित्य में यदा-कदा किया है । लेखिका उषा प्रियंवदा के उपन्यास'शेषयात्रा' में इसका रुप- स्वरुप प्रस्तुत किया है –"अकेलेपन के डर का भी जैसे एक रुखा-सूखा, तालू से चिपका स्वाद है"।

समग्रत: कहा जा सकता है- इन महिला कथाकारों ने अपने साहित्य में भाषा का प्रयोग पात्रानुकूल और परिवेशनुकूल करने का प्रयास किया है।इन लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में शब्द-संपदा का व्यापक और विस्तृत रुप तो प्रस्तुत किया है साथ ही भाषा का सरल - सहज और स्पष्ट रुप प्रस्तुत किया है। मुहावरे,लोकोक्तियां,अलंकारों और बिंब-विधान का सुंदर एंव सफल प्रयोग किया है ।

◆ **डॉ. राजकुमारी शर्मा**
असिस्टेंट प्रोफेसर

बहुभाषिकता की संकल्पना

भाषा सार्थक ध्वनि समूह का वह रूप है जिसके द्वारा भावाभिव्यक्ति अथवा विचारों का आदान-प्रदान होता है। यही वह माध्यम है जिसकी सहायता से सर्जक स्वानुभूतियों को शब्दबद्ध करके दूसरों तक प्रेषित करता है। मानक हिंदी कोश के अनुसार- किसी विशिष्ट जन समूह द्वारा अपने भाव, विचार आदि प्रकट करने के लिए प्रयोग में लाए जाने वाले शब्द भाषा कहलाते हैं। विचार करें तो हम पाते हैं कि अपने विकासक्रम में मनुष्य ने भिन्न-भिन्न भाषा रूपों के सहारे अभिव्यक्ति को विकसित किया है। यह अनुमान ही है कि बहुत आरंभ में उसने कुछ संकेत अथवा ध्वनियों के सहारे ही एक दूसरे से संप्रेषण किया होगा, तदनंतर कुछ ध्वनियां सभी में एक समान होती चली गई होंगी और फिर धीरे-धीरे शाब्दिक स्वरूप सामने आया होगा। यह वह अवस्था थी जब केवल संप्रेषण महत्वपूर्ण था। क्योंकि इस अवस्था में भाषा का कोई लिखित अथवा शुद्ध रूप विकसित नहीं हुआ था, इसलिए यहां वैचारिक श्रेष्ठता जैसी बातें भी नहीं मिलती। क्योंकि समुचित भाषिक क्षमता के अभाव में वैचारिक श्रेष्ठता की उपादेयता निरर्थक अथवा बेजान ही रहती है। डॉ. भोलानाथ तिवारी भाषा का संबंध सामान्य बोलचाल में अभिप्राय के प्रकटीकरण से मानते हैं। उनके अनुसार- सामान्य बोलचाल में व्यक्ति के अभिप्राय को दूसरों के समक्ष प्रकट करने वाले किसी भी साधन को भाषा कह दिया जाता है। इसमें हाव-भाव तथा सांकेतिकता आदि को भी समाहित किया जा सकता है।

बहुभाषिकता से अभिप्राय विभिन्न भाषाओं को जानने और प्रयोग करने से है। दूसरे शब्दों में भिन्न भाषा-भाषियों के साथ परस्पर भावानुभूतियों के आदान-प्रदान हेतु भिन्न-भिन्न भाषा तथा उपभाषाओं का व्यवहार बहुभाषिकता कहलाता है। सामान्यतः देखा जाए तो किसी भी देश में विभिन्न भाषाओं तथा उपभाषाओं का व्यवहार होता है किंतु संवैधानिक दृष्टि से कुछ ही देश ऐसे हैं जहां तीन अथवा अधिक भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। आंकड़ों अथवा सर्वेक्षणों के आधार पर देखें तो विश्व के विभिन्न देशों में कई हजार भाषाएं बोली तथा समझी जाती हैं। अकेले भारत में ही कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बदले बानी नामक कहावत प्रसिद्ध

है। कहने का अभिप्राय यह है कि संवैधानिक स्थिति और व्यावहारिक स्थिति में पर्याप्त भिन्नता सर्वत्र विद्यमान है। ब्रिटेन, अमेरिका, जापान,फ्रांस तथा जर्मनी आदि देशों में एक ही भाषा को मान्यता प्राप्त है किंतु वहां सैकड़ों अन्य भाषाओं के प्रयोक्ता भी रहते हैं। भारत में भी हिंदी तथा अंग्रेजी के अतिरिक्त जर्मन, फ्रेंच, इटेलियन, स्पेनिश तथा पोलिश आदि विभिन्न भाषाओं का व्यवहार भी होता है। भारत के विभिन्न प्रदेशों में भिन्न-भिन्न बोलियां बोली जाती हैं,कितने ही लोग ऐसे हैं जो एकाधिक प्रदेशों की भाषा- बोलियों को सहजता में ही बोलते, समझते और व्यवहार में लाते हैं। दुनिया के कई देशों में जहां लाखों भारतीय रहते हैं वे वहां अपनी-अपनी प्रादेशिक भाषाओं का भी व्यवहार करते हैं। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में असमिया, उड़िया, उर्दू, कश्मीरी, गुजराती, तमिल, तेलुगू , पंजाबी, बंगाली, मराठी और मलयालम आदि 22 भारतीय भाषाएं सम्मिलित हैं, इससे यहां की बहुभाषिक स्थिति का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि भारत में बहुभाषिकता की अवधारणा नई नहीं है। प्राचीन काल से ही सामाजिक संरचना,भौगोलिक स्थिति तथा विदेशी उपनिवेश आदि ऐसे विभिन्न कारण रहे, जिससे बहुभाषिकता फलती फूलती रही। बहुभाषिकता जहां एक ओर सामाजिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक विविधता का प्रतिनिधित्व करती है वहीं वह अभिव्यक्ति को भी व्यापक बनाती है।

आज जब ज्ञान-विज्ञान, सूचना- तकनीक एवं भूमंडलीकरण की प्रक्रिया बहुत तेजी से आगे बढ़ रही है तब बहुभाषिकता बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। क्योंकि किसी भिन्न प्रदेश अथवा देश के साहित्य, संस्कृति, कला, चिकित्सा,शिक्षा तथा विचार विनिमय, तकनीकी ज्ञान आदि को समझने के लिए वहां की भाषा उपभाषाओं तथा क्षेत्रीय बोलियों को जानना-समझना आवश्यक होता है। बहुभाषिकता व्यापकता की सूचक है। किसी भी व्यक्ति,समाज अथवा राष्ट्र के लिए बहुभाषिक स्थिति के विभिन्न कारण होते हैं जैसे- राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, शैक्षिक रोजगार, भूमंडलीकरण अथवा वैश्वीकरण आदि कुछ प्रमुख कारण हैं जो बहुभाषिकता की संकल्पना को आवश्यक एवं व्यापक बनाते हैं। इन कारणों से भाषा की आवश्यकताएं बढ़ती हैं और आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु ही व्यक्ति उन्हें सीखता है और अपने कार्य क्षेत्र अथवा व्यवहार में लेकर आता है। बहुभाषिकता व्यक्ति के व्यक्तित्व में एक ऐसा महत्वपूर्ण आयाम जोड़ती है जिसके सहारे वह संप्रेषणियता में तो आगे रहता ही है, कई स्थानों पर सम्मान भी पाता है। ध्यान रहे भाषाओं का विषय संकुचितता के दायरे से बाहर रहना चाहिए। अपनी मूल भाषा को अपने साथ रखते हुए किसी अन्य भाषा को सीखना व समझना महत्वपूर्ण है।

आज जब विभिन्न विषय एवं क्षेत्र ग्लोबल हो रहे हैं तब बहुभाषिकता एक बड़ी एवं महत्वपूर्ण संकल्पना बन रही है। अनुवाद एवं पर्यटन ऐसे बड़े क्षेत्र हैं जहां बहुभाषिकता एक कौशल के रूप में रोजगार के बड़े अवसर भी उपलब्ध करवा रही है। ज्ञान-विज्ञान के अन्य अनेक क्षेत्रों में भी बहुभाषिकता के द्वारा रोजगार की अपार संभावनाएं लगातार बढ़ रही हैं। ध्यान रहे भाषाएं एक दूसरे को समृद्ध करती हैं और जब वे तकनीक के साथ जुड़ जाती हैं तो उनके लिए ग्लोबल की यात्रा करना सहज हो जाता है। बहुभाषिकता लोकल और ग्लोबल के बीच सेतु का काम कर रही है।

◆ **डॉ. वेद प्रकाश**
सहायक आचार्य,
हिंदी विभाग, किरोड़ीमल कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय

बढ़ती उम्र

आईने में दिखते हुए अपने अस्तित्व को निहारते हैं,
चलिए अपनी बढती उम्र को भी अब स्वीकारते हैं ।
खुद को बढ़ती उम्र के साथ स्वीकारना, तनावमुक्त जीवन देता है,
वरना ये इंटरनेट और सोशल मीडिया
तो तरह तरह के उपदेश देता है ।
यह खाओ, वो मत खाओ, ठंडा खाओ, गर्म पीओ,
सवेरे नीम्बू तो रात को दूध पीओ ।
नमक-चीनी से बना लें दूरी,
Anti- Aging Tips लेना तो है बेहद जरुरी ।
गहरी सांस लो, कपाल भाती करो,
सावधान...हाई बीपी वाले आराम से करो ।
ये सब ऑर्गेनिक, एलोवेरा का लोचा,
नीम, करेला में फंसकर दिमाग का उड़ गया परखछा ।
स्वस्थ होना तो दूर, स्ट्रेस लेवल बढ़ा लिया,
दूसरों से वाहवाही के चक्कर में,
कम्बख्त चैन भी गँवा दिया।
देखा जाए तो, भोजन का संबंध तो पहले मन से होता है,
और मन अच्छे भोजन से ही प्रसन्न भी रहता है ।
हर वो चीज़ जो हमें पसंद है, सही मात्रा में खाइये,
यथासंभव अपने कार्य स्वयं करते रहिए ।
पैदल चलने का अवसर मत गंवाइए,
व्यस्त रहिए, प्रसन्न रहिए ।
हर उम्र एक अलग खूबसूरती लेकर आती है,
उसका आनंद लीजिये ।
बाल रंगने हैं तो रंगिये, वज़न कम करना है तो करिए ।
मनचाहे कपड़े पहनने हैं तो पहनिए,
पर बच्चों की तरह खिलखिलाना मत भूलिए ।
बच्चा सुंदर इसलिये दिखता,
क्यूंकि वो छल कपट से परे मासूम होता ।
सुंदर दिखने से है ज़रुरी, उसी मासूमियत को जिंदा रखना ।
कोई क्रीम हमें गोरा ना बनाती,
ना कोई शैम्पू बाल झड़ना रोकता ।
कोई तेल ना बाल उगाता,
क्या कोई साबुन बच्चों सी त्वचा लौटाता ।
बंधू....ये सब तो है कुदरत की माया,
उम्र का तकाज़ा त्वचा से लेकर बालों तक आया।

क्या हुआ अगर नाक जो थोड़ी मोटी है,
कोई फर्क नही आंखें अगर छोटी है ।
गोरे हैं या काले है, लम्बे हैं या नाटे हैं,
मन की सुंदरता से ही चेहरे की आभा होती है ।
इस शरीर का तो काम ही है उम्र के साथ बदलते रहना,
वज़न का भी हिसाब से घटते बढ़ते रहना ।
मिट्टी से ही आये हैं, मिट्टी में ही मिल जाना
तो क्यों रोज़ रोज़ ये सोच कर जीना,
इस रेस में दौड़ने के लिए और क्या क्या है करना ।
ये तो शुक्र है अभी बाज़ार में अमृत नहीं बिकता,
वरना इस व्यापार का तो क्या ही हाल हुआ होता ।

बढती उम्र की इन लकीरों को निखारते हैं,
इनमे छुपे हुए तजुर्बे से अपनी नई पीढ़ी को संवारते है ।
मिला जो हमें हमारे बुजुर्गों से,
उसी में से थोडा सा क़र्ज़ उतारते हैं ।
आईने में दिखते हुए अपने आस्तित्व को निहारते हैं,
चलिए अपनी बढती उम्र को भी अब स्वीकारते हैं ।

◆ **पूनम बी राजपाल,**
वरि. प्रबंधक(आई टी) एवं हिंदी नोडल अधिकारी,
आई टी विभाग, मुख्यालय

निवारक सतर्कता (Preventive Vigilance)

निवारक सतर्कता, भ्रष्टाचार और कुप्रबंधन से बचाव हेतु एक प्रमुख रणनीति है, जिसका उद्देश्य सरकारी और निजी संस्थाओं में पारदर्शिता, ईमानदारी और सही कार्यप्रणाली को बढ़ावा देना है। यह सतर्कता एक सक्रिय उपाय है, जिसके द्वारा किसी भी अवैध या अनैतिक कार्य को होने से पहले ही रोका जा सकता है। निवारक सतर्कता का मुख्य उद्देश्य किसी भी प्रकार के धोखाधड़ी, भ्रष्टाचार और अनियमितताओं को रोकना है, ताकि संस्थाओं में कार्यों की पारदर्शिता बनी रहे और समाज में विश्वास कायम हो सके।

निवारक सतर्कता के उद्देश्य

1. **भ्रष्टाचार का मुकाबला:** निवारक सतर्कता का सबसे प्रमुख उद्देश्य भ्रष्टाचार को खत्म करना है। जब किसी कार्य की सही तरीके से निगरानी और मूल्यांकन होता है, तो भ्रष्टाचार के होने की संभावना कम हो जाती है।
2. **संस्थागत पारदर्शिता:** निवारक सतर्कता, संस्थाओं में पारदर्शिता को बढ़ावा देती है। जब कर्मचारी और अधिकारी यह समझते हैं कि उनकी गतिविधियों पर निगरानी रखी जा रही है, तो वे अधिक ईमानदारी से काम करते हैं।
3. **संगठनात्मक कार्यप्रणाली में सुधार:** निवारक सतर्कता के माध्यम से संस्थाओं में कार्यप्रणाली में सुधार किया जा सकता है। इससे न केवल भ्रष्टाचार की संभावना कम होती है, बल्कि कामकाजी प्रक्रिया में भी सुव्यवस्था आती है।
4. **सुरक्षा और भरोसा:** जब किसी संगठन में निवारक सतर्कता के उपाय सही तरीके से लागू होते हैं, तो वहां काम करने वाले कर्मचारियों और नागरिकों का भरोसा बढ़ता है। इससे कार्य स्थल पर एक सकारात्मक वातावरण पैदा होता है।

निवारक सतर्कता के उपाय

1. **सतर्कता प्राधिकरण का गठन:** विभिन्न सरकारी और निजी संगठनों में सतर्कता प्राधिकरण का गठन किया जाता है, जो कार्यों की नियमित निगरानी करता है और भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई करता है, जैसे: केन्द्रीय

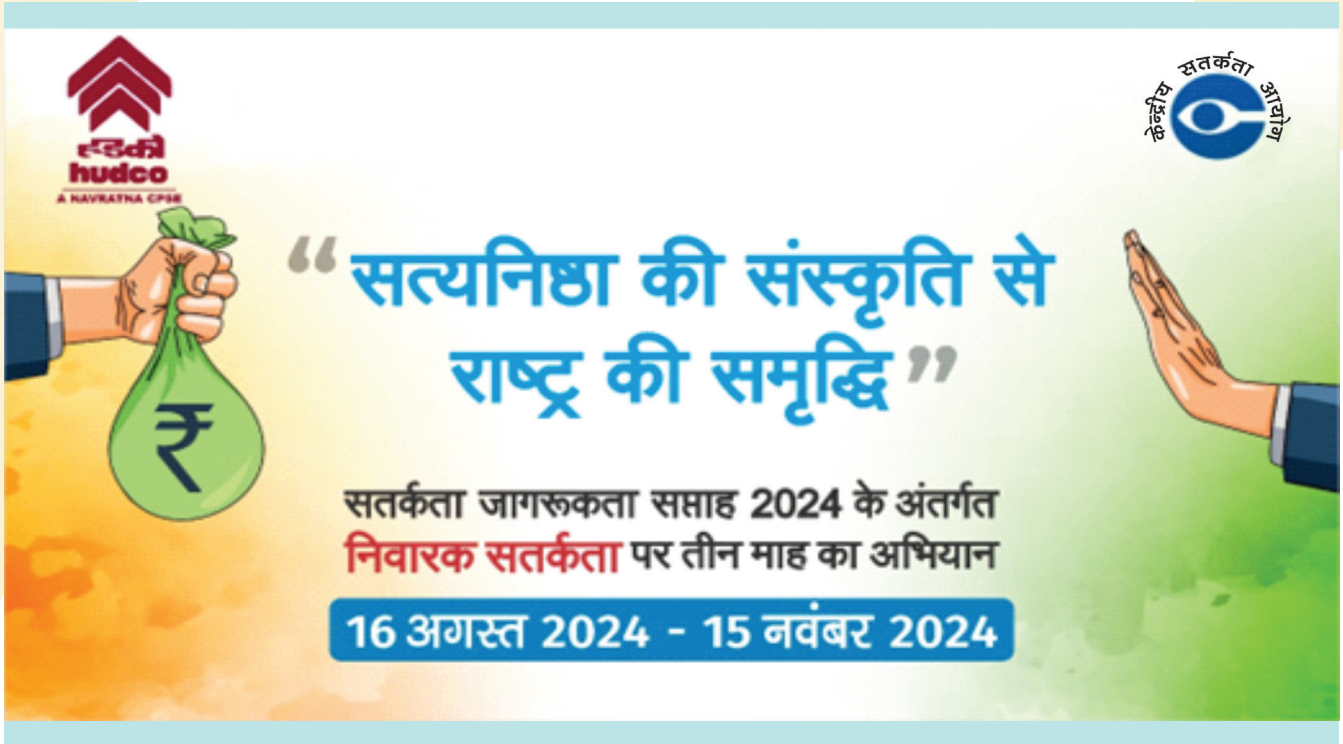

सतर्कता आयोग, केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो, भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो, आदि।

2. **नियमों का पालन और निगरानी:** सभी कर्मचारी और अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि वे संगठन के द्वारा निर्धारित नियमों व नीतियों का पालन कर रहे हैं। नियमों व नीतियों के उल्लंघन की स्थिति में जांच और कार्यवाही की जाती है।

3. **प्रशिक्षण और जागरूकता:** कर्मचारियों को निवारक सतर्कता के बारे में जागरूक किया जाता है। उन्हें यह बताया जाता है कि भ्रष्टाचार और अनियमितताओं से बचने के लिए क्या कदम उठाए जा सकते हैं।

4. **ऑनलाइन निगरानी और डेटा विश्लेषण:** डिजिटल तकनीकों का उपयोग करके कामकाजी प्रक्रियाओं और वित्तीय लेन-देन की निगरानी की जाती है। यह न केवल पारदर्शिता बढ़ाता है, बल्कि भ्रष्टाचार के मामलों को जल्दी पकड़ने में भी मदद करता है।

5. **सामाजिक सहभागिता और सूचना का आदान-प्रदान:** निवारक सतर्कता को प्रभावी बनाने के लिए समाज और नागरिकों को भी शामिल किया जाता है। किसी भी तरह की अनियमितताओं के बारे में नागरिकों को सूचित किया जाता है और उनकी रिपोर्ट को गंभीरता से लिया जाता है।

निवारक सतर्कता का महत्व

1. **भ्रष्टाचार की रोकथाम:** निवारक सतर्कता के माध्यम से भ्रष्टाचार और अनियमितताओं के खिलाफ एक मजबूत ढांचा तैयार होता है। यह कार्यों की निष्पक्षता और पारदर्शिता सुनिश्चित करता है।

2. **सार्वजनिक विश्वास में वृद्धि:** जब नागरिकों को यह भरोसा होता है कि सरकारी और निजी संस्थाएं पारदर्शिता के साथ काम कर रही हैं, तो उनका विश्वास बढ़ता है, जो अंततः राष्ट्र की विकास प्रक्रिया को गति प्रदान करता है।

3. **समाज में नैतिकता का विकास:** निवारक सतर्कता के उपाय समाज में नैतिकता और ईमानदारी को बढ़ावा देते हैं। इससे समाज में एक सकारात्मक परिवर्तन आता

है और लोग अपने कार्यों के प्रति अधिक जिम्मेदार बनते हैं।

4. **कानूनी दायित्वों की पूर्ति:** यह सुनिश्चित करता है कि सभी सरकारी और निजी संस्थाएं अपने कानूनी दायित्वों का पालन कर रही हैं और नियमों के उल्लंघन से बच रही हैं।

निष्कर्ष

निवारक सतर्कता एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और कुप्रबंधन को रोकना है। यह एक ऐसा तंत्र है, जो किसी भी संगठन के लिए पारदर्शिता और ईमानदारी को सुनिश्चित करता है। यदि इसे सही तरीके से लागू किया जाए, तो यह न केवल संस्थाओं की कार्यप्रणाली को सुधार सकता है, बल्कि समग्र समाज में सकारात्मक बदलाव लाया जा सकता है।

◆ **राकेश कुमार डागर**
नोडल अधिकारी, वरिष्ठ प्रबन्धक (सचि.)
सतर्कता विभाग

संविधान की आठवीं अनुसूची और भारतीय भाषाएँ

भारत सरकार अधिनियम 1935 के आधार पर सन् 1946 में जब भारतीय संविधान बनाना शुरु किया गया, तो उसमें अनेक विषयों के साथ-साथ एक प्रमुख विषय था - भारतीय भाषाएँ। संविधान निर्माताओं के सम्मुख मुख्य प्रश्न था कि केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारों का कार्यालयी कार्य किस भाषा में किया जाए। जहाँ तक राज्यों की बात थी, तो यह लगभग सर्वस्वीकृत था कि राज्यों का सरकारी कामकाज उस राज्य की प्रमुख भाषा में ही किया जाए, किंतु केंद्र सरकार के कार्यालय में कामकाज के लिए किस भाषा को स्वीकार किया जाए, अर्थात् भारत संघ की राजभाषा कौन सी बनाई जाए? इसे लेकर दुविधा की स्थिति थी। संविधान सभा में इस संवेदनशील विषय को बाद के लिए स्थगित कर दिया गया और जब संविधान का निर्माण अंतिम चरण में था, तो 14 सितंबर सन् 1949 को संविधान सभा में यह निर्णय लिया गया कि देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी संघ की राजभाषा होगी। इस बात का उल्लेख संविधान के अनुच्छेद 343 में किया गया। इस पद के लिए हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेज़ी और उर्दू भी दावेदार थीं। उनके पक्षधर भी अपने-अपने तर्क लेकर इन्हें राजभाषा बनाने के लिए प्रयासरत थे। अंग्रेज़ी के पक्षधर सदस्यों का यह विचार था कि क्योंकि कार्यालयी कार्य अंग्रेज़ों के द्वारा विधिवत रूप से इस देश में प्रारंभ किया गया और वह कार्य अंग्रेज़ी भाषा में हो रहा था, अतः अंग्रेज़ी को ही भारत संघ की राजभाषा बनाया जाए, किंतु अन्य सदस्यों ने इसका ज़ोरदार विरोध किया और कहा कि अंग्रेज़ों और अंग्रेज़ी से मुक्ति पाने के लिए तो हमारे क्रांतिकारी-बलिदानियों ने इतना त्याग-बलिदान किया और यदि स्वतंत्रता के पश्चात हम अंग्रेज़ी को ही संघ की राजभाषा बना देंगे, तो स्वतंत्रता सेनानियों और शहीदों का अपमान होगा। दूसरा विचार अरबी-फ़ारसी से जन्मी उर्दू को राजभाषा बनाने का था, जिसके पक्ष में यह तर्क दिया जा रहा था कि अंग्रेज़ों के आने से पहले अधिकतर दरबारी कामकाज फ़ारसी और उसकी बेटी उर्दू में हो रहे थे; चाहे ज़मीन जायदाद के काग़ज़ात हों या पुलिस-फौज़ आदि की कार्रवाइयाँ, अन्य इसी प्रकार के मामले, उन सबमें उर्दू का प्रयोग हो रहा था। इसलिए उनका तर्क था कि उर्दू को भारत की राजभाषा बनाया जाए। यह विचार स्वीकृत नहीं हुआ, क्योंकि उर्दू एक सीमित प्रदेश की भाषा थी और संस्कृत से बहुत दूर थी। इसी कारण अन्य भारतीय भाषाओं के साथ भी उसका संपर्क उतना नहीं था, जितना होना चाहिए था। संस्कृत की बड़ी बेटी हिंदी को संघ की राजभाषा बनाने का निर्णय 14 सितंबर को लिया गया और संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक तथा अनुच्छेद 120 और 210 में भारत में हिंदी के प्रयोग के संबंध में विस्तृत दिशा निर्देश दिए गए। इसके साथ ही संविधान की आठवीं अनुसूची में 14 भारतीय भाषाओं को सांविधानिक मान्यता दी गई थी। कालांतर में 21वें संविधान संशोधन अधिनियम 1967 द्वारा इसमें सिंधी को 15वीं भाषा के रूप में जोड़ा गया।

1992 में 71वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा कोंकणी, मणिपुरी और नेपाली भाषा को भी संविधान की आठवीं अनुसूची में जोड़ दिया गया। इससे इस अनुसूची में भारतीय भाषाओं की संख्या 18 हो गई। 2003 में 92 वें संविधान

संशोधन अधिनियम द्वारा इस अनुसूची में बोडो, डोगरी, मैथिली और संथाली भाषाओं को इसमें जोड़ देने से आठवीं अनुसूची में भारतीय भाषाओं की संख्या 22 हो गई। अभी भी लगभग 50 अन्य लोकभाषाएँ इसमें सम्मिलित करवाने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।

यहाँ दो बातें ध्यातव्य हैं - पहली – अंग्रेज़ी अभी भी इस अनुसूची में सम्मिलित नहीं की गई है, अर्थात् उसे भारतीय भाषा की मान्यता नहीं मिली है। दूसरी, हिंदी 17 लोकभाषाओं का समूह है। ऐसे में यदि उसकी लोकभाषाओं को उससे काटकर आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कर दिया गया, तो हिंदी का संख्या बल कम हो जाएगा। इसका उदाहरण है – मैथिली। पहले यह हिंदी की लोकभाषा के रूप में स्वीकृत थी और मैथिल कोकिल विद्यापति तथा अन्य मैथिल कवि हिंदी के कवि कहलाते थे। अब मैथिली आठवीं अनुसूची की 22 भाषाओं में सम्मिलित किए जाने के बाद मैथिली बोलने वाले लोग हिंदी से अलग हो गए, अर्थात् हिंदी के प्रयोक्ताओं की संख्या में कमी हो गई। इसी प्रकार यदि भविष्य में भोजपुरी, राजस्थानी, हरियाणवी आदि लोकभाषाओं को भी आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कर दिया गया, तो हिंदी का संख्या बल कितना कम हो जाएगा, यह कल्पना करना कठिन नहीं है। कहीं यह हिंदी विरोधियों की हिंदी को कमज़ोर करने की चाल तो नहीं!

आइए, अब थोड़ा दिमाग़ी कसरत भी कर ली जाए। तो तैयार हो जाइए और नीचे दी गई भाषा पहेली में से 22 भारतीय भाषाओं के नाम ऊपर से नीचे, बाएँ से दाएँ और तिरछे ढूँढ़कर अलग काग़ज़ पर लिखिए। अगर पूरी 22 भाषाओं के नाम न ढूँढ पाएँ, तो इसी पत्रिका के किसी अन्य पृष्ठ पर देखिए, ये नाम मिल जाएँगे।

सं	क्ष	ने	ज्ञ	मै	ते	बं	अ
स्कृ	था	पा	थि	लु	पं	गा	स
त	ढ	ली	गु	बो	जा	ली	मि
हिं	मि	म	ज	डो	बी	श्र	या
झ	दी	ल	रा	कों	क	णी	छ
उ	ड़ि	या	ती	ठी	श्मी	त्र	ख
र्दू	ढ	ल	डो	ग	री	सिं	ड़
ज्ञ	त्र	म	णि	पु	री	चू	धी

उत्तर

ऊपर से नीचे – 1. संस्कृत, 2. उर्दू, 3. नेपाली, 4. मलयालम, 5. गुजराती, 6. बोडो, 7. पंजाबी, 8. कश्मीरी, 9. बंगाली, 10. असमिया

बाएँ से दाएँ – 11. उड़िया, 12. मणिपुरी, 13. डोगरी, 14. कोंकणी

तिरछे – 15. तमिल, 16. हिंदी, 17. संथाली, 18. मैथिली, 19. मराठी, 20. तेलुगु, 21. कन्नड़, 22. सिंधी

◆ **डॉ. सुधा शर्मा 'पुष्प'**
पूर्व वरिष्ठ शिक्षिका एवं शिक्षाविद्

मेरा भारत: दिलचस्प तथ्यों का खजाना! इतिहास और रोचक तथ्य

भारत! ये नाम ही अपने आप में एक गौरव का भाव जगा देता है। हज़ारों साल पुराना इतिहास, विविध संस्कृतियाँ, मनमोहक प्राकृतिक छटा - भारत अपनी अनोखी खूबियों से दुनियाभर के लोगों को मंत्रमुग्ध कर देता है।

1. मसालों की धरती भारत:

भारत को मसालों की धरती के नाम से जाना जाता है। इलायची, दालचीनी, जीरा, हल्दी - यहाँ ना जाने कितने तरह के मसाले पाए जाते हैं, जिन्होंने सदियों से दुनिया के खाने का स्वाद बढ़ाया है। यहाँ तक कि "मसाला" शब्द ही मूल रूप से संस्कृत के "मिश्र" शब्द से निकला है।

2. योग का जन्मस्थान भारत:

मन और शरीर को संतुलित करने की प्राचीन भारतीय परंपरा, योग, आज पूरी दुनिया में प्रचलित है। हजारों साल पहले

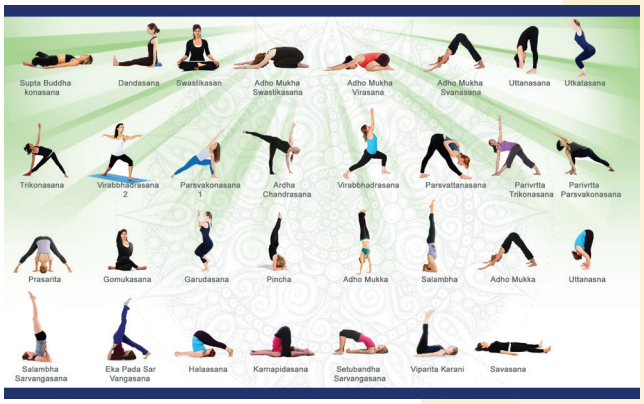

भारत में ऋषियों द्वारा विकसित किए गए योगासन और प्राणायाम आज तनाव, चिंता और बीमारियों से निजात पाने का एक कारगर उपाय माने जाते हैं।

3. भारत में शतरंज का आविष्कार:

क्या आप जानते हैं कि मस्तिष्क को दौड़ाने वाला मशहूर खेल शतरंज की उत्पत्ति भारत में हुई थी? प्राचीन भारत में इसे "चतुरंग" के नाम से जाना जाता था। बाद में यह खेल फारस होते हुए पूरी दुनिया में फैल गया और आज "चेस" के नाम से प्रसिद्ध है।

4. भारत में दुनिया का सबसे ऊँचा रेलवे ब्रिज:

अगर आप रोमांच पसंद करते हैं, तो जम्मू-कश्मीर में स्थित चिनाब ब्रिज को ज़रूर देखना चाहेंगे। यह ब्रिज समुद्र तल से

1,384 मीटर की ऊँचाई पर बना हुआ है और दुनिया का सबसे ऊँचा रेलवे ब्रिज होने का गौरव प्राप्त करता है।

5. भारत में एक से अधिक राष्ट्रीय भाषाएँ:

भारत एक बहुभाषी देश है, जहाँ सैकड़ों भाषाएँ बोली जाती हैं। हालांकि, भारत का संविधान हिंदी को राष्ट्रीय भाषा घोषित करता है, लेकिन अंग्रेजी को भी सह-आधिकारिक भाषा का दर्जा प्राप्त है। साथ ही, 22 अन्य भाषाओं को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया है, जिन्हें "संविधानिक भाषाएँ" कहा जाता है।

6. भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र:

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। यहाँ हर नागरिक को अपने मतदान के अधिकार का इस्तेमाल करने का अवसर प्राप्त है। इतने विशाल देश में लोकतांत्रिक प्रक्रिया को सुचारु रूप से चलाना अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है।

7. गणित और खगोल विज्ञान में अग्रणी भारत:

भारत प्राचीन काल से ही गणित और खगोल विज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी रहा है। शून्य का अविष्कार, दशमलव पद्धति, पाइथागोरस प्रमेय से सदियों पहले ही "सुलभ सूत्र" का प्रयोग - ये कुछ ऐसे उदाहरण हैं जो भारत के वैज्ञानिक एवं गणितीय योगदान को दर्शाते हैं। साथ ही, भारत के प्राचीन ऋषियों ने नक्षत्रों का गहन अध्ययन किया और ज्योतिष विज्ञान की नींव रखी।

8. भारत में सिनेमा का जन्म:

हालाँकि हॉलीवुड को फिल्म इंडस्ट्री का केंद्र माना जाता है, लेकिन भारत दुनिया का सबसे बड़ा फिल्म उद्योग, बॉलीवुड, का गौरव रखता है। 1913 में दादा साहेब फाल्के द्वारा निर्मित "राजा हरिश्चंद्र" पहली भारतीय फिल्म मानी जाती है। आज, बॉलीवुड न केवल भारत में बल्कि दुनियाभर में मनोरंजन का एक प्रमुख केंद्र है।

9. विविध त्योहारों का देश भारत:

भारत को "त्योहारों का देश" कहा जाता है। यहाँ हर महीने किसी न किसी त्योहार को धूमधाम से मनाया जाता है। दिवाली, होली, गणेश चतुर्थी, क्रिसमस, ईद - ये कुछ ऐसे त्योहार हैं जो भारत की सांस्कृतिक विविधता को दर्शाते हैं। ये त्योहार न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक हैं, बल्कि परिवार और समुदाय के साथ मिलकर खुशियाँ मनाने का अवसर भी प्रदान करते हैं।

10. भारतीय आयुर्वेद: प्राचीन चिकित्सा पद्धति:

आयुर्वेद, हजारों साल पुरानी भारतीय चिकित्सा पद्धति, आज भी दुनियाभर में प्रचलित है। यह प्राकृतिक जड़ी-बूटियों और उपचारों के माध्यम से शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को संतुलित करने पर बल देती है। आयुर्वेद न केवल रोगों का इलाज करती है बल्कि स्वस्थ जीवनशैली अपनाने का भी मार्गदर्शन करती है।

11. विश्व विरासत स्थलों का खजाना भारत:

भारत अपनी समृद्ध इतिहास और संस्कृति के साक्षी के रूप में विश्व विरासत स्थलों की एक लंबी सूची रखता है। ताजमहल, आगरा का किला, हम्पी के खंडहर, गोवा के चर्च, काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान - ये कुछ ऐसे उदाहरण हैं जिन्हें यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया है। ये स्थल न केवल पर्यटन के लिए आकर्षक केंद्र हैं, बल्कि भारत की कला, स्थापत्य और इतिहास की गौरव गाथा भी गाते हैं।

12. भारत वन्यजीवों का विविधतापूर्ण आवास:

भारत वनस्पतियों और जीवों की विविधता के मामले में विश्व के अग्रणी देशों में से एक है। बाघ, हाथी, एक सींग वाला गैंडा, भारतीय चीता - ये कुछ ऐसे वन्यजीव हैं जो भारत के जंगलों में

पाए जाते हैं। भारत में राष्ट्रीय उद्यानों और अभ्यारण्यों का एक विस्तृत नेटवर्क है, जो वन्यजीव संरक्षण और जैव विविधता के संतुलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

13. भारत सर्वाधिक युवा आबादी वाला देश:

भारत दुनिया में सबसे अधिक युवा आबादी वाला देश है। आबादी के एक बड़े हिस्से के युवा होने का मतलब है कि भारत में अपार ऊर्जा और क्षमता है। यह देश के आर्थिक विकास और वैश्विक परिदृश्य में अपनी स्थिति को मजबूत करने का एक सुनहरा अवसर भी प्रस्तुत करता है।

14. आधुनिक भारत: विज्ञान और प्रौद्योगिकी में प्रगति:

भारत ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण प्रगति की है।

भारत को चांद पर सफलता मिल गई है. चंद्रयान-3 ने चांद की सतह पर उतर कर इतिहास रच दिया है. चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफलतापूर्वक उतरने वाला भारत पहला देश बन गया है.

भारत बायोटेक ने भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद् (ICMR) - राष्ट्रीय विषाणु विज्ञान संस्थान (NIV) के सहयोग से COVID-19 के लिए भारत की पहली वैक्सीन COVAXIN™ को सफलतापूर्वक विकसित किया ।

COVAXIN® - भारत की पहली स्वदेशी COVID-19 वैक्सीन

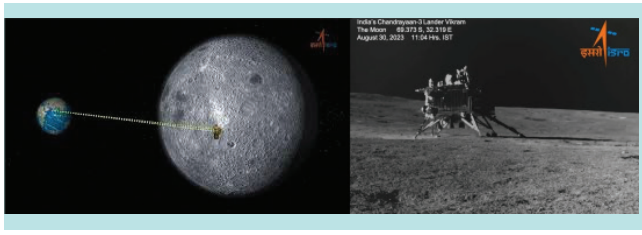

15. मेडिकल टूरिज्म

अगले कुछ महीनों में ही भारत दुनिया के नक्शे पर सबसे बड़ा मेडिकल टूरिज्म का हब बनने वाला है। मेडिकल वैल्यू ट्रैवल प्लान के तहत दुनिया के 61 देशों को चुना गया है, ताकि वहां के मरीज भारत में आकर बेहतरीन चिकित्सा सुविधा प्राप्त कर सकें।

16. मेक इन इंडिया - रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर होता भारत

मेक इन इंडिया के तहत रक्षा क्षेत्र को आत्मनिर्भर बनाने का काम शुरू हो गया | एक वक्त वो था जब देश में इस्तेमाल हो रही 65-70 फीसदी रक्षा सामग्री आयात की जा रही थी| आज तस्वीर बदल गई है | अब देश में केवल 35 फीसदी रक्षा सामान ही आयात हो रहा है, बाक़ी 65 फीसदी रक्षा सामान का भारत में ही निर्माण हो रहा है | इतना ही नहीं, अब हम भारत में बने रक्षा उपकरणों का एक्सपोर्ट भी कर रहे हैं | साल 2023-24 में भारत का डिफेंस एक्सपोर्ट 21,000 करोड़ रुपये को पार कर गया | आज भारत 100 से अधिक देशों को डिफेंस इक्विपमेंट एक्सपोर्ट कर रहा है |

ब्रह्मोस सुपरसोनिक मिसाइल, पिनाका रॉकेट सिस्टम, लाइट कॉमबैट एयरक्राफ्ट तेजस, लड़ाकू हेलीकॉप्टरों में चिनूक और हमला करने वाले अपाचे का सफल परीक्षण किया जा चुका है | फ्रांस में रक्षा क्षेत्र की प्रमुख कंपनी सफ्रान भारत में रक्षा इलेक्ट्रॉनिक्स इकाई लगाने की इच्छुक है।देश के प्रमुख राष्ट्रीय राजमार्ग से लडाकू विमानों की आपातकालीन लैंडिंग की सुविधा का उद्घाटन किया जा चुका है |खुद ही हथियार बनाने का लंबे समय से प्रतिक्षित भारत का सपना पूरा होता नजर आ रहा है | आत्मनिर्भर भारत का नारा उड़ान भर चुका है |

सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा
हम बुलबुले हैं इसकी, वो गुलसितां हमारा

◆ **अरविन्द कुमार नारंग**
प्रबन्धक (आई टी)
ऋण लेखा और रिटेल फाइनेंस विभाग,हडको

सपनों में रख आस्था

सपनों में रख आस्था कर्म तू किए जा,
त्याग से ना डर आलस परित्याग किए जा।

गलती कर ना घबरा,
गिरकर फिर हो जा खड़ा।

समस्याओं को रास्तों से निकाल दे,
चट्टान भी हो तो ठोकर से उछाल दे।

रख हिम्मत तुफानों से टकराने की,
जरूरत नहीं है किसी मुसीबत से घबराने की।

जो पाला है बस उसकी एक पागल की तरह चाहत कर,
करता रह कर्म मगर साथ में खुदा की इबादत भी कर।

फिर देख किस्मत क्या क्या रंग दिखलाएगी,
तुझको तेरी मंजिल मिल जाएगी, मंजिल मिल जाएगी।

◆ **शालिनी पाणिग्रही**
उप महाप्रबंधक (विधि)
डीएमआरसी विभाग

जाने कहां गए वो दिन

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध संस्कृतियों में से एक है। परंपराओं, रीति.रिवाजों, भाषाओं, त्योहारों, संगीत, नृत्य और स्थापत्य कला के माध्यम से यह संस्कृति हजारों वर्षों से फली-फूली है। किंतु वर्तमान वैश्वीकरण, आधुनिकता और पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव में भारतीय संस्कृति धीरे-धीरे लुप्त होने की कगार पर है।

समय की मांग के अनुसार परिवर्तन आवश्यक है, 19वीं शताब्दी से 20वीं शताब्दी में हम सभी ने शासन संचालन, सभ्यता, संस्कृति, शिक्षा, प्रौद्योगिकी जैसे विभिन्न क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन देखें हैं। कोरोना महामारी किसी से छिपी नहीं है, जिसने न जाने कितने लोगों की जानें ली, कितने बेरोजगार हुए और कितनो के घर उजड़ गए, इतना कुछ होने के बावजूद, हिंदुस्तान ने हार नहीं मानी और इस विपदा की घडी में हमारे वैज्ञानिकों ने दिनरात मेहनत कर कोरोना वैक्सीन का आविष्कार कर विश्व के कई जरुरतमंद देशों को वैक्सीन भेजकर आपदा की घड़ी में सहायता का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया। निःसंदेह विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्व के लिए वरदान हैं।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। मेरा गांव भी कृषि प्रधान है। पहले खेती पारंपरिक तरीकों से की जाती थी, सिंचाई के लिए कुओं से पानी निकालने के लिए रहट का उपयोग किया जाता था। आज बैलों और हल के स्थान पर ट्रैक्टर, हैरों और अन्य कृषि उपकरणों तथा सिंचाई के लिए ट्यूबवैल का उपयोग किया जा रहा है। गांव के कच्चे रास्तों पर अब पक्की

गलियां बन गई हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी तरक्की हुई है। जहां पहले गांव में प्राथमिक स्तर का स्कूल था आज वह 12वीं तक हो गया है। विद्यार्थियों के शारीरिक विकास हेतु स्कूल में खेल का मैदान भी है। पेयजल हेतु कुंओं के स्थान पर सरकारी जल व्यवस्था है। यूं तो गांव में पहले भी बिजली की व्यवस्था थी पर उसका फायदा कुछ धनाढ्य परिवार ही लेते थे। कितनों ही घरों में डिबिया और लालटेन का उपयोग किया जाता था। किंतु अब सभी घरों में बिजली की आपूर्ति है। ग्रामीणों को जल जीवन मिशन के तहत सरकार की 'हर घर नल से जल' योजना का लाभ मिल रहा है। मुझे याद है गांव में मोटा सा जन्म-मृत्यु पंजीकरण रजिस्टर होता था जिसमें नवजात और स्वर्गवासी लोगों का लेखाजोखा लिखा जाता था। मैंने भी इस कार्य में योगदान दिया था। आज ऐसा नहीं है, उन्नत प्रौद्योगिकी के कारण अब यह कार्य ऑनलाइन किया जा रहा है। गांव में आंगनवाड़ी केंद्र खुल गए हैं। बच्चों की संक्रमण से प्रतिरक्षा हेतु नियमित टीकाकरण किया जा रहा है। गाँव की तरक्की देखकर मन उल्लास से भर जाता है। इसके बावजूद, रोजगार की तलाश और जीवनशैली में सुधार हेतु ग्रामीण शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं।

पर क्या हमने कभी सोचा है कि इस उन्नति की दौड़ में कितना कुछ पीछे रह गया है? एक कोना ऐसा भी है जो पुरानी यादों में खो जाता है - जाने कहाँ गए वो दिन। आज से 50 साल पहले की वेशभूषा, खान-पान, रहन-सहन में कितना बदलाव आ गया है। धोती-कुर्ता, पायजामा, लुंगी-लहंगा, चोली-घाघरा, ओढ़नी, अंगोछा, पगड़ी-साफा, टोपी, खड़ाऊं, मोजड़ी, सूती या खादी के कपड़ों के स्थान पतलून, लुंगी, लोवर, लहंगा, कोट पेंट, एग्लो इंडियन पोशाक आ गई हैं। हलधर के लिए लूनी घी में तैयार चटनी, राबड़ी या मेहरी के साथ घर में हाथ से चक्की चलाकर पीसे गए आटे से गोचनी (गेहूं और चना का मिश्रित आटा) की रोटियों वाला कलेवा अब मानो खान-पान की दुनिया से गायब हो गया है। अतिथि सत्कार की बात करुं तो निश्चल प्रेम और सम्मान का वर्णन शब्दों में करना कठिन होगा। जमीन पर पोंछा लगाकर गंगाजल की बूंदो से स्वच्छ कर बीजने से हवा करते हुए तांबे के बर्तन में भोजन और गंगासागर से जलपान करवाया जाता था। आज जूते पहनकर खड़े-खड़े भोजन किया जाता है। सादा पौष्टिक भोजन छोड़कर फास्ट फूड ज्यादा पसंद किया जा रहा है। दिनभर खेत खलिहानों में काम की थकावट दूर करने के लिए बुजुर्ग गांव की चैपाल पर हुक्का पीते थे और हंसी मज़ाक करते थे। तीज-त्यौहारों पर मल्हार, रागिनी, लोकगीत गाए जाते थे। कुछ समय पहले तक रेडियो और टेपरिकॉर्डर के स्थान पर ब्लैक एंड व्हाइट टीवी थे। अब बड़े-बड़े रंगीन टेलीविज़न और सीडी प्लेयर आ गए हैं। अब ऐसा यदा-कदा ही दिखाई देता है। पिछड़ा क्षेत्र होने के नाते गांव में शिक्षा के प्रति उत्साह बहुत कम था, फिर भी स्कूल के मास्टर जी जब गांव का दौरा करने आते थे, तो उनके सम्मान में बच्चे, बूढ़े और जवान सभी हाथ जोड़ कर नमस्ते अथवा चरण स्पर्श करते थे। स्कूल में गुरु-शिष्य परंपरा विद्यमान थी। अब यह नदारद हैं।

आज अंग्रेजी को ज्यादा महत्व दिया जा रहा है और हिंदुस्तान की पहचान हिंदी पीछे छूटती जा रही है। अब गांवों में भी नमस्ते, राम-राम, राधे-राधे का स्थान हॉय, हैलो ने और बापू का डैड ने ले लिया है और इस पर गर्व करते हैं। अन्य भाषाओं का ज्ञान होना अच्छी बात है और सभी भाषाओं का सम्मान भी करना चाहिए। पर क्या इसका ये अर्थ है कि हिंदी अथवा

अन्य भाषा बोलने वाले किसी से कम हैं, हरगिज़ नहीं। क्या अंग्रेजी अपनाने की अंधाधुंध दौड़ में हम अपनी मातृभाषा और देहाती बोली की बलि दे दें? वास्तव में, हम अपनी सभ्यता और संस्कृति को भूल रहे हैं। हमारे देश की संस्कृति और सभ्यता तो विश्व में प्राचीनतम है। आज विश्व के कई देशों में भारतीय संस्कृति को बढ़ावा दिया जा रहा है। हमें इसका संरक्षण करना चाहिए।

भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता इसकी विविधता में एकता है। यहां अनेक धर्म, भाषाएं और परंपराएं हैं। ऋग्वेद, उपनिषद, महाभारत, रामायण जैसे ग्रंथ भारतीय जीवन की मूल भावना को दर्शाते हैं। भारतीय योग, आयुर्वेद, वास्तुकला और शास्त्रीय संगीत जैसी धरोहरें दुनियाभर में प्रसिद्ध हैं। पर विडंबना देखिए, हममें से कितने ऐसे हैं जो रामायण की चौपाईयों का नित-प्रतिदिन पाठ करते हैं। समझ में आता है इस भागदौड़ और एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ में संभवतः कुछ लोग ऐसा नहीं सोचते हों, पर क्या इनमें हमारे नैतिक मूल्यों को दर्शाने की शिक्षा प्रतिबिंबित नहीं होती है।

आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस ने तो कमाल ही कर दिया है। मुझें तो ऐसा लगता है यह किसी रोबोट से कम नहीं है जिसमें अदभुत प्रोग्रामिंग की गई हो। स्कूलो में शिक्षण पद्धति देखिए, बस्ते के बोझ से छोटे बच्चों की क्या दशा होती होगी, इससे हम सभी परिचित हैं। इसमें भी आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस की भूमिका जल्दी ही दिखाई देगी। टाइपराइटर के स्थान पर मोबाइल फोन, कंप्यूटर और लेपटॉप का आगाज़ तकनीक और प्रौद्योगिकी के विकास से संभव हुआ है। साथ ही वायरस के खतरनाक जोखिम भी अपनी भूमिका निभाने में किसी से पीछे नहीं हैं और आपके डेटा की चोरी करने में सक्रिय हैं। इसके बावजूद, आज दुनियाभर में भारत के आईटी प्रोफेशनल की तूती बोलती है।

मैंने अपने पूर्वजों के बहुत से स्मृति चिह्न आज भी संजोकर रखे हैं। नई पीढ़ी के लिए यह आश्चर्य से कम नहीं है क्योंकि उन्हें इनके विषय में जानकारी नहीं दी गई है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हमें लुप्तप्राय भारतीय विरासत, संस्कृति और परंपराओं की रक्षा करनी है।

भारतीय संस्कृति सिर्फ हमारी धरोहर नहीं बल्कि हमारी पहचान है। आयुर्वेद और वेदों की दृष्टि से दुनिया भारत का लोहा मानती है। यह हमारे ऋषि-मुनियों ने सिद्ध किया है। शौर्य, त्याग, बलिदान ओर सेवा भाव में हम किसी से पीछे नहीं हैं। हमें अपनी परंपराओं, मूल्यों और संस्कारों को बचाने के लिए सामूहिक प्रयास करना होगा। आधुनिकता का स्वागत करते हुए अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहना ही सच्ची प्रगति है। 'पधारो म्हारे देस' ये चंद शब्द दुनियाभर में राजस्थानी लोकगीत की धुन बजा रहे हैं। यही तो है संस्कृति संरक्षण। इसी प्रकार हमें भारत की प्राचीनतम संस्कृति को पुनः जीवित करना होगा। यदि समय रहते पयर्टन एवं संस्कृति मंत्रालय ने भारतीय संस्कृति और विरासत के संरक्षण एवं जीवंत करने के लिए कदम नहीं उठाये, तो हमारी यह अमूल्य धरोहर आने वाली पीढ़ियों के लिए केवल इतिहास के पन्नों में सिमटकर रह जाएगी।

◆ **महाराम तंवर,**
पूर्व परामर्शदाता, हडको

बूँद – बूँद सों घट भरे

स्वच्छ शरीर और वातावरण में भगवान का निवास है - यह एक पुरानी कहावत है, जिससे स्वच्छता का महत्व पता चलता है। हम अपने मंदिरों, पूजा-स्थलों, आश्रमों आदि को स्वच्छ बनाते हैं। यहाँ तक कि बिना स्नान किए मंदिर जाना भी निषेध माना जाता है, परंतु अपने घर व आसपास इसी स्वच्छता के महत्व को भूल जाते हैं। जब हम दिवाली पर अपने घरों को साफ करते हैं, तो हर दिन दिवाली क्यों नहीं हो सकता। जिस गंगा को हरहर गंगे कहते हैं, तो उसी को गंदा करने में ज़रा भी संकोच नहीं करते। भगवान तो कण-कण में हैं – इसे मानें तो हमें हर स्थान को स्वच्छ रखना है। एक लोकप्रिय चलचित्र 'ओह माई गॉड' में भी यही दर्शाया गया है कि भगवान कण-कण में हैं।

घर हो चाहे, बाग बगीचा,
वन-उपवन हो या हो गलीचा।
रखें साफ-सफाई चारों ओर,
ताकि फैले खुशियाँ सब छोर।

स्वच्छता न केवल शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य के लिए जरुरी है, बल्कि यह किसी देश की तरक्की और लोगों की प्रगतिशीलता का भी प्रतीक है। यदि इंसान केवल अपना घर-आँगन और उसके आस-पास का वातावरण भी सुधार लें तो देश अपने आप स्वच्छ हो जाएगा। इसी क्रम में हमारे कार्यालय हडको में 'बेस्ट डेस्क कम्पीटीशन' अभियान चलाया गया था जिसे एक सर्वश्रेष्ठ रुम, केबिन, वर्कस्टेशन की श्रेणी में बांटा गया था। इसके साथ ही पांच कन्सोलेशन पुरस्कार भी रखे गए थे। इस तरह की प्रतिस्पर्धाओं से सभी कार्मिकों के अंदर जोश था कि वे अपने वर्क स्टेशनों को साफ रखेंगें । अत: कार्यालय द्वारा यह एक प्रशंसनीय प्रयास था।

हम भारतवासियों का यह कर्तव्य बनता है कि हम भारत को साफ व स्वच्छ बनाएँ । स्वच्छ भारत अभियान तो हम नागरिकों के लिए अपना देश स्वच्छ बनाने का तरीका है, जिससे लोग भी इसमें अपना योगदान दें। अगर हम सब एक साथ मिलकर काम करेंगें, तो वह दिन दूर नहीं है, जब भारत बिल्कुल स्वच्छ होगा।

स्वच्छता को लेकर गाँधी जी के विचार -

1) महात्मा गाँधी ने कहा था कि राजनीतिक स्वतंत्रता से ज्यादा जरुरी स्वच्छता है।

2) यदि कोई व्यक्ति स्वच्छ नहीं है तो वह स्वस्थ नहीं रह सकता।

3) बेहतर साफ-सफाई से ही भारत के गाँवों को आदर्श बनाया जा सकता है ।

4) शौचालय को अपने ड्राइंग रूम की तरह साफ रखना जरुरी है।

5) नदियों को साफ रखकर हम अपनी सभ्यता को जिन्दा रख सकते हैं।

6) अपने अंदर की स्वच्छता पहली चीज़ है जिसे पढ़ाया जाना चाहिए बाकी बातें इसके बाद होनी चाहिए।

7) हर किसी को अपना कूड़ा खुद साफ करना चाहिए।

8) मैं किसी को गंदे पैर के साथ अपने मन से नहीं गुजरने दूंगा।

9) अपनी गलती को स्वीकारना झाड़ू लगाने के समान है जो सतह को चमकदार और साफ कर देता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 2 अक्टूबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान शुरु किया और इसके सफल कार्यान्वयन हेतु भारत के सभी नागरिकों से इस अभियान से जुड़ने की अपील की। स्वच्छ भारत अभियान का उद्देश्य केवल आसपास की सफाई करना ही नहीं है अपितु नागरिकों की सहभागिता से अधिक-से अधिक पेड़ लगाना, कचरा मुक्त वातावरण बनाना, शौचालय की सुविधा उपलब्ध कराकर एक स्वच्छ भारत का निर्माण करना है।

देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए स्वच्छ भारत का निर्माण करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। अस्वच्छ भारत की तस्वीरें भारतीयों के लिए अक्सर शर्मिंदगी की वजह बन जाती है इसलिए स्वच्छ भारत के निर्माण एवं देश की छवि सुधारने का यह सही समय एवं अवसर है। यह अभियान न केवल नागरिकों को स्वच्छता संबंधी आदतें अपनाने बल्कि हमारे देश छवि को स्वच्छता के लिए तत्परता से काम कर रहे देश के रूप में बनाने में भी मदद करेगा।

स्वच्छ भारत होगा गौरवशाली,
सबके लिए लायेगा खुशियां निराली।
देश का गौरव तभी बढ़ेगा,
जब चारों ओर स्वच्छता अभियान चलेगा।

◆ **पूर्णिमा कोहलीवाल**
वरि. प्रबंधक (सचि.-रा.भा.)

पिता

गांव में मैं बूढ़े पिता को देख अक्सर मैं सिहर/डर जाता हूं।
सोचता हूं कल को ये नहीं रहें तो, ये सोच मैं बिखर जाता हूं।

कौन डांटेगा, समझाएगा मुझे यह काम कर, ये काम मत कर, कौन कहेगा मुझसे?
ये सोच नयन नम कर लेता हूं। बूढ़े पिता को देख अक्सर मैं सिहर/डर जाता हूं।

अभी मैं बच्चा हूँ, अक्ल का अभी भी कच्चा हूं,
क्योंकि अभी भी घर जाता हूं तो दो बूढ़ी आँखें मुझे तकती हैं।

बूढ़े ललाट पर लकीरें देख सोचता हूं।
बूढ़े पिता को देख अक्सर मैं सिहर/डर जाता हूं।

जब जब थका हूं, टूटा हूं, बिखरा हूं।
तब एक कमजोर वृद्ध आवाज कानों में फुसफुसाती है!

रुक मत, टूट मत मैं हूं ना, ये आवाज किसी ओर की नहीं, मेरे पिता की होती है!
सोचता हूं, क्या होगा जब ये आवाज न होगी? ये सोच आंसू गिरा देता हूं।

बूढ़े पिता को देख अक्सर मैं सिहर/डर जाता हूं।

◆ **कैलास चन्द मीणा**
परिवहन सहायक

दुर्गोत्सव

प्रबल पराक्रमशाली महिषासुर का वध करने के लिए सभी देवताओं के शक्ति की तेज से एक अपूर्व नारी की सृष्टि होती है। सभी देवता-गण मिलकर निज अस्त्र और अलंकार से सुसज्जित करते हैं।

" यह और कोई नही माँ दुर्गा हैं ".

माँ दुर्गा ही महिषासुर को युद्ध के लिए आह्वान करती हैं और प्रचंड युद्ध के बाद माँ दुर्गा त्रिशूल से महिषासुर का वध करती हैं। माँ दुर्गा को सिंहवाहिनी भी कहा जाता है क्योंकि उनका वाहन सिंह है।

माँ दुर्गा नव दुर्गा के रूप से पूजी जाती हैं। यह नाम है :

शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंदामाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री।

दुर्गा पूजा एक ऐसा त्योहार है जो ब्रह्माण्ड में शक्ति के रूप में महिला शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है| यह हिंदु धर्म के बीच मनाया जाने वाला एक प्रसिद्ध भारतीय त्योहार है। इन दिनों लोग दिव्य माँ दुर्गा के सम्मान और उनकी उपासना करने के लिए दुर्गा पूजा का त्योहार मनाते हैं। यह त्योहार बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है, क्योंकि यह राक्षस महिषासुर

पर देवी दुर्गा की विजय का स्मरण करता है। यह त्योहार हर वर्ष सितंबर-अक्टूबर के महीने में मनाया जाता है।

प्रति वर्ष की तरह यह वर्ष भी षष्टी से दशमी दिन तक दुर्गोत्सव बहुत धूमधाम से पूरे भारत वर्ष में हर्ष उल्लास के साथ मनाया गया। विभिन्न पंडाल में माँ दुर्गा की विशाल और सुंदर मूर्ति स्थापित की गयी और फिर पारंपरिक अनुसार षष्टी के दिन दुर्गा देवी का बोधन होने के बाद प्राण प्रतिष्ठा किया गया। हर बार की तरह इस बार भी विभिन्न पंडालों में स्थापित सर्वश्रेष्ट दुर्गा देवी मूर्ति की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और उस विशिष्ट प्रतियोगिता में चित्तरंजन पार्क के ब्लाक "के" की दुर्गा प्रतिमा को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है और पंडालों की प्रतियोगिता में चित्तरंजन पार्क के ही "पॉकेट 40" को 2024 में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है।

पश्चिम बंगाल, में सबसे अधिक दुर्गोत्सव भव्य रूप से मनाया जाता है। वहां की मूर्तियाँ और पंडाल के लाइटिंग सबसे अनोखी होती हैं, मानो कि जैसे माँ दुर्गा की प्रतिमा बोल रही हो। पंडाल के साथ साथ भोजन उत्सव का भी बुहत बड़े पैमानों में आयोजन किया जाता है। भारतवर्ष के विभिन्न राज्य भी इस उत्सव में हिस्सा लेते हैं| इसमें धार्मिक उत्साह के साथ-साथ संगीत, नृत्य और पारंपरिक अनुष्ठानों समेत सांस्कृतिक प्रदर्शन भी शामिल हैं। यह आयोजन समुदायों को एकजुट करता है और भारत की समृद्ध विरासत को प्रदर्शित करता है| इस पूजा के दौरान सारे पंडालों में तरह-तरह की प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया जाता है, और ज्यादातर लोग इन प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं| दुर्गा देवी के दर्शन के लिए लाखों की तादाद में भीड़ इकट्ठी होती है| प्रतिदिन संध्या के समय में माँ दुर्गा की नियमित रूप से निष्ठापूर्वक आरती की जाती हैं जो की बहुत ही भव्य और सुंदर होती हैं। माँ दुर्गा की आरती देखने के लिए हजारों की तादाद में भीड़ इकट्ठी होती है जिसमे कि इन झाकियों का एक बहुत बड़ा योगदान होता है| पूरे भारतवर्ष में पश्चिम बंगाल से झाकियों को आमंत्रण किया जाता है|

दुर्गा पूजा में झाकियों का एक बहुत ही महत्यपूर्ण योगदान होता है| और फिर देखते ही देखते दशमी का दिन आ जाता है जो कि माँ का विदाई का दिन होता है| दशमी के दिन सुबह प्रतिमा वरण के बाद सिंदूर खेला जाता है| सिन्दूर, पान, दुर्ब, धान और मिठाई यह सब वरन के सामग्री हैं| उसके बाद संध्या के समय में प्रतिमा को विसर्जित किया जाता है जिसके बाद माँ दुर्गा अपने दिव्य निवास पर लौटती हैं, और उसके बाद विजय दशमी मनाया जाता है| पंडाल एकदम सूना सूना हो जाता है|

एक वर्ष माँ दुर्गा की आगमन की प्रतीक्षा की जाती है कि "माँ तुम फिर कब आओगी"?

◆ **संगीता कांजीलाल**
वरिष्ठ प्रबंधक (सचि.)

वृक्षों का मनुष्य जीवन में महत्व

पृथ्वी पर वृक्षों का होना उतना ही जरूरी है जितना मनुष्य के अंदर आत्मा का होना । जिस प्रकार वृक्षों के बिना जीवन संभव नहीं उसी प्रकार आत्मा के बिना मनुष्य मृत के समान है। वृक्षों का होना, मनुष्य और पशुओं दोनों के लिए बहुत ही लाभकारी है वृक्ष वातारण में फैली कार्बन डाइऑक्साइड को अपने अंदर लेकर सभी प्राणियों के लिए ऑक्सीजन छोड़ते हैं ।

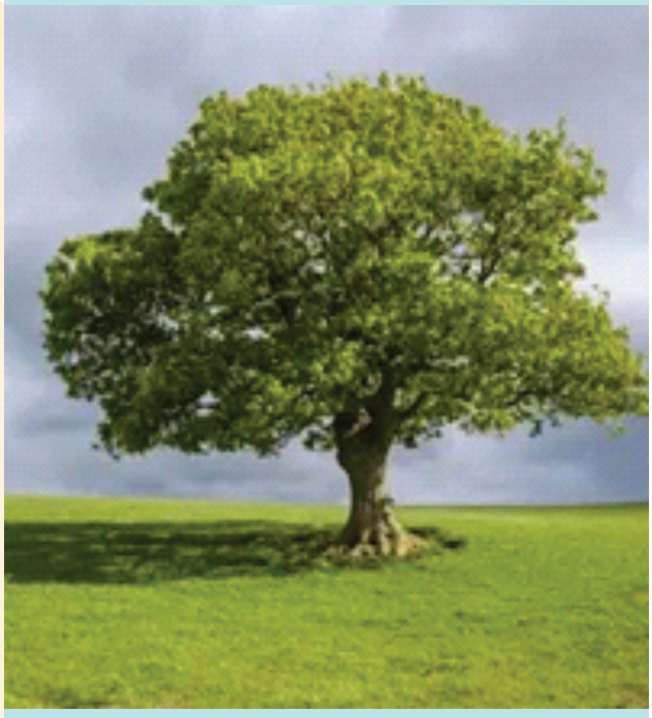

जीवन निर्वाह के लिए वृक्षों से ही हमें अनाज, फल और सब्जियां मिलती हैं । वृक्षों की सूखी टहनियों को गांव कस्बों में ईंधन के रूप में प्रयोग किया जाता है । सूखी टहनियों और लकड़ियों से गोशालाओं के छप्पर बनाए जाते हैं और पशुओं के नीचे बिछाने के लिए भी इन टहनियों/झाड़ियों का प्रगोग किया जाता है । जिससे पशुओं को गर्मियों में ठंडक और सर्दियों में गरमाहट मिलती है । जहाँ वृक्ष अधिक होते हैं वहाँ की वायु हमेशा शुद्ध होती है । वृक्ष पक्षियों को आश्रय देते हैं पक्षी अपना घोंसला बनाकर अपने बच्चों को रखते हैं । वृक्ष शरणार्थियों को छाया प्रदान करते हैं ।

भारतीय संस्कृति में पेड़-पौधों को पूजा जाता है । विभिन्न वृक्षों में कई देवताओं का वास माने जाने के कारण हिंदू धर्म में

लगभग सभी मंदिरों में कोई न कोई वृक्ष अवश्य लगा होता है जैसे कि पीपल, वट, केले, आम का वृक्ष तथा तुलसी का पौधा आदि। जो व्यक्ति मंदिर में जाकर पूजा-अर्चना करते हैं वह पूरी श्रद्धा से वृक्षों की पूजा करने के उपरांत वृक्षों में जल चढ़ाते हैं। पेड़-पौधों की पूजा-अर्चना के साथ-साथ प्राचीन काल से इनका उपयोग औषधि के रूप में किया जा रहा है । पेड़-पौधों के जड़, तना, पत्तियां, फूल-फल, बीज और इनकी छाल का उपयोग भी मनुष्यों के रोगो के उपचार के लिए किया जा रहा है । त्रेतायुग में युद्ध के समय जब लक्ष्मण घायल होकर मूर्छित हो गए थे तब हनुमान उनको ठीक करने के लिए संजीवनी बूटी लेकर आए थे । संजीवनी बूटी लक्ष्मण को सुंघाते ही उनकी मूर्छा टूट गई ।

पृथ्वी पर वृक्ष अधिक होंगे तो वर्षा भी अधिक होगी जिससे फसलों आदि को पानी मिलेगा वर्षा के बिना खेत-खलिहान

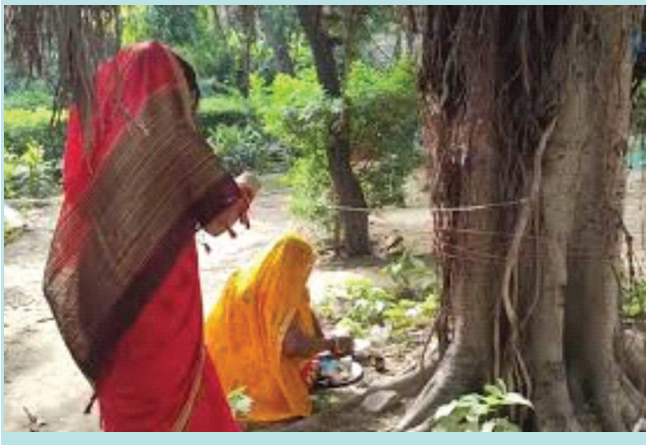

बंजर होने का खतरा बना रहता है । पर्वतीय क्षेत्रों में पेड़ अपनी जड़ों से पहाड़ों को जकड़े रखते हैं ताकि वह अपनी जगह पर स्थित रहे ।

रेशम भी एक प्रकार के कीड़े से मिलता है, जो शहतूत के पेड़ पर होते हैं । रेशम के कीड़े शहतूत के पत्तों पर अपना लार छोड़कर रेशम बनाते हैं उस रेशे से ही रेशमी साड़ियां बनाई जाती हैं जिन्हें महिलाएं पहनना बहुत पसंद करती हैं ।

पृथ्वी हरी-भरी होगी तो हम भी हमेशा स्वस्थ और प्रसन्नचित रहेंगे । आपने देखा होगा कि जब कभी हम हाईवे से जाते हैं तो सड़क के दोनों किनाकों पर गाँवों के हरे-भरे खेत दूर-दूर तक दिखाई देते हैं, जिसे देखकर हमारा मन बहुत प्रफुल्लित होता है ।

पृथ्वी पर अधिक वृक्ष होने से ही पृथ्वी सुरक्षित रह सकती है। परंतु आज के युग मनुष्य अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए इन्हें काट रहा है । वृक्षों को काटकर अधिक से अधिक

बहुमंजिला इमारतें बनाई जा रही हैं । मकानों के लिए वृक्षों से प्राप्त लकड़ियों से फर्नीचर बनाकर अपने घरों को सजा रहा है। जो हमारी पृथ्वी और वातावरण के लिए हानिकारक है। हमें पृथ्वी को बचाने के लिए अधिक से अधिक वृक्षारोपण करना होगा। ताकि हम सब मिलकर प्रकृति को बचा सके। मनुष्य यदि अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए इन वृक्षों को काट रहा है तो मनुष्यों को भी इनकी कमी पूरी करने के लिए वृक्षारोपण का प्रयास करना होगा। यदि हमारे घर आंगन में वृक्ष होगा तो हमें शुद्ध ऑक्सीजन और वायु मिलेगी जिससे हम सब स्वस्थ रहेंगे । हम सबको मिलकर यह संकल्प लेना चाहिए कि अधिक से अधिक वृक्ष लगाए ताकि हमारे साथ-साथ आने वाली पीढ़ी को भी शुद्ध वातावरण मिल सके।

◆ **डौली जोशी**
प्रबंधक (आईटी)
राजभाषा अनुभाग

हरित इलैक्ट्रॉनिक्स : मानव के सम्मुख एक आशा भरी सोच और पहल

विश्व में सभी प्राणियों में मानव ने विशेष बुद्धि कौशल की क्षमता का शनैः - शनैः विकास किया और वह अन्य सभी प्राणियों से श्रेष्ठ और सशक्त जीव के रूप में उभरा । मानव बुद्धि कौशल और उसकी असीम क्षमता का चमत्कार हम हर दिन नित नए आविष्कारों और अविष्कृत वस्तुओं के रूप देखते हैं। मुख्यतः 20वीं सदी के प्रारंभ से आज तक मानव जीवन विज्ञान की खोजों से बहुत प्रकार के लाभ और सुविधाओं का भरपूर आनंद उठा रहा है । परंतु अब 21वीं सदी में हमारी वैज्ञानिक उपलब्धियों के वे पक्ष उभरकर सम्मुख आ रहे हैं जिनसे हमें चुनौती मिल रही है। सबसे बड़ी समस्या प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों के क्षरण तथा उनके पूर्णतः विनाश का दशा का प्रस्तुत होना है । जलवायु परिवर्तन की दशाएँ उपस्थित हो गई हैं।

वैज्ञानिक समुदाय अपनी चेतावानियों के अंतिम छोर पर पहुँच चुके हैं अब " पृथ्वी सम्मेलन" और ' संधारणीय विकास और संसाधन उपयोग" की संकल्पना को पूर्णता तक पहुँचने के लिए 'संधारणीय विकास लक्ष्य'(Sustainable Development Goals) निश्चित कर दिए गए हैं । पृथ्वी ग्रह तीव्रता से गर्म हो रहा है 'वैश्विक तापमान वृद्धि' के नित नए बढ़ते आंकडे मानव जाति के अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न लगा रहे हैं। पृथ्वी के तेजी से गर्म होने की गति को रोकना संयुक्त राष्ट्र और पर्यावरण संरक्षण में लगी उसकी संस्थाओं का प्रमुख और प्रधान ध्येय बन गया है । कार्बन उत्सर्जन(carbon emission) और ऊर्जा खपत(energy consumption) की दर में न्यूनता लाना आज की सबसे बड़ी समस्या है। महासागरों के जल - स्तर में तेजी से वृद्धि हो रही है और उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों में जमी अरबों टन बर्फ पिघल रही है और वहाँ सदियों से दबे विषाणु तथा खतरनाक सूक्ष्मजीवी मानव जाति के सामने भयंकर कहर उपस्थित कर सकने की स्थिति में आ जाएंगे ।

मानव ने कभी हारना नहीं सीखा है, वह चुनौतियों से लड़ता आया है परंतु इस बार कुछ अलग ही परिदृश्य है । उसकी अपनी खुद की कारगुजारियां स्वयं पर भारी पड़ रही हैं। वह प्रकृति के विनाश और सभ्यता के विकास के मध्य संतुलन नहीं बना पा रहा है। प्रकृति का विकल्प नहीं है; संतुलन की आवश्यकता है और विकास की एक सीमा का होना अश्वयंभावी स्थिति है । आधुनिक मानव 'green' अर्थात् प्रकृति अनुकूल विधियों(technics) और व्यवहारों (practices) के माध्यम से प्रकृति और विकास के संतुलन को साधना चाहता है। वह आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वस्थ और संसाधनों से पूर्ण पृथ्वी को संजोना चाहता है । इस दिशा में अभी वह उन उपायों पर टिका है जो कम ऊर्जा खपत और कम कार्बन उत्सर्जन की दिशा में बढ़ती हैं।

हरित इलैक्ट्रॉनिक्स (Green Electronics) में लैपटॉप, मोबाइल, कम्प्यूटर, डिजिटल डायरी, गेमिंग कंसोल, टीवी, मॉनिटर, टैबलेट्स, फिटनैस उपकरणों की संपूर्ण श्रृंखलाएँ, संचार के अन्य सभी सहायक उपकरण एवं साधन, घड़ियाँ, खिलौने, रेडियो, चिकित्सा क्षेत्र के उपकरण आदि उत्पादों को पर्यावरण अनुकूल विधियों से कम ऊर्जा खपत तथा न्यूनतम कचरा रूप में परिवर्तित होने की अवस्था तक लाना है । इनके उत्पादन में न्यून ऊर्जा दोहन तथा कार्बन उत्सर्जन भी न्यूनतम स्तर पर हो । पुनः प्रयोग (Re use) और पुनर्चक्रण (Recycle) तथा कम करना (Reduce) इन तीन प्रमुख उपायों के अपनाने से अनवीकरणीय (non renewable

resources) प्राकृतिक संसाधनों के अविवेकपूर्ण दोहन के बचा जा सकता है। इलैक्ट्रॉनिक्स के उपकरणों का कम से कम कचरे/ अवशिष्ट (waste) में तब्दील करना, उपकरणों का पुनः उपयोग करना तथा उपकरणों में प्रयुक्त बहुमूल्य धातुओं और संसाधनों का पुनर्चक्रण कर उपयोग अनुकूल बनाना ।

अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, इंग्लैंड , आस्ट्रेलिया जैसे संपन्न राष्ट्र स्वयं के उत्पादित और पुराने इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों का कचरा गरीब और पिछडे राष्ट्रों की भूमि में निस्तारण कर देते हैं परंतु इन वस्तुओं को ई - कचरा (E-waste) के रूप फेंक देना अनेक गंभीर स्वास्थ्य के खतरों को खड़ा करता है। उन गरीब और पिछड़े राष्ट्रों की मजबूरी का अनैतिक लाभ अनुचित और मानव अधिकार तथा गरिमा के प्रतिकूल है। इनमें प्रयुक्त पदार्थ पर्यावरण में भयंकर दूषण की स्थिति पैदा करते हैं वायु, जल और मृदा प्रदूषण की भयंकर और भयावह दशाएँ खड़ी हो जाती हैं। इनमें प्रयुक्त प्लास्टिक और शीशा (lead), एल्यूमिनियम, पारा (mercury), कैडमियम cadmium) गिलट (nickel) आदि हानिकारक धातुएँ वातावरण में मिल जाती हैं। इसके कारण कैसर, गर्भस्थ शिशु मृत्यु, प्रजनन, श्वास और त्वचा रोगों की गंभीर स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ खड़ी हो जाती हैं। हमारा मानना है कि सरकारों द्वारा केवल ई - अवशिष्ट के नियंत्रण और प्रबंधन के संबंध में कानून मात्र बनाने से कर्तव्य की पूर्ति नहीं होती है। संपूर्ण गंभीरता से इसके उत्पादन के स्त्रोतों को देखना होगा पर साथ ही वैज्ञानिक समुदाय को भी युद्ध स्तर पर पर्यावरण मित्र आविष्कारों और वस्तुओं की खोजों को ध्येय बनाना है । मनुष्य की संपूर्ण गतिविधियां पृथ्वी ग्रह की पारिस्थितिकीय तंत्र (Ecological system) और जैव मंडल (Bio- sphere) की स्वस्थ सीमाओं के भीतर रहनी ही चाहिए । वैज्ञानिक जगत के सम्मुख एक गंभीरतम संकट - पृथ्वी विनाश - मुँह खोले खड़ा है । हम वैज्ञानिक जगत की मेधा और बुलंद साहस के प्रति आशान्वित हो सकते हैं परंतु सरकारों को दृढ इच्छा शक्ति और मजबूत निर्णय तथा सशक्त प्रोत्साहन प्रदर्शन करना पड़ेगा ।

◆ **डॉ. चंद्रमोहन सिंह रावत**
एसोसिएट प्रो. हिन्दी विभाग
श्री वेंकटेश्वर कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

महाकुंभ – आस्था और व्यवस्था का संगम

12 कुंभ के बाद देश में महाकुंभ का आयोजन उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में किया जा रहा हैं। महाकुंभ का आयोजन 144 वर्षों के बाद होता है, इसलिए हम ये कह सकते ही कि हम बहुत की भाग्यशाली है क्योंकि इसका आयोजन हमारे जीवनकाल में हो रहा है। आस्था के इस पर्व में देश से ही नहीं बल्कि विदेशों से भी बहुत श्रद्धालु आते है और आस्था की डुबकी संगम में लगाते है।

इस धार्मिक आयोजन में शाही स्नान का विशेष महत्व है, जिसे अमृत स्नान भी कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि शाही स्नान के दौरान पवित्र नदियों में डुबकी लगाने से पापों का प्रायश्चित होता है और पुण्य प्राप्ति होती है। अमृत स्नान लोगों को आध्यात्मिकता के करीब लाता है।

इस अवसर पर देश के 13 अखाड़ों के साधु संत आते है और भक्तों को अपना आशीर्वाद देते है, कुंभ मेले का मुख्य आकर्षण नागा साधु होते है, नागा साधु मुख्य रुप से हिमालय की गुफाओं से प्रयागराज आते है, इन नागा साधुओं के लिए कहा जाता है, आज तक ये कोई नहीं जान पाया कि ये साधु कहां से आते है कुंभ के बाद कहां चले जाते है। इनके अतिरिक्त महामंडलेश्वर भी यहां आम जनता के बीच में आकर दर्शन देते है और अपना आशीर्वाद प्रदान करते है।

इस बार का महाकुंभ इसलिए भी खास है कि राज्य सरकार ने अपने बजट का एक बड़ा हिस्सा कुम्भ के लिए आरक्षित किया है। लगभग 7500 करोड़ रुपए कुंभ मेले के आयोजन के लिए राज्य सरकार ने दिए है। महाकुम्भ का मेला दुनिया का सबसे बड़ा आयोजन है जिसमें श्रद्धालुओं की भीड़ को अन्तिरक्ष से भी देखा जा सकता है, महाकुम्भ मेले का हर कोना अपने आप में अनोखा है। महाकुंभ 2025 में दुनियाभर से 40-45 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं के शामिल होने की उम्मीद है।

प्रयागराज का महाकुंभ मेला करीब 4000 हेक्टेयर भूमि पर फैला है और इसे 25 सेक्टरों में बांटा गया है। उत्तर प्रदेश शासन ने महाकुंभ मेला परिक्षेत्र को राज्य का 76 जिला घोषित किया है। महाकुंभ के लिए प्रशासन ने संगम तट पर कुल 42 घाट तैयार किए हैं। इनमें 10 पक्के घाट हैं, जबकि बाकी 31 घाट अस्थायी हैं। संगम घाट प्रयागराज का सबसे प्रमुख और महत्वपूर्ण घाट है, यहां गंगा, यमुना और सरस्वती (अदृश्य)- तीन पवित्र नदियों का संगम होता है, इसलिए इसे त्रिवेणी घाट के नाम से भी जानते हैं।

किसी विपरीत परिस्थिति में साधु-संतों और श्रद्धालुओं को त्वरित चिकित्सा सुविधाए प्रदान करने के लिए प्रत्येक

सेक्टर में एक सेंट्रल हॉस्पिटल के अलावा 20 बिस्तरों वाला एक अस्पताल भी बनाया गया है। स्नान के दौरान किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए सभी घाटों पर 300 से अधिक गोताखोरों को तैनात किया गया है, कई वाटर एम्बुलेंस भी तैनात की गई है। महाकुंभ में एनएसजी कमांडो और यूपी पुलिस के जवानों की तैनाती के साथ 7 स्तरीय सुरक्षा व्यवस्था की गई है।

इसके अतिरिक्त महाकुंभ मेले में भीड़ के प्रभावी प्रबंधन और निगरानी के लिए एआई संचालित कैमरे, ड्रोन और एंटी-ड्रोन सिस्टम लगाए गए हैं। महाकुंभ में संदिग्ध लोगों पर नजर रखने के लिए स्पॉटरों के अलावा सिविल पुलिस के 15 हजार जवानों को तैनात किया गया है। मेला क्षेत्र के एंट्री पॉइंट्स की निगरानी और नियंत्रण के लिए 7 प्रमुख मार्गों पर 102 चौकियां स्थापित की गई हैं। संगम और उसके आसपास के जलमार्गों की सुरक्षा करने और निगरानी के लिए 113 ड्रोन तैनात किए गए हैं।

भारतीय रेलवे ने महाकुंभ के लिए 3000 स्पेशल ट्रेनें शुरु की हैं। ये ट्रेनें 13 हजार से अधिक फेरे लगाएंगी। प्रयागराज जंक्शन के अलावा 8 सब-स्टेशन बनाए गए। ये सब स्टेशन रेलवे के तीन जोन – उत्तर मध्य रेलवे, उत्तर रेलवे और पूर्वोत्तर रेलवे में बांटे गए हैं। कानपुर, दीनदयाल उपाध्याय, सतना, झांसी रुट की ट्रेनें प्रयागराज जंक्शन पर रुकेंगी और वापसी के लिए यहीं से चलेंगी। प्रमुख स्नान दिवसों के लिए महाकुंभ आने वाली स्पेशल ट्रेनों को भी नैनी और छिवकी जंक्शन पर रोका जाएगा ताकि प्रयागराज स्टेशन और संगम पर भीड़ को बढ़ने से रोका जा सके और स्थिति काबू में रहे।

प्रयागराज शहर में 42 लग्जरी होटल हैं सभी की अपनी वेबसाइट है, जिसके जरिए आप उनके बारे में जान सकते हैं और बुकिंग कर सकते हैं इसके अलावा मेलें में 100 आश्रयस्थल हैं, हर आश्रयस्थल में 250 बेड हैं। 10 हजार से अधिक स्वयंसेवी संस्थाओं ने श्रद्धालुओं के लिए ठहरने और भोजन की व्यवस्था की है।

इसलिए यह कहा जा सकता है कि महाकुम्भ केवल धार्मिक आयोजन मात्र नहीं है अपितु आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्त्व को फलीभूत करने वाला आस्था पर्व है। यहाँ आकर मनुष्य एक ओर आत्मसुधि व आत्मकल्याण का भाव रखता है वही दूसरी ओर सम्पूर्ण राष्ट्र मेरा परिवार है, यह भाव रखकर राष्ट्रीय एकता को मजबूत करता है। सैकड़ों वर्षो से चली आ रही कुम्भ परम्परा भारत की प्राचीन राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक धारा का परिचय कराती है। कुम्भ मेले में सभी पन्थ सम्प्रदायों के देश-विदेश के साधु सन्त आकर सामाजिक समस्याओं पर विचार विमर्श करते है। यहाँ शैव, वैष्णव, शाक्त, सिख, जैन, बौद्ध सभी पंथ सम्प्रदाय के भारतीय सम्मिलित होते है। सभी मिलकर पूरी परम्परा में क्या-क्या परिवर्तन करना चाहिए, कौन सी परम्परा राष्ट्र और समाज के लिए हानिकारक है, भारतीय समाज को क्या संदेश देना है इन सभी विषयों पर गहन विचार विमर्श कुम्भ में करते हैं। कुम्भ में स्नान करने वाला किस जाति का, कहां का निवासी है इसका विचार किये बिना सम्पूर्ण समाज के लोग यहाँ आते है।

इसलिए, अगर आप इस महाकुम्भ में किसी कारणवश शामिल न हो पाओ तो जीवन में एक बार कुम्भ मेले में अवश्य जाना चाहिए और आस्था की डुबकी लगाने के साथ साथ सरकार की व्यवस्था को भी देखना चाहिए ।

◆ **सदा शिव शर्मा**
प्रबंधक (आईटी)

समय का महत्व

समय ही जीवन है क्योंकि जीवन समय से बना है। समय का सदुपयोग ही जीवन की सफलता की कुंजी है। हमारे जीवन का निर्माण क्षण- क्षण के योग से बना है। अधिकांश लोग क्षण भर के समय का मूल्य नहीं समझते । यही उनकी भूल है । जीवन क्षण भंगुर और अनिश्चित है । पता नहीं कहां और किस समय मृत्यु का निमंत्रण आ जाए । अतः हमें अनिश्चित समय में बहुत सारे काम करने हैं। यदि हमने समय को व्यर्थ की गपशप और आलस्य में नष्ट कर दिया तो हम जीवन में कोई महान कार्य नहीं कर सकेंगे । अत: हमें प्रत्येक पल को काम में लाना चाहिए।

समय धन से भी बहुमूल्य है । धन तो फिर भी कमाया जा सकता है, किन्तु जो समय बीत गया वह फिर नहीं आ सकता। किसी ने सच ही कहा है कि गया वक्त हाथ नहीं आता। समय और तूफान किसी की प्रतीक्षा भी नहीं किया करता। जिस मनुष्य ने जवानी में धर्म का आचरण नहीं किया वह वृद्धावस्था में सिर ही पीटेगा। सिवाय पछतावा के अलावा कुछ भी नहीं रहता। सही ही कहावत है कि "अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत" । इसलिए यह स्वीकृत तथ्य है कि प्राप्त अवसर को हाथ से न जाने दीजिए । यदि हमने अपना समय गपशप लगाने, दूसरों की निंदा करने, और मित्रों के साथ इधर-उधर घूमने में नष्ट कर दिया तो समझो कि हमने जीवन की सबसे मूल्यवान वस्तु को नष्ट कर दिया। यही समय हम स्वास्थ्य और मस्तिष्क के विकास में लगा सकते हैं।

हर काम के लिए एक समय और हर समय के लिए एक काम निश्चित होना चाहिए । कोई कार्य असमय नहीं करना चाहिए। जिन लोगों के पास काम करने का कोई निश्चित समय नहीं होता, जब चाहे खाएं और जब चाहे सोए, वे लोग कायर बन जाते हैं। जो लोग कार्य के लिए समय निश्चित कर लेते हैं उन्हें कोई काम भूलता ही नहीं है। काम में लगे रहने से आदमी का मन बुरी बातों की ओर भी नहीं जाता। किसी ने सही ही कहा है- व्यस्त रहो, मस्त रहो । अर्थात खाली दिमाग शैतान का ।

शरीर को व्यायाम की आवश्यकता है, यह एक ठीक है, किंतु ऐसे व्यायाम जो शारीरिक दृष्टि से कड़े पड़ते हो, या जिनमें रुचि का अभाव हो, लोगों को अधिक दिन तक अच्छे नहीं लगते। इनके लिए महंगे आहार की भी आवश्यकता पड़ती है जो हर किसी के लिए सुलभ नहीं है। इन्हें कोई उत्साह में

आकर शुरु भले ही कर दे किन्तु अधिक दिनों तक इन नियमों का पालन नहीं कर सकता, क्योंकि यह आर्थिक रुचि व समय की दृष्टि से महंगे पड़ते हैं। अंग प्रसगों को स्वाभाविक रूप से सशक्त रखने वाली कसरत टहलना है । यह सरलतम व्यायाम भी है और सर्वसाधारण के लिए सुलभ एवं उपयोगी भी है ।

शारीरिक दृष्टि से दुर्बल व्यक्ति, स्त्री, बच्चे-बूढ़े सभी अपनी-अपनी अवस्था के अनुकूल इसका लाभ उठा सकते हैं । इसमें किसी को हानि की संभावना नहीं है। घूमना स्वास्थ्य के लिए जितना उपयोगी हो सकता है, उतना ही रुचिकर भी होता है। इससे मानसिक प्रसन्नता व शारीरिक स्वास्थ्य की दोहरी प्रकिया पूरी होती है। इसलिए संसार के सभी स्वास्थ्य विशेषज्ञों महापुरुषों ने इसे सर्वोत्तम व्यायाम माना है। सभी ने इसका अपने दैनिक जीवन में उपयोग किया है । उन लोगों के लिए जिन्हें प्रतिदिन दफ्तरों में बैठकर काम करना होता है, घूमना अत्यंत आवश्यक है । दिन भर दुकानों में बैठने वाले, बुद्धिजीवी व्यक्तियों के लिए भी उतना ही उपयोगी है। इससे कुदरती तौर पर संपूर्ण शरीर का व्यायाम होता है। टहलने से सारे शरीर की सजीवता बनी रहती है। भोजन पचता है और शरीर की सफाई में लगे हुए अवयव तेजी से अपना काम पूरा करते हैं।अतः व्यक्ति को सदैव क्रियाशील बने रहना चाहिए और जीवन के प्रत्येक क्षण का समुचित उपयोग करना चाहिए।

सही समय पर सही कार्य करने की बात भगवान श्रीकृष्ण ने श्रीमद् गीता के अध्याय 6 के 17वें श्लोक में भी कही है:-

"युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधश्य योगो भवति दुःखहा"

अर्थात दुखों का नाश करने वाला योग तो यथायोग्य आहार-विहार करने वालों का कर्मों में यथायोग्य चेष्टा करने वालों का और यथायोग्य सोने तथा जागने वालों का ही सिद्ध होता है।

◆ **रमेश चंद्र**
सेवानिवृत्त सहायक निदेशक(रा. भा.)

सफर ऑफिस का ....

आज की सुबह भी किसी और दिन के सुबह से अलग नहीं। वही हर दिन की तरह सुबह का कोलाहल, घरो से कूकर के सिटि की आवाज, बच्चों के स्कूल बस पकड़ने की भागदौड़ और फिर अपने ऑफिस टाइम पर पहुंचने की दौड़। एक ही एक्शन रीप्ले हर दिन का।

आज यू ही फुरसत के लम्हों में बैठ अपने हर दिन के इस भाग दौड़ को एक सैटेलाइट व्यू से देखने की कोशिश की...मैंने खुद को हर दिन की दिनचर्या में व्यस्त होते हुए देखा...जो सब लिखा ऊपर वो खुद पे होते देखा....और फिर सवालो के दायरे में खुद को सवाल पूछ खुद में जवाब ढूंढ़ने लगी.

ऐसे सच कहूं तो खुद को ऑफिस पहुंचने की रेस में किसी थ्रिलर फिल्म के मुख्य किरदार से कम की फीलिंग नहीं होती। हर दिन गूगल मैप पर जो टारगेट टाइम है... चैलेंज ये रहता है कि उससे पहले कैसे पहुंचू... और फिर कभी इधर... कभी उधर...कभी अपने किसी सहकर्मी को आगे जाते देख ये टेंशन कि कहीं मैं पंच (Punch) करने में देरी ना कर दूं ...फिर पार्किंग में जाते हुए गार्ड से नेगोसिएशन, की पर्ची बाद में ले लूंगी... वो हॉर्न बजा सामने वाले को नर्वस कर रास्ता ढूंढ़ना.... और पंच करते ही खुद को माउंट एवरेस्ट पर झंडा फहराने वाली फीलिंग से शाबाशी देना....उउफफ्फ़....एक अनुभूति...जो शब्दों में बया भी ना हो।

हर दिन के इस थ्रिलर सफर में कुछ घटनाएं जब याद आती हैं तो मुस्कुराहट यू ही चेहरे पे आ जाती है। एक बार कुछ ऐसा हुआ कि मैं ऑफिस के लिए निकली तो कार का टायर पंचर हुआ देखा...फिर जो टेंशन हुई...वो किसी सातवे आसमान पे जाने से कम नहीं था। उस वक्त तो बस दिमाग का एआई (AI) मोड ऑन हो गया की अब क्या करें...फिर दिमाग का एल्गोरिथम (Algorithm) ने फ्लैश सॉल्यूशन की बत्ती जलाई और मेरे मुंह से आवाज निकली ऑटोऊऊउउ !!!!! किसी ऑटो वाले भैया ने मेरी पुकार यू सुनी की एक और आवाज आई.........चीइइइइइइइइइइइइइइइइइइ।

ब्रेक लगने की आवाज आस-पास के लोगो के ध्यान को अपनी तरफ खींचती ऑटो मेरे अगले कदम का इंतजार करने लगा...मैं भागते हुए बैठी और खुद को गूगल मैप में कन्वर्ट कर ड्राईवर भैया को ऑडियो इंस्ट्रक्शन देना शुरू कर दिया... इधर मोडो...इधर से बाएं .... यहाँ से शॉर्टकट लो....इधर ट्रैफिक लाइट मिलेगी.... बायें ले के यू टर्न लो....मुझे दिख रहा था ड्राइवर के ललाट पे पसीने की बूँद और उसकी आवाज़ से अभिव्यक्ति...पर ज्यो ही मैंने पंच किया डॉट 9.59.59 बजे और पंच के साथ ही 10 ओ क्लॉक का आगमन ..मैंने आँखे बंद की...भगवान को दिल से प्रणाम किया और मैंने ख़ुशी से 50 रुपये ज्यादा दे के ऑटो वाले भैया को बोला..भैया आज तो बचा लिया आपने....मालूम नहीं उसे समझ आया या नहीं कि उसने कितना बड़ा काम किया आज पर 50 रुपये ज्यादा देख उसके चेहरे पे मुस्कान देख मुझे तसल्ली हुई। मैंने एक सफल अंतरिक्ष यात्री की तरह खुद को ऑफिस के कॉरिडोर में चलते हुए महसूस किया कि मैं शायद रोड से नहीं डायरेक्ट स्पेस से लॉन्च हो के यहाँ पहुची |

एक बार तो कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि उसके बाद ऐसा लगने लगा की दिल्ली के ट्रैफिक लाइट का हर कैमरा मुझे ट्रैक कर रहा है... कहीं गलती से ट्रैफिक

लाइट पे वाइट लाइन टच हुआ और चालान आया। अब एक तरफ पंच का टेंशन और दूसरी तरफ येलो लाइट रैड न हो जाए इसका टेंशन...में क्या करूं , इसी कशमकश में कि निकल जाउ या रुक जाउ...मैंने ब्रेक लगा ही दी...पर कंबखत वो स्टॉप लाइन टच हो ही गया...ये कॉन्फिडेंस होते हुए भी मैं सही रुकी हु...चालान आ ही गया। वो दिन है और आज.... मुझे येलोफोबिया हो गया है....कहीं भी येलो लाइट देख मैं दस कदम पहले ही रुक जाती हूं।

किस्से तो कितने हैं। हर किस्सा एक अनुभव भी है | कुछ घटनाये तो ऐसी भी हुई जिसने बहुत कुछ सिखाया और खुद की सुरक्षा प्राथमिकता है..को समझाने का काम किया। वो एक काफी डराने वाली घटना थी जब अचानक एक बहुत ही धीमे से चलते ट्रैफिक में किसी ने जोर जोर से मेरी कार के दरवाजे पर दस्तक देना शुरु कर दिया। मैं बिल्कुल नर्वस हो गई...यू लगा शायद मेरी कार से कहीं किसी को चोट तो नहीं लग गई...मैं समझ नहीं पा रही थी क्या करू.... मैं विंडो खोलने ही वाली थी कि अचानक ख्याल आया कि हो सकता है कोई गलत इंसान हो जो मेरे विंडो खोलते ही कुछ लूटने की कोशिश करे और हो सकता है मुझे हानि पहुचाये, मैं किसी तरह बिना डरे बिना घबराये वहां से कार तेज़ चला कर ऑफिस पहुंची। जब ऑफिस पहुंच कर ये बात मैंने सब को बताई तो किसी ने कहा कि हां कोई ऐसा गैंग है "ठक ठक गैंग" जो इस तरह अकेली महिला को देख कुछ लूटने की कोशिश करता है। वो एक सबक ही था मेरे लिए...मैं सतर्क हो गई कि कोई भी इस तरह की स्थिति में अपनी सुरक्षा का ख्याल रखूंगी।

और फिर पिछला अनुभव कुछ इस तरह मेरे काम आया कि एक बार कोई व्यक्ति कुछ इस तरह मेरी कार के सामने आ खुद को टच करा ऐसे चिल्लाने लगा कि अरे मार दिया...पैर टूट गया...अस्पताल जाना पड़ेगा...उसने ये सोचा की वो झूठ बोलकर मुझे डरा पायेगा या मैं डर जाउंगी या उसे पैसे दे दूंगी। पर मेरे ये कहते ही कौन सा पैर टूटा...अब दूसरा वाला तोड़ू?... वो समझ ही नहीं पाया कैसे रिएक्ट करू...उसने बोला पुलिस बुलाऊंगा...मैंने बोला मैं बुलाती हूं...फिर तो जब उसने देखा की यहाँ कोई दाल नहीं गल रही तो वो वहाँ से निकल गया चुपचाप...मुझे ये सोचने पर मजबूर करते हुए कि क्या-क्या पैतरे हो सकते हैं, जो लोग अपना सकते है पैसे के लिये ।

कभी कोई वाक्या एक आध्यात्मिक विचार की ओर ले जाता है...जब कभी रास्ते में किसी की अंतिम यात्रा देखती हूं...साथ में कुछ लोगो का झुंड राम का नाम लेते हैं...अचानक ये सोचती हूं...कि हर इंसान को जाना यू ही है...कोई आज तो कोई कल... फिर भी हम यू भागते रहते हैं...कुछ भी तो नहीं जाता साथ में... बस जो अच्छाईयां हमने की होती है वही यहाँ रह जाता है। सोचती हूं कि इतनी सारी नफ़रत, ईर्ष्या, दुश्मनी, लालच, फ़रेब हैं इस दुनिया में जब हमें ये भी नहीं पता कि हम कल हो ना हो।

कभी जब किसी गरीब को ठिठुरती ठंड में बिना कपडे को देख तकलीफ सी होती है, जब किसी को भूख से परेशान होकर कुछ पाने की उम्मीद होती है, ट्रैफिक लाइट पर दिन भर मांगते रहते हैं, जब एक छोटा बच्चा हाथ में गुलाब ले दिन भर बेचता है रहता है...सोचती हूं जिंदगी इतनी भी आसान नहीं, शुक्रिया करना चाहिए भगवान का जिसने हमें इस लायक बनाया कि हम दूसरे की कुछ मदद कर पाते हैं। सोचती हूं कि एक इंसान के लिए कितना जरूरी है कि हमें एक सही मायने में इंसानियत हो जो अपनी समृद्धि से दूसरे की जिंदगी में थोड़ी रोशनी दे सके।

किस्से तो बहुत हैं...कभी कुछ किस्से हँसाते हैं, कभी मायूस करते हैं, कभी कुछ सिखाते हैं...हम जीते हैं हर दिन इन किस्सों को एक जज़्बात की तरह। बहुत सारे पलों को समेटते हर दिन हम ये सफर तय करते हैं। रास्ते वही हैं....मंजिल भी वही, पर हर दिन का सफर एक नया एहसास होता है। आज भी निकल चुकी हूं अपने घर से अपने मंदिर (कार्यालय) की तरफ इबादत (काम) के लिए।

कल फिर एक नई सुबह...एक नया सफर...एक नया एहसास... समेटूंगी, हर एक एहसास को एक पन्ने की तरह अपनी जिंदगी की किताब में। कभी जो फुर्सत से बैठेंगे रिटायरमेंट के बाद... बहुत वक्त होगा इन एहसासों को फिर से जीने को....ख्यालो में। एक मुस्कुराहट के साथ गुनगुनाने लगी अपनी एक पसंदीदा गाना....जिंदगी एक सफर है सुहाना..यहाँ कल क्या हो किसने जाना...उररींई...उररररये हू हू...उरें उरें उउउउउ |

◆ **पुष्पा चक्रवर्ती**
सहायक प्रबंधक (आई टी)

अयोध्या के 'राम मंदिर' की मुख्य विशेषताएं

अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण और परिवर्तनकारी घटना है। राम जन्मभूमि के पवित्र स्थल पर निर्मित, इस मंदिर का अत्यधिक सांस्कृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व है। इस मंदिर के निर्माण की यात्रा राष्ट्र के जटिल सामाजिक राजनीतिक परिदृश्य को दर्शाती है।

अयोध्या विवाद की जड़ें इतिहास की गहराइयों में समा गई हैं, विवादित स्थल को भगवान राम का जन्म स्थान माना जाता है । भूमि को लेकर हुए कानूनी और राजनीतिक संघर्ष का समापन 2019 में सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक फैसले के साथ हुआ, जिसने राम मंदिर के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया। सर्वसम्मत फैसले ने सौहार्दपूर्ण समाधान और सांप्रदायिक सद्भाव की आवश्यकता पर बल दिया।

मंदिर का स्थापत्य नागर शैली का अनुसरण करता है, जो जटिल शिल्प कौशल और डिजाइन का दर्पण प्रस्तुत करता है। ऊंचे शिखर मंदिर की भव्यता में चार चांद लगाते हैं। निर्माण प्रक्रिया में पारंपरिक और आधुनिक तकनीकों का मिश्रण विरासत और प्रगति के सम्मिश्रण का प्रतीक है।

अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण केवल एक धार्मिक उपक्रम नहीं है, बल्कि सदियों से चले आ रहे विवाद के समापन का प्रतीक है। यह मंदिर एक आशा की किरण बनकर उभर रहा है, जो राष्ट्रीय गौरव और एकजुटता की भावना को बढ़ावा दे रहा है। मंदिर के निर्माण के पूरा होने से दुनिया भर के भक्तों और पर्यटकों को आकर्षित करने की उम्मीद है, जिससे अयोध्या एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल और सांस्कृतिक केंद्र बन जाएगा।

निष्कर्ष यह है कि, अयोध्या में राम मंदिर भारत के सांस्कृतिक और धार्मिक ताने-बाने के विविध पहलुओं को समाहित करता है। विवाद से निर्माण तक की यात्रा राष्ट्र की चुनौतियों का सामना करने और साझा आधार खोजने की क्षमता का प्रतिनिधित्व करती है, अंततः भारत की विरासत के समृद्ध चित्र में योगदान देती है।

वास्तुकला चमत्कार और निर्माण विवरण

मुख्य वास्तुकार, चंद्रकांत सोमपुरा और उनके दो बेटे, निखिल और आशीष सोमपुरा ने आईआईटी गुवाहाटी, आईआईटी चेन्नई, आईआई टी बॉम्बे, एन आई टी सूरत और अन्य जैसे प्रसिद्ध संस्थानों की विशेषज्ञता के आधार पर डिजाइन तैयार किया। लार्सन एंड टुब्रो (एलएंडटी) द्वारा किया गया निर्माण, टाटा कंसल्टिंग इंजीनियर्स लिमिटेड (टीसीईएल) द्वारा प्रबंधित किया गया था।

मंदिर का आकार विस्मयकारी है, जो कुल 70 एकड़ क्षेत्र को कवर करता है, जिसका 70% हिस्सा हरियाली को समर्पित है। यह मंदिर 2.77 एकड़ में फैला हैऔर 161 फीट की ऊंचाई पर है, इस की लंबाई 380 फीट और चौड़ाई 250 फीट है। स्थापत्य शैली भारतीय नगर शैली को दर्शाती है, जिसमें तीन मंजिलें, 392 स्तंभऔर 44 दरवाजे हैं।

निर्माण सामग्री और तकनीकें

पारंपरिक प्रथाओं से हटकर, निर्माण में पारंपरिक सामग्रियों के बजाय स्टील या लोहे से परहेज किया गया।बंसी पहाड़पुर गुलाबी बलुआ पत्थर, ग्रेनाइट पत्थर, सफेद मकराना, रंगीन संगमरमर और सागौन की लकड़ी का उपयोग विभिन्न पहलुओं के लिए किया गया था। विशेष ईंटें, जिन्हें रामशिलाओं के नाम से जाना जाता है, जिन पर"श्रीराम"अंकित है, राम सेतु के निर्माण में उपयोग किए गए पत्थरों के समानांतर हैं।

श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक, अयोध्या राम मंदिर का विवरण:

- अयोध्या राम मंदिर भारत के उत्तर प्रदेश राज्य के अयोध्या शहर में स्थित है।
- मंदिर का कुल क्षेत्रफल 2.7 एकड़ है और इसका निर्मित क्षेत्रफल 57,400 वर्ग फुट है।
- मंदिर 360 फीट लंबा, 235 फीट चौड़ा और 161 फीट ऊंचा है।
- मंदिर में तीन मंजिलें हैं, प्रत्येक मंजिल की ऊंचाई 20 फीट है।
- मंदिर के भूतल पर 160 स्तंभ हैं, पहली मंजिल पर 132 स्तंभ हैं और दूसरी मंजिल पर 74 स्तंभ हैं।
- मंदिर में पांच शिखर और पांच मंडप हैं।
- मंदिर में 12 द्वार हैं।

राम मंदिर की मुख्य विशेषताएं:

1. राम मंदिर ट्रस्ट ने एक्स पर जानकारी दी है कि मंदिर परंपरागत नागर शैली में बनाया जा रहा है। मंदिर की लंबाई (पूर्व से पश्चिम) 380 फुट, चौड़ाई 250 फुट और ऊंचाई 161 फुट है वहीं 3 मंजिला मंदिर में प्रत्येक मंजिल की ऊंचाई 20 फुट जहां कुल 392 खंभे और 44 द्वार बनाये गए है।
2. राम मंदिर ट्रस्ट के मुताबिक मुख्य गर्भगृह में प्रभु श्रीराम का बालरूप (श्रीरामलला सरकार का विग्रह) और प्रथम तल पर श्रीराम दरबार बनाया गया है। मंदिर में पूर्व दिशा से 32 सीढ़ियां चढ़कर सिंहद्वार से प्रवेश किया जा सकेगा।
3. मंदिर के 70 एकड़ क्षेत्र में से 70 प्रतिशत क्षेत्र हमेशा हरा-भरा रहेगा। वहीं मंदिर में लोहे का उपयोग नहीं किया गया है और न ही धरती के ऊपर कंक्रीट बिछाई गयी है।
4. मंदिर में 5 मंडप बनाये गए है जिनके नाम इस प्रकार है-
   - नृत्य मंडप
   - रंग मंडप
   - सभा मंडप
   - प्रार्थना मंडप
   - कीर्तन मंडप
5. मंदिर के खंभों व दीवारों में देवी देवता तथा देवांगनाओं की मूर्तियां उकेरी गयी है जो मंदिर की खूबसूरती को और बढ़ा देती है। दिव्यांगजन एवं वृद्धों के लिए मंदिर में रैम्प व लिफ्ट की व्यवस्था की गयी है।
6. मंदिर के चारों ओर आयताकार परकोटा रहेगा। चारों दिशाओं में इसकी कुल लंबाई 732 मीटर तथा चौड़ाई 14 फीट है। परकोटा के चारों कोनों पर सूर्यदेव, मां भगवती, गणपति व भगवान शिव को समर्पित चार मंदिरों का निर्माण किया जा रहा है. वहीं उत्तरी भुजा में मां अन्नपूर्णा, व दक्षिणी भुजा में हनुमान जी का मंदिर रहेगा।
7. मंदिर के समीप पौराणिक काल का सीताकूप विद्यमान रहेगा. मंदिर परिसर में प्रस्तावित अन्य मंदिर- महर्षि वाल्मीकि, महर्षि वशिष्ठ, महर्षि विश्वामित्र, महर्षि अगस्त्य, निषादराज, माता शबरी व ऋषिपत्नी देवी अहिल्या को समर्पित होंगे।
8. दक्षिण पश्चिमी भाग में नवरत्न कुबेर टीला पर भगवान शिव के प्राचीन मंदिर का जीर्णोद्धार किया गया है और वहां जटायु प्रतिमा की स्थापना की गई है।
9. मंदिर के नीचे 14 मीटर मोटी रोलर कॉम्पेक्टेड कंक्रीट (RCC) बिछाई गई है। इसे कृत्रिम चट्टान का रूप दिया गया है। मंदिर को धरती की नमी से बचाने के लिए 21 फीट ऊंची प्लिंथ ग्रेनाइट से बनाई गई है। मंदिर परिसर में स्वतंत्र रूप से सीवर ट्रीटमेंट प्लांट, वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट, अग्निशमन के लिए जल व्यवस्था तथा स्वतंत्र पॉवर स्टेशन का निर्माण किया गया है, ताकि बाहरी संसाधनों पर न्यूनतम निर्भरता रहे।
10. 25 हजार क्षमता वाले एक दर्शनार्थी सुविधा केंद्र (Pilgrims Facility Centre) का निर्माण किया जा रहा है, जहां दर्शनार्थियों का सामान रखने के लिए लॉकर व चिकित्सा की सुविधा रहेगी।
11. मंदिर परिसर में स्नानागार, शौचालय, वॉश बेसिन, ओपन टैप्स आदि की सुविधा भी रहेगी। मंदिर का निर्माण पूर्णतया भारतीय परम्परानुसार व स्वदेशी तकनीक से किया जा रहा है। पर्यावरण-जल संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

वास्तुशिल्प हाइलाइट्स

मंदिर का डिज़ाइन ऐतिहासिक तत्वों को एकीकृत करता है, जो पूरे भारत में लगभग 550 मंदिरों से प्रेरणा लेता है। मंदिर की संरचना तीन मंजिला है, प्रत्येक मंजिल भगवान राम की दिव्ययात्रा के एक अलग चरण का वर्णन करती है। नृत्यमंडप और सभा मंडप सहित पांच मंडपों के साथ, मंदिर जटिल नक्काशी और मूर्तियों को प्रदर्शित करता है, जो भक्तों को एक व्यापक अनुभव प्रदान करता है।

मंदिर परिसरऔर बुनियादी ढांचागत पहलू

एक आयताकार परिसर की दीवार (परकोटा) से घिरे मंदिर परिसर में सूर्यदेव, देवी भगवती, गणेश भगवान और भगवान शिव को समर्पित चार कोने वाले मंदिर शामिल हैं। परिसर के भीतर अतिरिक्त मंदिर विभिन्न प्रतिष्ठित हस्तियों को श्रद्धांजलि देते हैं, जिससे समग्र आध्यात्मिक वातावरण को बढ़ावा मिलता है।

परिसर में आवश्यक ढांचागत तत्व शामिल हैं, जैसे सीवेज उपचार संयंत्र, जल उपचार संयंत्र, एक अग्निशमन सेवा, स्वतंत्र बिजली स्टेशन और एक तीर्थयात्री सुविधा केंद्र। इसके अलावा, परिसर के भीतर एक संग्रहालय भगवान राम और रामायण से संबंधित कलाकृतियों को प्रदर्शित करता है, जो मंदिर के सांस्कृतिक और शैक्षिक महत्व पर जोर देता है।

के माध्यम से आर्थिक विकास को बढ़ावा देने की उम्मीद की जाती है।

अयोध्या का कायाकल्प

मंदिर के निर्माण ने अयोध्या के कायाकल्प के लिए उत्प्रेरक का काम किया है। 30,923 करोड़ रुपये मूल्य की 200 से अधिक विकासात्मक परियोजनाओं का उद्देश्य अयोध्या को एक आधुनिक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक केंद्र में बदलना है। इसमें बुनियादी ढांचे का विकास, सौंदर्यीकरण परियोजनाएं, एक अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा और शहर के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक चरित्र का समग्रविकास शामिल है।

सीख और विरासत

अयोध्या राम मंदिर निर्माण परियोजना बहुमूल्य सबक प्रदान करती है।यह प्रौद्योगिकी के स्वदेशीकरण, संरक्षण के लिए आधुनिक तकनीकों के समावेश, धर्मनिरपेक्ष भागीदारी, सांस्कृतिक एकीकरण, सामाजिक समावेशन, पर्यावरणीय स्थिरता, संरक्षण और प्रगति की रिपोर्टिंग में पारदर्शिता को प्रदर्शित करता है।

निष्कर्षतः अयोध्या राम मंदिर सिर्फ एक धार्मिक इमारत नहीं बल्कि एक सांस्कृतिक और स्थापत्य चमत्कार है। यह

महत्व और प्रभाव

राम मंदिर का निर्माण अत्यधिक धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व रखता है।यह दशकों से चले आ रहे धार्मिक संघर्षों के अंत और धार्मिक सद्भाव को बढ़ावा देने का प्रतीक है।सांस्कृतिक रूप से, यह भारत की ऐतिहासिक विरासत का प्रतीक बन जाता है, जबकि सामाजिक रूप से, इससे धर्मार्थ संस्थानों को प्रोत्साहित करने और पर्यटन

एक राष्ट्र की सामूहिक भावना का प्रतीक है, जो परंपरा को आधुनिकता के साथ मिश्रित करता है। आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आकांक्षाओं का मार्गदर्शन करने वाले एक प्रकाश स्तंभ के रूप में, मंदिर भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण की शुरुआत करता है।

◆ **डॉ अरुण कुमार राणा**
संयुक्त महाप्रबंधक (परियोजना)

अकेला चांद

खोया सा है शांतचित्त, शीत चांद तन्हा सफर में,
वक्त के पाबंद हुए, बस धड़कनों के धुन लिए,

ख्याल करते, मलाल करते, चलता करता ये रस्ते,
खामोशी सजाए होठों पर, मन में कई सरगम लिए,

घूरता है वो आँखें छुपाए जो तारे हैं दूर हंसते हुए,
न था कोई जब जमीन पर, जो देखकर बातें करे,

न था कोई हमदर्द कहीं, उसकी रौशनी की राह तके,
करे इंतजार आहें भरे, बिखरे चांदनी की तारीफ करे,
नज़रों की अपने सुइयों में, आशाओं की डोरी भरे

किस डग पे अब अगला पग, सपने यही बुनते हुए
यूं ही खोजते उस हाथ को, मन से मन के साथ को,

चलता रहा यह सफर, पर ख्याल नहीं इसे याद नहीं ,
कोई है निगाहें टिकाए हुए, हर पल और हर लम्हें

जो है दूर, पर थामे हाथ, होकर साथ पूरी रात चले,
वो है वहि एकांत अकेला, है बाहें खोले हर लम्हें,
वही आसमां उस चांद की

जहां हर तन्हाई की रात ढले
जहां हर तन्हाई की रात ढले

◆ **रितिक गुप्ता**
प्रशिक्षु अधिकारी,
परियोजना, हडको

स्वास्थ्य और सामाजिक संस्कृति

स्वास्थ्य केवल शारीरिक स्थिति का पर्याय नहीं है, बल्कि यह मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक भलाई का भी प्रतीक है। स्वास्थ्य पर प्रभाव डालने वाली कई बाहरी कारक हैं, जिनमें सामाजिक संस्कृति प्रमुख रूप से कार्य करती है। हर समाज की अपनी एक संस्कृति, रीति-रिवाज, मान्यताएँ और जीवनशैली होती हैं, जो सीधे या अप्रत्यक्ष रूप से लोगों के स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं। समाज की आदतें, परंपराएं, आहार, और विचारधारा एक व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को आकार देती हैं।

सामाजिक संस्कृति और स्वास्थ्य का संबंध

हमारे समाज में स्वास्थ्य की अवधारणा सिर्फ शारीरिक बीमारी से मुक्त होने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य को भी सम्मिलित करती है। भारतीय समाज में, पारंपरिक दृष्टिकोण से, स्वास्थ्य को एक संतुलन की स्थिति माना जाता है, जो शरीर, मन और आत्मा के सामंजस्य से प्राप्त होता है। आयुर्वेद जैसी प्राचीन चिकित्सा पद्धतियां और योग जैसे शारीरिक अभ्यास समाज के स्वास्थ्य संबंधी दृष्टिकोण को आकार देते हैं। आयुर्वेद में शरीर के आंतरिक संतुलन को बनाए रखने की बात की जाती है, जो आज के आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों के मुकाबले भी प्रासंगिक है।

इसके अलावा, भारतीय समाज में सामाजिक संबंधों को बहुत महत्व दिया जाता है। संयुक्त परिवार की प्रणाली में परिजनों के बीच आपसी सहयोग और सामूहिक गतिविधियाँ व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य को सशक्त बनाती हैं। समाज में एक दूसरे के साथ मेलजोल, रिश्तों का सम्मान और आपसी समर्थन से मानसिक शांति और संतुलन बना रहता है, जो समग्र स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। सामाजिक अवसरों जैसे त्योहारों और पारंपरिक समारोहों में भाग लेना भी लोगों को मानसिक और शारीरिक रूप से ताजगी का अनुभव कराता है।

विकसित समाज और स्वास्थ्य में बदलाव

लेकिन, जैसा कि हम देखते हैं, वैश्वीकरण और आधुनिकता के प्रभाव से हमारी पारंपरिक संस्कृति में बदलाव आया है। पश्चिमी जीवनशैली को अपनाने से कुछ स्वस्थ आदतों में कमी आई है। अधिकतर लोग अब जंक फूड, तला-भुना भोजन, और जल्दी-जल्दी खाए जाने वाले खाद्य पदार्थों को पसंद करने लगे हैं। इन खाद्य पदार्थों में पोषक तत्वों की कमी होती है और ये स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर डालते हैं। इसके अलावा, बढ़ती शहरीकरण की वजह से लोग तनावपूर्ण जीवन जीने लगे हैं, जिसके कारण मानसिक बीमारियों जैसे चिंता, अवसाद, और तनाव की समस्याएँ बढ़ रही हैं।

पारिवारिक संरचना भी बदल रही है। संयुक्त परिवार की जगह अब एकल परिवार और विवाहित जोड़े की प्रवृत्ति बढ़ गई है, जिससे सामाजिक समर्थन का दायरा सीमित हो गया है। अकेलापन और मानसिक तनाव के मामले अब अधिक दिखाई देने लगे हैं, जो समाज के लिए एक चिंता का विषय है।

स्वास्थ्य के प्रति सामाजिक जागरूकता

सामाजिक संस्कृति का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि समाज के विभिन्न वर्गों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का स्तर अलग-अलग होता है। गांवों में लोग अक्सर पारंपरिक उपचार विधियों का पालन करते हैं, जबकि शहरी समाज में तकनीकी और चिकित्सा सुविधाओं का व्यापक उपयोग होता

है। हालांकि, ग्रामीण समाज में भी अब स्वस्थ जीवनशैली के प्रति जागरुकता बढ़ रही है, लेकिन शहरी क्षेत्रों में जीवनशैली की बीमारियाँ जैसे उच्च रक्तचाप, मधुमेह और मोटापा तेजी से बढ़ रहा है।

साथ ही, सामाजिक मीडिया और प्रचार-प्रसार के माध्यमों ने भी लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरुक किया है। आजकल सोशल मीडिया के जरिए लोग फिटनेस, संतुलित आहार, और मानसिक स्वास्थ्य पर चर्चा करते हैं, जो समाज में स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देने में मदद करता है।

इस प्रकार, हम देख सकते हैं कि स्वास्थ्य और सामाजिक संस्कृति का गहरा संबंध है। समाज की परंपराएं, जीवनशैली, आहार, और सामाजिक संबंध व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डालते हैं। बदलती सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यताएँ स्वास्थ्य के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करती हैं, और इसके सकारात्मक या नकारात्मक प्रभावों का परिणाम समाज पर दिखाई देता है। समाज में स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता बढ़ाना, पारंपरिक और आधुनिक जीवनशैली का संतुलन बनाए रखना, और मानसिक स्वास्थ्य को महत्व देना, समाज के समग्र स्वास्थ्य को बेहतर बना सकता है।

हमें अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता देते हुए स्वस्थ जीवनशैली अपनानी चाहिए, ताकि हम न केवल शारीरिक रूप से स्वस्थ रहें, बल्कि मानसिक और सामाजिक रूप से भी सशक्त बन सकें।

◆ **मयंक मोहन**
हिन्दी अनुवादक, राजभाषा
हडको

नारी शक्ति

नारी समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है जिसके बिना समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। नारी के अंदर सहनशीलता, धैर्य, प्रेम, ममता और मधुर वाणी जैसे बहुत से गुण विद्यमान है जो कि नारी की असली शक्ति है। यदि कोई नारी कुछ करने का निश्चय कर ले तो वह उस कार्य को किए बिना पीछे नहीं हटती है और वह बहुत से क्षेत्रों में पुरुषों से बेहतरीन कर, अपनी शक्ति का परिचय देती है।

नारी शक्ति का मतलब है, महिलाओं की ताकत और उनकी शक्ति का परिचय। नारी शक्ति को समाज में सम्मान और समान अधिकार देना चाहिए। प्राचीन काल से ही हमारे समाज में 'झाँसी की रानी', 'कल्पना चावला' और 'इंदिरा गाँधी' जैसी बहुत सी महिलाएँ हुई है जिन्होंने समय-समय पर नारी शक्ति का परिचय दिया है और समाज को बताया है कि 'नारी अबला नहीं सबला' है। आधुनिक युग में महिलाएं अपने अधिकारों से अवगत है और अपने जीवन से जुड़े निर्णय स्वयं लेने लगी है। आज भी महिला कोमल और मधुर ही है लेकिन उन्होंने अपने अंदर की नारी शक्ति को जागृत किया है और अन्याय का विरोध करना शुरु किया है। "नारी देवीय रूप है इसलिए नारी शक्ति सब पर भारी है, नारी से ही यह दुनिया सारी है"। हमें नारी शक्ति को प्रणाम करना चाहिए और आगे बढ़ने में उनकी मदद करनी चाहिए क्योंकि यदि देश की नारी विकसित होगी तो हर घर, हर गली और पूरा देश विकसित होगा। वो कहते है ना:- कि एक पुरुष साक्षर होगा तो केवल वही साक्षर होगा परन्तु, यदि एक नारी साक्षर होगी तो पूरा परिवार साक्षर होगा |

नारी शक्ति को बढ़ाने के लिए कई योजनाएं और कार्यक्रम, सरकारी व गैर-सरकारी संगठनों द्वारा समय-समय पर चलाएं जाते रहे हैं। नारी शक्ति से जुड़ी कुछ प्रमुख बातें:

- भारत के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ जब किसी प्रधानमंत्री के कार्यक्रम की सुरक्षा व्यवस्था की जिम्मेदारी पूरी तरह से महिला सुरक्षाकर्मियों ने संभाली। (8 मार्च,2025 अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस)
- 26 जनवरी 2025 की परेड में महिलाओं ने कई झाकियों का नेतृत्व किया |

- भारत में महिला सशक्तिकरण को 26 जनवरी, 1950 में भारतीय संविधान के लागू होने के साथ गति मिली।
- ऑक्सफ़ोर्ड डिक्शनरी ने साल 2018 में 'नारी शक्ति' को साल का हिन्दी शब्द घोषित किया था।
- इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत एक कार्यात्मक संगठन, भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया दल ने 8 मार्च 2025 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया और "साइबर सिक्योरिटी हैंडबुक फॉर महिला सुरक्षा" जारी की, जो आवश्यक साइबर स्वच्छता प्रथाओं के साथ भारत भर में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए एक अनूठी पहल है।
- महिलाएं पुरुषो की तरह ही बुद्धि और मेहनत से अविश्वसनीय उपलब्धियां प्राप्त कर रही हैं।
- महिलाएं अपने उद्यमशीलता के क्षितिज का विस्तार कर रही हैं और कई कारोबारी क्षेत्रों में शामिल हैं।
- महिलाओं की शक्ति को बढ़ाने के लिए विशेष ऋण कार्यक्रम भी चलाए जा रहे हैं। (स्वयं सहायता समूह, लखपति दीदी, इत्यादि)
- यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया ने महिला उद्यमियों के लिए नारी शक्ति एसटीपी की शुरुआत की है।

- मिशन शक्ति एक मिशन मोड योजना है जिसका उद्देश्य महिला सुरक्षा, और सशक्तिकरण के लिए हस्तक्षेप को मज़बूत करना है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस हर साल 8 मार्च को मनाया जाता है, जो महिलाओं की उपलब्धियों को सम्मान देने और उन्हें प्रोत्साहित करने का दिन है। यह दिन महिलाओं के आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों में योगदान को मान्यता देने का अवसर है। 1975 में इसे संयुक्त राष्ट्र द्वारा औपचारिक रूप से मान्यता प्राप्त हुई, और तब से यह दिन दुनियाभर में महिलाओं के अधिकारों और समानता की दिशा में एक बड़ा विशेष दिन होता है।

आज वर्तमान में हम महिलाओ की स्थिति को देखे तो वह हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं, रक्षा क्षेत्र में जहाँ पुरुषों को ज्यादा कुशल माना जाता था, वहा पर आज वह कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी हैं।

गुजरात के नवसारी जिले में 8 मार्च 2025 को आयोजित प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यक्रम में एक अनूठी पहल देखने को मिली। इस दिन को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री की सुरक्षा में पूर्ण रूप से महिला सुरक्षाकर्मी ही तैनात थी। यह सब उनके वर्तमान स्थिति के साथ शक्ति, कौशल, साहस और दक्षता के स्तर को दर्शाता है |

नर-नारी के समान अधिकार की घोषणा करते हुए, सुप्रसिद्ध साहित्यकार 'जयशंकर प्रसाद की यह पंक्तिया हमेशा ध्यातव्य होनी चाहिए।

"तुम भूल गए पुरुषत्व मोह में कुछ सत्ता है नारी की,
समरसता है संबंध बनी अधिकार और अधिकारी की।"

-जयशंकर प्रसाद

नारी! तुम केवल श्रद्धा हो/ विश्वास-रजत-नग पगतल में।
पीयूष-स्रोत-सी बहा करो/ जीवन के सुंदर समतल में।

-जयशंकर प्रसाद

◆ **सुमित कुमार गुप्ता**
हिंदी अनुवादक, राजभाषा
हडको

प्रशिक्षु अधिकारियों - बैच 2025 हेतु इंडक्शन कार्यक्रम की एक झलक

ह्यूमेन सेटलमेंट मैनेजमेंट इंस्टीटयूट, हडको द्वारा दिनांक 04 फरवरी,2025 से 14 फरवरी, 2025 तक हडको के प्रशिक्षु अधिकारी (2025 बैच) के लिए एक इन्डक्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया था जिसका शुभारंभ हडको के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय, निदेशक कॉर्पोरेट प्लानिंग, निदेशक वित्त, वरिष्ठ कार्यकारी निदेशक के वक्तव्य द्वारा किया गया। प्रशिक्षु अधिकारियों को हडको की कार्यप्रणाली, गतिविधियों एवं उपलब्धियों की जानकारी देने के लिए प्रत्येक दिन हडको के अलग-अलग विभागों द्वारा सत्रवार प्रस्तुतिकरण दिया गया।

हडको के लिए यह भी गर्व का विषय है कि नवनियुक्त अधिकारियों ने हडको के वार्षिक खेल दिवस के अवसर पर आयोजित विभिन्न गतिविधियों एवं प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़ कर भाग लिया तथा कई पुरस्कार भी प्राप्त किए।

विभिन्न सत्र के आयोजन के साथ-साथ एचएसएमआई द्वारा इन अधिकारियों के लिए ए-सी बस द्वारा शैक्षणिक भ्रमण की भी व्यवस्था की गई।

दिनांक 13 फरवरी,2025 को राजभाषा अनुभाग, हडको का प्रतिनिधित्व करते हुए डॉ. रेखा चंदोला, वरि.प्रबं. (राजभाषा) ने नवनियुक्त प्रशिक्षु अधिकारियों का परिचय लेते हुए उन्हें पीपीटी के माध्यम से राजभाषा अधिनियम एवं नियमों की जानकारी दी तथा कार्यालय में राजभाषा की उपयोगिता एवं महत्ता पर प्रकाश डाला ।

साथ ही, हडको में लागू भारत सरकार द्वारा जारी प्रोत्साहन योजनाओं के अतिरिक्त राजभाषा उत्कर्ष योजनाओं के संबंध में विस्तार से चर्चा की तथा विभागवार तिमाही रिपोर्ट भरने संबंधी जानकारी दी। सभी प्रशिक्षुओं ने इस सत्र की भरपूर सराहना करते हुए राजभाषा हिन्दी से संबंधित रोचक विषयों पर वार्तालाप भी की।

अंत में सभी प्रशिक्षु अधिकारियों से उनके हिन्दी ज्ञान स्तर संबंधी प्रोफोर्मा भरवाया गया ताकि जो प्रशिक्षु हिन्दी में कार्य करने में प्रवीण हैं वे प्रारंभ में ही अपने-अपने कार्यक्षेत्र में कार्यालयी कार्य की शुरुआत हिन्दी में कर सकें तथा जिन्हें हिन्दी संबंधी प्रशिक्षण की आवश्यक्ता है उन्हें हिन्दी प्रशिक्षण हेतु नामित किया जा सके।

◆ **डॉ. रेखा चंदोला**
वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा, हडको

खुद पर एतबार कर

खुद पर एतबार कर
चल फिर नई शुरुआत कर
छोड़कर दमन अंधेरों का
उगते सूरज से बात कर
आगे बढ़, चल नई शुरुआत कर...

नया कल चौखट पर खड़ा है,
क्यों तू यहां औंधा पड़ा है।
कब तक बीते कल में उलझेगा,
समय के घोड़े की लगाम थामकर..
आगे बढ़, चल नई शुरुआत कर..

झड़ जाते हैं फूल पुरातन
प्रकृति का यह नियम सनातन
गिरते फूलों पर कब तक रोएगा,
जड़ों को सींचने की बात कर..
आगे बढ़, चल नई शुरुआत कर...

प्रातः हो कि सांझ हो
आसमान का रंग वही है,
उगता, ढलता सूर्य नहीं है
ऊर्जा चुन, उजाले की बात कर..
दृष्टि साफ कर, चल नई शुरुआत कर..

◆ **कुमार पाल**
संयुक्त निदेशक (कार्यान्वयन)
राजभाषा विभाग,
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

हुडको
hudco

A NAVRATNA CPSE

हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड

भारत सरकार का उपक्रम

CIN: L74899DL1970GOI005276

कोर-7-ए, इंडिया हैबिटेट सेंटर, लोधी रोड, नई दिल्ली-110 003

टेलीफोन: 91-11-24649610, फैक्स: 91-11-24625308, वेबसाइट: www.hudco.org.in